3.	द मदर्स इंटरनेशनल स्कूल, श्री अरविन्दो मार्ग, नई दिल्ली-16	संस्कृत भाषण	अदिति चौहान	1500	तृतीय 1500/-
4.	रेड रोज़िज पब्लिक स्कूल, साकेत, डी-ब्लॉक, नई दिल्ली-17	संस्कृत भाषण	सौम्या उपाध्याय	1200	चतुर्थ 1200/-
5.	रामानुजन सर्वोदय कन्या विद्यालय, महरौली, नई दिल्ली-30	संस्कृत भाषण	मानसी भट्ट	1000	पंचम 1000/-
6.	सेंट मेरीज़ पब्लिक विद्यालय, 532-ए, फॉरिस्ट लेन, नेब सराय, दिल्ली-68	संस्कृत भाषण	हर्ष शर्मा	500	प्रोत्साहन-1 500/-
7.	ग्रीन फील्डस स्कूल, ए-2 सफदरजंग एन्क्लेव, नई दिल्ली-29	संस्कृत भाषण	नमन मीना	500	प्रोत्साहन-2 500/-
8.	ईशानी सर्वोदय कन्या विद्यालय, जी-ब्लॉक, साकेत, नई दिल्ली-17	संस्कृत भाषण	रीतिका पाण्डेय	500	प्रोत्साहन-3 500/-
9.	सर्वोदय कन्या विद्यालय, मालवीय नगर, दिल्ली-17	संस्कृत भाषण	मुस्कान	500	प्रोत्साहन-4 500/-

संस्कृत एकल श्लोक संगीत प्रतियोगिता, दिनांक **26.11.2019**

क्र.सं.	विद्यालय का नाम एवं पता	प्रतियोगिता का नाम	छात्र/ छात्राओं का नाम	पुरस्कार राशि	प्राप्त स्थान
1.	राजा राम मोहन राय सर्वोदय कन्या विद्यालय, हौजरानी, नई दिल्ली-17	एकल श्लोक संगीत	ज़रताज	2000	प्रथम 2000/-
2.	प्रियदर्शनी सर्वोदय कन्या विद्यालय, फतेहपुर बेरी, नई दिल्ली-74	एकल श्लोक संगीत	जागृति शर्मा	1800	द्वितीय 1800/-
3.	सेंट मेरीज़ पब्लिक विद्यालय, 532-ए, फॉरिस्ट लेन, नेब सराय, दिल्ली-68	एकल श्लोक संगीत	धृति सामल	1500	तृतीय 1500/-
4.	ग्रीन फील्डस स्कूल, ए-2 सफदरजंग एन्क्लेव, नई दिल्ली-29	एकल श्लोक संगीत	श्रुति सूद	1200	चतुर्थ 1200/-
5.	सर्वोदय कन्या विद्यालय, मालवीय नगर, दिल्ली-17	एकल श्लोक संगीत	मुस्कान	1000	पंचम 1000/-
6.	राजकीय उच्चतर माध्यमिक कन्या विद्यालय, एम.बी.रोड, सैक्टर-1, पुष्प विहार, नई दिल्ली	एकल श्लोक संगीत	चेतना	500	प्रोत्साहन-1 500/-

7.	राजकीय बाल उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, बेगमपुर, एम.एम.टी.सी. /एस.टी.सी. कॉलोनी, मालवीय नगर, दिल्ली-17	एकल श्लोक संगीत	धीरज कुमार	500	प्रोत्साहन–2 500/–
8.	राजकीय उच्चतर माध्यमिक कन्या विद्यालय, छत्तरपुर, दिल्ली-74	एकल श्लोक संगीत	शैली	500	प्रोत्साहन–3 500/–
9.	सर्वोदय विद्यालय नं.-1, आर.के. पुरम्, नई दिल्ली-49	एकल श्लोक संगीत	अनामिका	500	प्रोत्साहन–4 500/–
10.	अमृता विद्यालय, सैक्टर-7, पुष्प विहार, नई दिल्ली-17	एकल श्लोक संगीत	अनिकेत अनुराज	500	प्रोत्साहन–5 500/–
11.	राजकीय सर्वोदय सह-शिक्षा विद्यालय, शाहपुर जट, नई दिल्ली-49	एकल श्लोक संगीत	रुद्र प्रकाश	500	प्रोत्साहन–6 500/–

दिनांक 18.10.2019

संस्कृत रोजगार एवं ज्ञान विज्ञान की भाषा है।–गीता रावत
बोलकर कार्य करने वाले कम्प्यूटर के लिये संस्कृत सबसे उपयुक्त भाषा है –रजनी रावल
नई दिल्ली मण्डल की छः दिवसीय संस्कृत प्रतियोगिताओं का शुभारम्भ –डॉ. जीतराम भट्ट
दिल्ली सरकार ने छात्र–छात्राओं को प्रोत्साहित करने के लिये अनेक प्रयास किये हैं –श्री गोपाल मोहन

विश्व को आध्यात्म एवं वैज्ञानिक चिन्तन संस्कृत साहित्य में वर्णित ज्ञान विज्ञान से ही मिलता है। वैदिक मंत्रों में विज्ञान के सूत्र निहित हैं। इन सूत्रों की खोज ही विज्ञान है। संस्कृत विश्व की सबसे प्राचीन भाषा के साथ साथ आधुनिक विज्ञान की आधारशिला भी है। संस्कृत भाषा में रोजगार की सबसे अधिक संभावनाएँ हैं। संस्कृत भाषा की महत्ता को इसी बात से लगाया जा सकता है कि आधुनिक भाषाओं में सबसे समृद्ध एवं वैज्ञानिक भाषा है। संस्कृत रोजगार एवं ज्ञान विज्ञान की भी भाषा है। भारतीय संस्कृति का आधार ही संस्कृत भाषा है।

ये विचार दिल्ली संस्कृत अकादमी दिल्ली सरकार द्वारा विद्याभवन महाविद्यालय लोधी स्टेट नई दिल्ली में दिल्ली शिक्षा निदेशालय के नई दिल्ली मण्डल की छः दिवसीय संस्कृत प्रतियोगिताओं के शुभारम्भ पर समारोह में प्रतिभागियों को सम्बोधित करते हुए दिल्ली नगर निगम की सदस्या श्रीमती गीता रावत ने व्यक्त किये ।

इस अवसर पर दिल्ली संस्कृत अकादमी सचिव डॉ. जीतराम भट्ट ने कहा कि प्रतियोगिताओं में सभी को सफलता नहीं मिलती पर प्रतिभागियों को आत्म विकास के लिये एक मंच मिलता है। संस्कृत भाषा में गुरू के महत्व को सबसे अधिक माना गया है। किसी भी भाषा के शब्द का मूल अर्थ जानने के लिये हमें

संस्कृत भाषा का सहारा लेना ही पड़ेगा। अकादमी द्वारा आयोजित इन प्रतियोगिताओं में संस्कृत के अध्यापकों के सहयोग से ही छात्र भाग लेते हैं। अकादमी द्वारा आयोजित इस प्रकार की प्रतियोगिताओं के माध्यम से प्रतिभागियों को अपनी प्रतिभा दिखाने का अवसर मिलता है निरन्तर मेहनत से ही परिणाम आशा के अनुरूप मिलते हैं। इस प्रतियोगिता में भाग लेने वालों को पुरस्कृत किया जायेगा। नई दिल्ली मण्डल में आयोजित इन प्रतियोगिताओं में श्लोक संगीत, संस्कृत काव्यालि, श्लोकोच्चारण, संस्कृत वाद विवाद, संस्कृत भाषण एवं एकल श्लोक संगीत प्रतियोगितायें शामिल हैं। आज श्लोक संगीत प्रतियोगिता का आयोजन किया जा रहा है।

इस अवसर पर कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि दिल्ली के माननीय मुख्यमंत्री के परामर्शक श्री गोपल मोहन ने कहा कि सभी भाषाओं की मूल भाषा संस्कृत है। जो भी लोग फ्रेन्च जर्मन आदि यूरोपीय भाषाओं को पढते हैं वे कहते हैं कि संस्कृत भाषा की सहायता से हमें इन भाषाओं को समझने व पढने में बहुत सहायता मिलती है। शिक्षा के लिये दिल्ली सरकार बहुत काम कर रही है। 12 वीं के बाद दिल्ली के छात्रों के लिये किसी भी क्षेत्र में जाने के लिये निशुल्क कोचिंग की व्यवस्था दिल्ली सरकार ने की है। इसके अलावा यदि कोई छात्र या छात्रा किसी भी प्रतियोगिता परीक्षा मे सफल हो जाती है और उसके पास पढने के लिये पैसों की व्यवस्था नहीं है तो इस प्रकार के छात्रों के लिये दिल्ली सरकार उस छात्र को 10 लाख तक का बैंक लोन बिना किसी गारन्टी के दिलायेगी जिसकी गारण्टी दिल्ली सरकार देगी। दिल्ली सरकार यह चाहती है कि कोई बच्चा अपने कैरियर को लेकर वंचित न रहें कि यदि मुझे कोई सहायता मिलती तो मैं सफल हो जाता इसके लिये दिल्ली सरकार का पूर्ण प्रयास है। दिल्ली सरकार ने हप्पीनेस क्लास एवं उद्यमशीलता के पाठ्यक्रम सरकारी स्कूलों में चलाये हैं। जिसके आगे जाकर बहुत लाभ विद्यार्थियों को मिलेगा।

इस अवसर पर नई दिल्ली मण्डल की उपशिक्षा निदेशिका श्रीमती रजनी रावल ने कहा कि संस्कृत संस्कारों से जुड़ी भाषा है। संस्कृत के पठन पाठन में सभी का सहयोग होना चाहिये। पुस्तकों के ज्ञान से हमें यह मिलता है राजा भोज के राज्य में लकड़हारा भी संस्कृत में बात करता था। संस्कृत दुनिया की सबसे वैज्ञानिक भाषा है। यदि भाषाओं को उच्चारण से भी देखा जाय जो अरबी कंठ से, अंग्रेजी ओठों से बोली जाती है जबकि संस्कृत बोलने में हर अंग सम्मिलत है। संस्कृत बोलने से रक्तचाप, शुगर, कौलस्ट्रोल आदि नियंत्रित रहते हैं। कम्प्यूटर में जब से बोलने वाले कम्प्यूटरों का युग प्रारम्भ हुआ इसके लिये संस्कृत सबसे उपयुक्त भाषा मानी जा रही है। किसी भी व्यक्ति का व्यक्तित्व भी संस्कृत भाषा से सामने आता है। आज के युग में संस्कृत एक ग्लोबल भाषा बन रही है। इसके लिये संस्कृतज्ञों की आवश्यकता होगी इसलिये आप सभी विद्यार्थियों से आग्रह है कि आप संस्कृत को एक विषाय के रूप में न देखें इसके विस्तार को देखते हुये एक भविष्य को देखें। आने वाले समय में नासा को संस्कृतज्ञों की जरूरत होगी। आप संस्कृत के साथ कम्प्यूटर एवं अन्य भाषा के तालमेल को बना कर अपना केरियर चुने। संस्कृत में विश्व को

एक परिवार के रूप में माना है और सबके निरोग की कामना की है। मेरा विचार है कि दिल्ली संस्कृत अकादमी के साथ मिल कर सेण्टर दिल्ली एवं नई दिल्ली मण्डल के शिक्षकों की संस्कृत भाषा में शब्दों की उत्पति विषय पर एक कार्यशाला का आयोजन किया जाय जा आगे रूपरेखा बना कर किया जायेगा ।

इस अवसर पर नई दिल्ली मण्डल की उपशिक्षा निदेशिका डॉ. बीना रानी ने कहा कि इस प्रतियिगिताओं में जो भी प्रतिभागी भाग ले रहे हैं निश्चित रूप से वे विद्या के उपासक हैं और संस्कृत के प्रति लगाव रखते हैं। हार जीत तो जीवन के अनुभव हैं सभी पतिभागियों को सफलता के लिये मेरी शुभकामनाएँ एवं उज्जवल भविष्य की शुभकामनाएँ।

इस अवसर पर प्रतियोगिताओं के संयोजक एवं विद्यालय के प्रधानाचार्य डॉ. अशोक कुमार ने कहा कि दिल्ली संस्कृत अकादमी दिल्ली में संस्कृत भाषा को लोक प्रिय बनाने के लिये अपने स्तर पर अनेक कार्यक्रमों का आयोजन करती है आप लोग अधिक से अधिक संख्या में अकादमी के कार्यक्रमों में सहभागिता करें। आप लोगों के सहयोग से ही अकादमी संस्कृत को जन जन तक पहुँचाने का कार्य करेगी।

इस अवसर पर डॉ. पुष्पा गुप्ता ने कहा कि संस्कृत में अनेक ज्ञान परक ग्रन्थ लिखे गये हैं जो कि शुद्ध रूप से विज्ञान के प्रयोगों पर आधारित हैं इस ज्ञान को लोगों तक पहुचाने के लिये हमें निरन्तर अपने स्तर पर शोध कार्य करने की जरूरत है। युवा वर्ग का आज जो उत्साह मुझे दिखाई दे रहा इस उत्साह से संस्कृत को नई उर्जा मिलेगी।

इस अवसर पर अनेक संस्कृत प्रेमी महानुभाव भी उपस्थित थे ।

संस्कृत श्लोक संगीत प्रतियोगिता, दिनांक 18.11.2019

क्र.सं.	विद्यालय का नाम एवं पता	प्रतियोगिता का नाम	छात्र/ छात्राओं का नाम	पुरस्कार राशि	प्राप्त स्थान
1.	श्यामा प्रसाद सीनियर सैकेण्डरी विद्यालय, 17/ए, लोधी एस्टेट, नई दिल्ली-03	संस्कृत श्लोक संगीत	प्रियंका दत्ता	500	प्रथम
			दीक्षा उप्रेती	500	
			पलक सिंह	500	
			रिया रावत	500	
			रितिका कनौजिया	500	
			राजेश्वरी रॉय	500	3000/–
2.	दिल्ली कन्नड़ उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, लोधी एस्टेट, नई दिल्ली-03	संस्कृत श्लोक संगीत	श्रेष्ठा एच. तेती	100	प्रोत्साहन–1
			आयुषी	100	
			जाह्नवी ग्रामपुरोहित	100	
			भव्या भजन्त्री	100	
			ए.के. चेतना	100	
			मानसी लखेरा	100	600/–

संस्कृत श्लोकोच्चारण प्रतियोगिता, दिनांक 19.11.2019

क्र.सं.	विद्यालय का नाम एवं पता	प्रतियोगिता का नाम	छात्र/ छात्राओं का नाम	पुरस्कार राशि	प्राप्त स्थान
1.	भारतीय विद्या भवन मेहता विद्यालय, के.जी. मार्ग, नई दिल्ली-01	संस्कृत श्लोकोच्चारण	आर्य राघव	500	प्रथम
			आदित्य कोली	500	
			तनिष्क निमवेकर	500	
			अद्विवत वीर आदित्य	500	
			मयंक पांडे	500	
			अधीष गोयल	500	3000/–
2.	नेवी चिल्ड्रेन स्कूल, चाणक्यपुरी, नई दिल्ली-21	संस्कृत श्लोकोच्चारण	तितिक्ष	400	द्वितीय
			पी.वैंकट स्कन्दन	400	
			उचित कुमार शर्मा	400	
			एस. सुवर्धन	400	
			आर्यन अग्रवाल	400	
			नेहल चौहान	400	2400/–
3.	विद्या भवन महाविद्यालय उच्चतम माध्यमिक विद्यालय, लोधी एस्टेट, नई दिल्ली-03	संस्कृत श्लोकोच्चारण	आलेख कुमार	100	प्रोत्साहन–1
			आशुपाल	100	
			अंश शर्मा	100	
			कार्तिकेय गौतम	100	
			सक्षम अधिकारी	100	
			हिमांशु पाल	100	600/–

संस्कृत काव्याली प्रतियोगिता, दिनांक 20.11.2019

क्र.सं.	विद्यालय का नाम एवं पता	प्रतियोगिता का नाम	छात्र/ छात्राओं का नाम	पुरस्कार राशि	प्राप्त स्थान
1.	श्यामा प्रसाद सीनियर सैकेण्डरी विद्यालय, 17/ए, लोधी एस्टेट, नई दिल्ली-03	संस्कृत काव्याली	प्रियंका दत्ता	500	प्रथम
			साक्षी सैनी	500	
			दीक्षा उप्रेती	500	
			पलक सिंह	500	
			रिया रावत	500	
			राजेश्वरी रॉय	500	3000/–
2.	दिल्ली कन्नड़ उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, लोधी एस्टेट, नई दिल्ली-03	संस्कृत काव्याली	अभिषेक उभाले	100	प्रोत्साहन–1
			एम. सुमन राव	100	
			तनिष्का	100	
			रोहित महाराज	100	
			कीर्ति शर्मा	100	
			मानसी सिन्हा	100	600/–

संस्कृत वाद-विवाद प्रतियोगिता, दिनांक 21.11.2019

क्र.सं.	विद्यालय का नाम एवं पता	प्रतियोगिता का नाम	छात्र/ छात्राओं का नाम	पुरस्कार राशि	प्राप्त स्थान
1.	भारतीय विद्या भवन मेहता विद्यालय, के.जी. मार्ग, नई दिल्ली-01	संस्कृतवाद-विवाद	रितिका गुप्ता	2000	प्रथम 4000/–
			मानस नन्दन	2000	
2.	नेवी चिल्ड्रेन स्कूल, चाणक्यपुरी, नई दिल्ली-21	संस्कृतवाद-विवाद	वंशिका वेंकटरामन	500	प्रोत्साहन–1 1000/–
			मानसी चंद्रा	500	

संस्कृत भाषण प्रतियोगिता, दिनांक 22.11.2019

क्र.सं.	विद्यालय का नाम एवं पता	प्रतियोगिता का नाम	छात्र/ छात्राओं का नाम	पुरस्कार राशि	प्राप्त स्थान
1.	भारतीय विद्या भवन मेहता विद्यालय, के.जी. मार्ग, नई दिल्ली-01	संस्कृत भाषण	के. अमजा	2000	प्रथम 2000/–
2.	दिल्ली कन्नड़ उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, लोधी एस्टेट, नई दिल्ली-03	संस्कृत भाषण	वंशिका सचदेवा	1800	द्वितीय 1800/–
3.	नेवी चिल्ड्रेन स्कूल, चाणक्यपुरी, नई दिल्ली-21	संस्कृत भाषण	अनुभव सिन्हा	1500	तृतीय 1500/–
4.	पी. एण्ड टी. उच्चतम माध्यमिक विद्यालय, अतुल ग्रोव रोड, नई दिल्ली-01	संस्कृत भाषण	अंजली कुमारी	500	प्रोत्साहन–1 500/–

संस्कृत एकल श्लोक संगीत प्रतियोगिता, दिनांक 23.11.2019

क्र.सं.	विद्यालय का नाम एवं पता	प्रतियोगिता का नाम	छात्र/ छात्राओं का नाम	पुरस्कार राशि	प्राप्त स्थान
1.	दिल्ली कन्नड़ उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, लोधी एस्टेट, नई दिल्ली-03	एकल श्लोक संगीत	प्राची परेवा	2000	प्रथम 2000/–
2.	नेवी चिल्ड्रेन स्कूल, चाणक्यपुरी, नई दिल्ली-21	एकल श्लोक संगीत	अद्विता चौधरी	1800	द्वितीय 1800/–

3.	दयानन्द मॉडल कन्या उच्चतम माध्यमिक विद्यालय, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-01	एकल श्लोक संगीत	कु. रुमतिनी	1500	तृतीय 1500/–
4.	लॉयन्स विद्या मन्दिर माध्यमिक विद्यालय, कुशक लेन, नई दिल्ली-11	एकल श्लोक संगीत	मनीष चौहान	500	प्रोत्साहन–1 500/–

दिनांक 24.05.2019

संस्कृत शिक्षक को आधुनिक लेखन में अपनी प्रतिभा दिखानी होगी –डॉ. जीतराम भट्ट

संस्कृत विषय में 100 प्रतिशत परीक्षा परिणाम प्राप्त करने वाले शिक्षकों को सम्मानित किया गया।– डॉ० जीतराम भट्ट

संस्कृत साहित्य विश्व के सबसे समृद्ध साहित्यों में से है। वर्तमान भूत एवं भविष्य का इतिहास जब कभी भी पढ़ा जायेगा तो उस समय संस्कृत में भी लिखे साहित्यों के माध्यम से भी समाज को इतिहास एवं समस्त ज्ञान विज्ञान की जानकारी मिलनी चाहिये। प्राचीन संस्कृत साहित्य के समृद्ध साहित्य से प्रेरणा लेकर संस्कृत के आधुनिक संस्कृत साहित्यकारों को आधुनिक समाज के अनुसार संस्कृत साहित्य लिखना चाहिये इसके लिये संस्कृत शिक्षक अपनी अहम जिम्मेदारी निभा सकते हैं। संस्कृत को आज के वैज्ञानिको ने कम्प्यूटर की सबसे उपयुक्त भाषा को माना है। इस भाषा को कम्प्यूटर के लिये उपयुक्त बनाने में सबसे अधिक उपयोगी संस्कृतज्ञ ही हो सकते हैं।

ये विचार दिल्ली संस्कृत अकादमी दिल्ली सरकार द्वारा करोलबाग, नई दिल्ली में **''विद्यालयीय संस्कृत सेवा सम्मान समारोह''** के के अवसर पर अकदमी के सचिव डॉ. जीतराम भट्ट ने व्यक्त किये। डॉ. भट्ट ने आगे कहा कि **''विद्यालयीय संस्कृत संस्कृत सेवा सम्मान समारोह''** में आज इस सम्मान के अन्तर्गत दिल्ली के उन शिक्षकों को सम्मानित किया जा रहा है जिन शिक्षकों के केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा परिषद (**CBSE**) की वर्ष 2018 की परीक्षा में कक्षा 10वीं, 12वीं की परीक्षा में संस्कृत विषय में शत प्रतिशत परीक्षा परिणाम रहा हो। संस्कृत सेवा सम्मान के अन्तर्गत वर्ष 2018 में 1000 से अधिक संस्कृत शिक्षकों को इस सम्मान से सम्मानित किया जा रहा है। डॉ. भट्ट ने शिक्षकों को कहा कि आज आपको मिलने वाले इस सम्मान से अन्य संस्कृत शिक्षक भी प्रेरणा लेंगे और दिल्ली सरकार की संस्कृत प्रेरक योजनाओं में भाग लेते रहेंगे आशा है अगले वर्ष इस कार्यक्रम में हम और अधिक संस्कृत शिक्षकों को सम्मानित करेंगे।

इस अवसर पर अकादमी सहायक लेखा अधिकारी श्री भारत भूषण ने कहा कि सर्वविदित है कि शिक्षक समाज को नई चेतना देते है। समाज में शिक्षकों का सम्मान अधिक होने के कारण उत्तरदायित्व भी अधिक है। गौरव का विषय है कि आप लोगों के पास ऐसी भाषा का ज्ञान है कि जिसमें संस्कार हैं ज्ञान है विज्ञान है। संस्कृत शिक्षकों से समाज को बहुत अधिक अपेक्षा रहती है। दिल्ली सरकार दिल्ली में हर भाशा के विकास के लिये अनेक प्रकार की गति विधियों का आयोजन कर रही है। जिसमें संस्कृत भाषा के विकास एवं प्रचार–प्रसार के लिये अनेक कदम उठाये जा रहे है। आज भी आधुनिक विज्ञान के युग में विश्व में भारत के संस्कृत विद्वानों की सबसे अधिक मांग है

इस अवसर पर अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

विश्व में संस्कृत भाषा स्वयं अपना संरक्षण करने में समर्थ है। –डॉ0 जीतराम भट्ट दिल्ली में संस्कृत पढने वाले 1818 से अधिक छात्र–छात्राओं को संस्कृत छात्रवृत्तियां प्रदान की गई –डॉ. जीतराम भट्ट

संस्कृत यूरोपीय एवं सभी भारतीय भाषाओं की जननी है। संस्कृत भाषा को थोड़े प्रयास से आसानी से सीखा जा सकता है। इस प्रकार के पुरस्कारों का उद्देश्य यह है कि दिल्ली संस्कृत अकादमी दिल्ली के विद्यालयों में संस्कृत पढ़ने वाले छात्र–छात्राओं को संस्कृत पढ़ने एवं संस्कृत विषय में अच्छे अंक लाने पर छात्र–छात्राओं को सम्मानित कर उन्हें संस्कृत के प्रति लगाव पैदा करने के लिये प्रेरित करती है। वर्तमान समय में संस्कृत को हर तरफ से नई नई चुनौतियां मिल रही है। परन्तु संस्कृत साहित्य में सभी विधायें होने के कारण यह भाषा इन चुनौतियों का सामना आधुनिक रूप से कर रही है। संस्कृत विषय लेकर विद्यार्थियों के लिये अनेक प्रकार के रोजगार परक समस्याये हैं परन्तु ये समस्यायें भ्रमित करने वाली हैं संस्कृत विषय में रोजगार की सबसे अधिक सम्भावनाये हैं। ये विचार मुख्य अतिथि समाज सेवी एवं साहित्यकार श्री बी.एस. धनौला ने व्यक्त किये श्री धनौला ने आगे कहा कि मुझे सस्कृत अकादमी से जुड़ने पर यह आभास हुआ कि संस्कृत में बहुत कार्य हो रहा है। संस्कृत भारतीय संस्कृति की धरोहर है। युवा वर्ग को इस भाषा से स्वयं ही जुड़ना चाहिये।

ये विचार दिल्ली संस्कृत अकादमी, दिल्ली सरकार द्वारा अकादमी के सभागार में आयोजित "संस्कृत छात्रवृत्ति पुरस्कार वितरण समारोह के अवसर पर छात्र–छात्राओं को बताते हुये दिल्ली संस्कृत अकादमी के सचिव डॉ. जीतराम भट्ट ने व्यक्त किये। डॉ. भट्ट ने आगे कहा कि प्राचीनकाल से ही संस्कृतज्ञों का महान योगदान इस भाषा के संवर्धन में रहा है। आज भी संस्कृत विश्व की सभी भाषाओं से इतना सामर्थ्य रखती है कि यह भाषा स्वयं अपना संरक्षण रखने में समर्थ है। अकादमी द्वारा विगत तीन दिनों से कक्षा 9 वी से एम. ए. तक संस्कृत विषय पढने वाले 1818 से अधिक छात्र–छात्राओं को अकादमी की नीति के अनुसार नकद पुरस्कार एवं संस्कृत साहित्य से सम्मानित किया गया। इस अवसर पर दिनांक

27.05.2019 को महाविद्यालय के 608 प्रतिभागियों को, दिनांक 28.05.2019 को दिल्ली के विभिन्न विद्यालयों के 875 प्रतिभागियों को तथा आज दिल्ली के संस्कृत विद्यालयों के 335 प्रतिभागियों का संस्कृत छात्रवृत्तियों से सम्मानित किया गया। इस पुरस्कार से सम्मानित होने वाले सभी छात्र–छात्रायें आगे चल कर संस्कृत के ध्वज वाहक होंगे। मेरा आप लागों से अनुरोध है आप स्वेच्छा से अकादमी के ट्विटर एवं फेसबुक से जुडे और इस पर अपने ब्लाक संस्कृत में लिख कर लोगों से साझा करें। आज सम्मानित होने वाले सभी संस्कृत के प्रतिभावान हैं। संस्कृत में भी रोजगार के सभी अवसर हैं जो अन्य सभी विषयों में हैं। आवश्यकता अपको अपने व्यक्तित्व को उस स्तर तक ले जाने की है।

इस अवसर पर अकादमी के सहायक लेखा अधिकारी श्री भारत भूषण ने कहा कि आज के समय में संस्कृत का महत्त्व अनेक कारणों एवं दृष्टियों से है। विश्व संस्कृत एवं साहित्य में संस्कृत का उत्कृष्ट स्थान है। विश्व में भारत की युवा शक्ति का बोल बाला है यदि इस युवा शक्ति को संस्कृत की ओर जोडा जाय तो सस्कृत का भविष्य उज्ज्वल होगा। विभिन्न भाषाओं के शोध में यह पता चला है कि विश्व की सभी भाषाओं के अध्ययन के लिये संस्कृत भाषा बहुत आवश्यक है। इस वर्ष अकादमी संस्कृत भाषा के विकास एवं प्रचार प्रसार के लिये अनेक कार्यक्रमों का आयोजन करेगी।

इस अवसर पर अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे ।

दिनांक 31.05.2019

युवा वर्ग में संस्कृत के लिये बहुत उत्साह है – डॉ. जीतराम भट्ट
400 से अधिक संस्कृत छात्र–छात्राओं को संस्कृत प्रतिभा पुरस्कार से सम्मानित किया गया–डॉ. जीतराम भट्ट

दिल्ली संस्कृत अकादमी, दिल्ली सरकार द्वारा अकादमी के सभागार में " संस्कृत प्रतिभा पुरस्कार वितरण समारोह के द्वितीय भाग आज आयोजित किया गया। इस समारोह में उपस्थित छात्र–छात्राओं को उत्साहित करते हुये अकादमी के सचिव डॉ0 जीतराम भट्ट ने कहा कि अकादमी द्वारा आज दिल्ली के विभिन्न विद्यालयों में कक्षा 9 से 12 वीं में संस्कृत विषय में अच्छे अकों के साथ उत्तीर्ण होने वाले 400 से अधिक छात्र–छात्राओं को सम्मानित किया गया। इस प्रकार के कार्यक्रम एवं गतिविधियों से अकादमी अपने उद्देश्यों की पूर्ति के लिये अग्रसर है। संस्कृत हमारे देश की पहचान है इस भाषा से जितने युवा लोग जुड़ेंगे भाषा उतनी ही समृद्ध होगी। संस्कृत भाषा के लिये सम्मानित होने वाले आप ही लोग इस देश के भविष्य हैं आगे आप ही देश के विभिन्न पदों पर कार्यरत रहेंगे। संस्कृत प्रतिभा पुरस्कार से सम्मानित किये जाने वाले छात्र–छात्राओं को नकद राशि, प्रमाण पत्र एवं संस्कृत साहित्य दिया गया। डॉ. भट्ट ने आगे कहा कि आज सम्मानित होने वाले छात्रों को उनकी प्रतिभा के आधार पर सम्मानित किया जा रहा है। संस्कृत छात्रों को जीवन में उच्च प्रगति के लिये प्रेरित करता है। विश्व की समस्त प्राचीन भाषाओं और उनके साहित्य में संस्कृत का अपना विशिष्ट महत्त्व है। विश्व के अनेक देशों में संस्कृत भाषा के वैज्ञानिक

पर कार्य चल रहा है। भारतीय ही नहीं समस्त विश्व की भाषाओं को जोडने वाली यदि कोई भाषा है तो वह निसन्देश संस्कृत भाषा है।

इस अवसर पर अकादमी के वित्त विभाग के अधिकारी श्री भारत भूषण ने कहा कि आज के समय में संस्कृत का महत्त्व अनेक कारणों एवं दृष्टियों से है। भारत की प्राचीन सांस्कृतिक, ऐतिहासिक, धार्मिक, आध्यात्मिक, दार्शनिक, सामाजिक और राजनैतिक जीवन के विकास की समृद्धि की सम्पूर्ण व्याख्या संस्कृत साहित्य में वर्णित है। आप लोगों को कोई भी कार्य करना हो तो अपना लक्ष्य रख कर आगे बढना चाहिये। संस्कृत आपको जीवन के हर लक्ष्य को सरल बनाने का कार्य करेगी। शताब्दियों से संस्कृत भाषा और साहित्य को भारत में सर्वाधिक प्रतिष्ठा प्राप्त हो रही है। भारत की यह सांस्कृतिक भाषा है। इस भाषा के विकास एवं अध्ययन के लिये हमें अपने अपने स्तर पर प्रयास करने की आवश्यकता है।

इस अवसर पर अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

दिनांक 01.06.2019

संस्कृत सभी प्राचीन एवं नवीन भाषाओं की जननी है। –डॉ. जीतराम भट्ट
संस्कृत भाषा के ज्ञान के लिये युवा वर्ग बहुत अधिक उत्साहित है। –डॉ. जीतराम भट्ट

विश्व की समस्त प्राचीन भाषाओं में संस्कृत का सबसे उच्च स्थान है। विश्व साहित्य का सबसे प्राचीन ग्रन्थ ऋग्वेद इसी संस्कृत भाषा में ही है। संस्कृत के अध्ययन के बिना भारतीय संस्कृति का पूर्ण ज्ञान कभी सम्भव नहीं है। संस्कृत अनेक प्राचीन एवं नवीन भाषाओं की जननी है। विश्व के सभी विद्वान संस्कृत भाषा के अति समृद्ध एवं विपुल भण्डार से आश्चर्य चकित हैं। आज के समय में संस्कृत का महत्त्व अनेक कारणों एवं दृष्टियों से है। भारत की प्राचीन सांस्कृतिक, ऐतिहासिक, धार्मिक, आध्यात्मिक, दार्शनिक, सामाजिक और राजनैतिक जीवन के विकास की समृद्धि की सम्पूर्ण व्याख्या संस्कृत साहित्य में वर्णित है। कई शताब्दियों से इस भाषा और साहित्य को भारत में सर्वाधिक प्रतिष्ठा प्राप्त हो रही है। भारत की यह सांस्कृतिक भाषा है। इस भाषा के विकास एवं अध्ययन के लिये हमें अपने अपने स्तर पर प्रयास करने की आवश्यकता है।

ये विचार दिल्ली संस्कृत अकादमी, दिल्ली सरकार द्वारा झण्डेवालान करोलबाग नई दिल्ली में आयोजित "संस्कृत प्रतियोगिता पुरस्कार वितरण समारोह" (महाविद्यालय स्तरीय) के अवसर पर अकादमी के सचिव डॉ. जीतराम भट्ट ने व्यक्त किये। डॉ. भट्ट ने आगे कहा कि अकादमी द्वारा किये जा रहे कार्यक्रम एवं गतिविधियों से लग रहा है कि हम संस्कृत के प्रचार प्रसार के लिये सही दिशा में जा रहे हैं। संस्कृत हमारी पहचान है। पुरस्कृत होने वाले छात्र–छात्राओं में देश का भविष्य दिखाई दे रहा है। वर्तमान समय में यदि संस्कृत को बढावा मिले तो संस्कृत का भविष्य तभी उज्ज्वल होगा।

इस अवसर पर अकादमी के सहायक लेखा अधिकारी श्री भारत भूषण ने भी संस्कृत के महत्व के बारे में प्रतिभागियों से अपने विचार साझा किये और कहा कि दिल्ली संस्कृत अकादमी दिल्ली में संस्कृत के प्रचार प्रसार के लिये अनेक कार्यक्रमों का आयोजन करती है दिल्ली के युवा छात्रों को अभिप्रेरित करने के लिये अकादमी अनेक कार्यक्रमों का आयोजन करती है। दिल्ली संस्कृत अकादमी द्वारा आज सम्मानित किये गये छात्र/छात्राओं ने वर्ष 2018–19 में महाविद्यालय एवं संस्कृत विद्यालयों के लिये आयोजित संस्कृत की लगभग 30 विभिन्न प्रकार की प्रतियोगिताओं में अपनी प्रतिभा को प्रदर्शित करने के लिये ये पुरस्कार दिये जा रहे हैं। इस अवसर पर दिल्ली के 50 से अधिक महाविद्यालयों एवं संस्कृत वियालयों के 2000 से अधिक प्रतिभागियों को पुरस्कृत किया जा रहा है। दिल्ली संस्कृत अकादमी को इन प्रतिभागी छात्र/छात्राओं को पुरस्कृत करने पर गर्व की अनुभूति हो रही है कि संस्कृत के लिये युवा वर्ग कितना अधिक उत्साहित है। पुरस्कृत किये जाने वाले छात्र/छात्राओं को नकद राशि एवं प्रमाण पत्र से सम्मानित किया गया।

इस अवसर पर कमला नेहरू महाविद्यालय की संस्कृत विभाग की आचार्या डॉ. सुषमा चौधरी ने कहा कि विश्व की समस्त प्राचीन भाषाओं और उनके साहित्य में संस्कृत का अपना विशिष्ट महत्व है। विश्व के अनेक देशों में संस्कृत भाषा के वैज्ञानिक स्वरूप जानने के लिये अध्ययन एवं गम्भीर शोध कार्य किये जा रहे हैं। शोध में यह पता चला है कि विश्व की सभी भाषाओं के अध्ययन के लिये भाषा विज्ञान का प्रारम्भ संस्कृत भाषा से ही होता है। भारतीय ही नहीं समस्त विश्व की भाषाओ को जोडने वाली यदि कोई भाषा है तो वह निसन्देह संस्कृत भाषा है।

इस अवसर पर अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे ।

दिनांक 03.06.2019

विश्व को गणित का सिद्धान्त ज्योतिष से ही मिला – डॉ. जीतराम भट्ट। ज्योतिष शास्त्र भारतीय विज्ञान का सर्वोच्च विषय है – आचार्य राजकुमार द्विवेदी

ज्योतिष भारतीय विज्ञान का एक आधार है। विश्व को गणित का ज्ञान ज्योतिष से ही मिला है। ज्योतिष वेदांग में से वेदों का एक अंग है। इसी प्रकार भूगोल शब्द स्वतः ही बताता है कि पृथ्वी गोल है यह भी कई शताब्दी पूर्व भारतीय ज्ञान विज्ञान में प्रयोग होता चला आ रहा है। इसी प्रकार से ज्योतिष अपने आप में एक पूर्ण वैज्ञानिक विषय है जिसका उपयोग मानव कल्याण के लिये किया जा रहा है। भारतीय आचार्यों ने विश्व को विज्ञान के अनेक सूत्र एवं ज्ञान दिया है। गुरुत्वाकर्षण का नियम सबसे पहले कणाद ऋषि ने प्रतिपादित किया था। इसी प्रकार शून्य के व्यवहारिक प्रयोग को आर्यभट्ट ने प्रतिपादित किया था।

ये विचार दिल्ली संस्कृत अकादमी दिल्ली सरकार द्वारा झण्डेवालान करोलबाग में आयोजित ज्योतिष अध्ययन केन्द्र के शुभारम्भ के अवसर पर दिल्ली संस्कृत अकादमी के सचिव डॉ. जीतराम भट्ट ने व्यक्त किये। डॉ. भट्ट ने आगे कहा कि भारतीय ज्योतिष विज्ञान में ग्रह, नक्षत्रों की हर प्रकार की गणना

का उल्लेख प्राचीन काल से किया जाता रहा है। ज्योतिष आज के वैज्ञानिक स्वरूप को ही दिखाता है ग्रहों के बारे में वैज्ञानिकों को ज्ञान ज्योतिष से ही मिला है। दिल्ली संस्कृत अकादमी, दिल्ली सरकार द्वारा करोलबाग नई दिल्ली में दिल्ली के जिज्ञासुओं के लिये ज्योतिष अध्ययन केन्द्र चलाया जा रहा है इसमें दिल्ली के अनेक प्रतिभागी ज्ञान लेंगे।

अकादमी के सचिव डॉ. जीतराम भट्ट ने शिक्षार्थियों को कहा कि अकादमी का मूल उद्देश्य यह है कि दिल्ली में संस्कृत के किसी भी क्षेत्र में ज्ञान रखने वाले प्रतिभागियों के लिये दिल्ली संस्कृत अकादमी कक्षाओं का संचालन करती है इसी क्रम में ज्योतिष के जिज्ञासुओं के लिये ज्योतिष अध्ययन केन्द्र का संचालन किया जा रहा है आगे संस्कृत भाषा में निहित अन्य अध्ययन केन्द्रों को भी नियमित रूप से चलाया जायेगा। ये कक्षायें अकादमी परिसर में सोमवार से शुक्रवार तक सायं 4.00 बजे से चलायी जाती हैं। इन कक्षाओं में उच्च कोटि के शिक्षकों के द्वारा प्रतिभागियों को शिक्षण दिया जाता है। इस वर्ष के इन शिक्षार्थियों की संख्या से यह लगता है कि इस अध्ययन केन्द्र के माध्यम से उपस्थित प्रेमियों ने ज्योतिष के सिद्धान्त को सीखने में जन सामान्य की बहुत रूचि है। अकादमी का प्रयास रहता है कि अकादमी कार्यालय में निरन्तर कोई न कोई अध्ययन केन्द्र चलता रहे।

इस अवसर पर आचार्य राज कुमार द्विवेदी ने कहा कि शिक्षा के सभी विकल्पों में ज्योतिष शास्त्र सबसे वैज्ञानिक परक विषय है। ज्योतिष भारतीय प्राचीन विज्ञान है। इसकी काल गणना आज भी वैज्ञानिकों के लिये आश्चर्य का विषय है। परन्तु यह आश्चर्य नहीं विज्ञान है। ये हमारे ऋषियों द्वारा गहन अध्ययन के बाद इसे इस रूप में विकसित किया है।

इस अवसर पर अकादमी के सहायक लेखा अधिकारी श्री भारत भूषण ने कहा कि ज्योतिष में कई क्षेत्र हैं जैसे स्वास्थ्य के लिये, रोजगार के लिये, शिक्षा के लिये,खगोल, काल गणना, जल विज्ञान, सूर्यग्रहण, चन्द्र ग्रहण की गणना आदि। इसके अलावा भी कई विषयों की वैज्ञानिकता को लिये हुये है जिसमें से कई विषय ऐसे हैं कि जो अब उपलब्ध ही नहीं है परन्तु यदि शोध किया जाय व पुरातत्व आदि अन्य क्षेत्रों से सहयोग ले कर कार्य किया जाय तो संस्कृत में अनेक विषय मिल जायेंगे।

इस अवसर पर अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे ।

दिनांक 09.07.2019

प्रतियोगिता परीक्षा की तैयारी ध्येय बनाकर करने से सफलता मिलती है
– डॉ. जीतराम भट्ट

प्रतियोगिताओं की सफलता से प्रगति का मार्ग दिखाई देता है।
–डॉ. पंकज मिश्र

संस्कत भारतीय जनमानस की भाषा है। भारत की इस सर्वोच्च परीक्षा भारतीय प्रशासनिक सेवा में

संस्कृत विषय से अधिक से अधिक लोग पहुँचे ये अकादमी का ध्येय है। इस ध्येय को ध्यान में रखते हुये अकादमी प्रति वर्ष प्रशासनिक (IAS) परीक्षा में भाग लेने वाले प्रतिभागियों को संस्कृत विषय के सम्पूर्ण पाठ्यक्रम को पढाती है। अकादमी द्वारा आयोजित इस शिक्षण केन्द्र का लाभ लेकर अनेक छात्रों ने इस परीक्षा में सफलता पाई है। संस्कृत के विद्यार्थी अब भारतीय प्रशासनिक सेवा की परीक्षाओं में अधिक रुचि ले रहे हैं। जिसके सार्थक परिणाम भी आ रहे हैं। संस्कृत भाषा के उत्थान एवं प्रचार प्रसार के लिये दिल्ली में सरकार की ओर से अनेक प्रयास किये जा रहे हैं। सर्व विदित है कि संस्कृत विश्व की प्राचीन भाषा है। संस्कृत भाषा को अधिक से अधिक लोकप्रिय बनाने के लिये संस्कृतज्ञों को इसे सरल एवं रोजगार परक बनाने की ओर प्रयास करना चाहिये।

ये विचार दिल्ली संस्कृत अकादमी, दिल्ली सरकार द्वारा करोलबाग नई दिल्ली में वर्ष 2019 में भारतीय प्रशासनिक सेवा परीक्षा में संस्कृत विषय लेकर परीक्षा देने वाले प्रतिभागियों के लिये भारतीय प्रशासनिक सेवा परीक्षा संस्कृत शिक्षण केन्द्र का शुभारम्भ करते हुये अकादमी के सचिव डॉ. जीतराम भट्ट ने व्यक्त किये। डॉ. भट्ट ने आगे कहा कि इन कक्षाओं मे उच्च कोटि के शिक्षकों के द्वारा प्रतिभागियों को परीक्षा की तैयारी कराई जायेगी। संस्कृत–साहित्य में अनेक विषय हैं इन विषयों में शिक्षकों की व्यवस्था की जायेगी। इस वर्ष शिक्षार्थियों की संख्या से यह लगता है कि उच्च शिक्षा के क्षेत्र में जाने के लिये संस्कृत के छात्र मेहनत कर रहे हैं। शिक्षा या प्रशासन के क्षेत्र में संस्कृत के छात्र जितने अधिक पहुँचेंगे उतना ही समाजका विकास होगा है। पिछले वर्ष अकादमी द्वारा चलाये गये प्रशिक्षण केन्द्र एवं अन्य केन्द्रों से अनेक प्रतिभागी संस्कृत विषय लेकर प्रशासनिक सेवा परीक्षा में सफलता पाई है ।

इस अवसर पर दिल्ली संस्कृत अकादमी के सदस्य एवं सेण्ट स्टीफेन्स महविद्यालय के संस्कृत विभाग के आचार्य डॉ. पंकज कुमार मिश्र ने कहा कि संस्कृत के प्रशिक्षार्थियों के लिये किसी भी परीक्षा में भाग लेने के लिये दिल्ली संस्कृत अकादमी हर स्तर पर प्रयासरत है। इसी क्रम में अकादमी द्वारा इस वर्ष भी प्रशासनिक सेवा परीक्षा संस्कृत शिक्षण केन्द्र के अध्ययन की व्यवस्था की है। यह प्रशिक्षण केन्द्र अक्टूबर तक चलेगा। जिस में संस्कृत परीक्षा सम्बन्धी सभी विषय सामग्री विषय विशेषज्ञों के द्वारा उपलब्ध करायी जायेगी। इस अध्ययन केन्द्र में 30 से अधिक परिक्षार्थी इस केन्द्र में परीक्षा की तैयारी करेंगे।

इस अवसर पर हिन्दू महाविद्यालय के संस्कृत विभाग के आचार्य डॉ. राजेन्द्र कुमार ने कहा कि संस्कृत विषय लेकर अब भारतीय प्रशासनिक सेवा परीक्षा में निरन्तर विद्यार्थियों की संख्या बढ़ रही है तथा परिणाम भी अन्य विषयों की अपेक्षा अधिक सार्थक हो रहे हैं। इस अवसर पर डॉ. अभय शाण्डिल्य एवं डा. रणजीत कुमार मिश्रा ने भी अपने विचार व्यक्त किये तथा किस प्रकार से इस परीक्षा के लिये तैयारी करनी है पर विस्तार से प्रतिभागियों को बताया। में अनेक अधिकारी कार्यरत हैं ।

इस अवसर पर पूर्व प्रतिभागियों ने अपने अनुभव इन छात्रों को दिये ।

दिनांक 27.07.2019

आयुर्वेद में आधुनिक चिकित्सा शिक्षा के सभी विकल्प निहित हैं
–डॉ. जीतराम भट्ट
आयुर्वेद का अर्थ ही जीवन का ज्ञान है – डॉ. कान्ता भाटिया
आयुर्वेद चिकित्सा की ओर सभी देश अग्रसर हो रहे हैं– डॉ. भगवान सहाय

संस्कृत साहित्य में निहित ज्ञान आयुर्वेद प्राचीन काल से लेकर आज तक विश्व की महत्त्वपूर्ण चिकित्सा पद्धति को दे रहा है। आयुर्वेद में आधुनिक चिकित्सा शिक्षा के सभी विकल्प निहित हैं। मेडिसिन, शल्य चिकित्सा, अस्थि चिकित्सा आदि सभी का इलाज एवं रोगों के निदान आयुर्वेद में वर्णित हैं। इस केन्द्र के माध्यम से दिल्ली के उन प्रशिक्षार्थियों को आयुर्वेद के बारे में जानकारी देना चाहते हैं जो आयुर्वेद चिकित्सा पर विश्वास करते हैं तथा साधारण रोगों को घरेलू औषधियों से ठीक कर सकते हैं। आयुर्वेद के विकास में चीन अमेरिका जर्मन आदि देश बहुत बढ़े स्तर पर कार्य कर रहे हैं। चीन आज आयुर्वेद औषधियों को सबसे बड़ा निर्यातक देश है।

ये विचार दिल्ली संस्कृत अकादमी, दिल्ली सरकार द्वारा करोल बाग नई दिल्ली में आयुर्वेद प्रशिक्षण शिक्षण केन्द्र का शुभारम्भ करते हुये दिल्ली संस्कृत अकादमी की उपाध्यक्षा डॉ. कान्ता भाटिया ने व्यक्त किये। डॉ. भाटिया ने आगे कहा कि स्वस्थ्य व्यक्ति एवं रोगी के लिये उत्तम मार्ग बताने वाले विज्ञान को आयुर्वेद कहते हैं। चरक एवं सुश्रुत आदि मान्य ग्रन्थों में आयुर्वेद को अथर्ववेद का उपवेद माना जाता है। ये ग्रन्थ आयुर्वेद की प्राचीनतम सिद्ध रचनायें हैं। आज भी विश्व चिकित्सा विज्ञान आयुर्वेद के मूल सिद्धान्तों पर आधारित है।

इस अवसर पर इस विषय में विस्तार से बताते हुये अकादमी के सचिव डॉ. जीतराम भट्ट ने कहा कि आयुर्वेद का अर्थ ही जीवन का ज्ञान है। चिकित्सा शास्त्र के भारतीय स्वरूप को आयुर्वेद कहते हैं। आयुर्वेद विश्व में विद्यमान वह ज्ञान है जिसके अध्ययन के पश्चात हम अपनी जीवन शैली का विश्लेषण कर सकते हैं आयुर्वेद संस्कृत साहित्य के वैज्ञानिक पक्ष को मजबूती देता है एक शोध के अनुसार विश्व की आबादी के 21 प्रतिशत रोगियों की संख्या भारत में हैं। यह एक बहुत चिन्ता का विषय है और भारतीय चिकित्सकों के लिये एक चैलेन्ज है। जर्मन में 200 मेडिकल कालेजो में तथा अमेरिका में 100 मेडिकल कालेजों में आयुर्वेद को अनिवार्य रूप से पढाया जाता है। आयुर्वेद में च्यवन ऋषि का अति महत्वपूर्ण योगदान है। फिर भारद्वाज ने आयुर्वेद क प्रभाव से सुखी और आरोग्य जीवन प्राप्त कर अन्य ऋषियों को बताया। आयुर्वेद की सिद्धता वैदिक काल से ही है। डॉ. भट्ट ने आगे कहा कि अकादमी द्वारा प्रारम्भ किये गये आज के अध्ययन केन्द्र में लगभग 193 से प्रशिक्षार्थी शिक्षण ले रहे हैं। यह केन्द्र तीन माह चलेगा। केन्द्र में शनिवार एवं रविवार को सांय 4.00 बजे 6.00 बजे तक से दो घण्टे की कक्षा में चलेगी। अकादमी द्वारा इसी प्रकार से संस्कृत में निहित अन्य विषयों पर भी कक्षायें चलाई जायेगी।

इस अवसर पर तिबिया आयुर्वेद महाविद्यालय के आचार्य डॉ0 भगवान सहाय शर्मा ने कहा कि आयुर्वेद में सभी रोगों का इलाज हैं परन्तु आयुर्वेद रोग से पहले यह ज्ञान देता है कि हम आपने आचार, खान पान एवं व्यवहार इस प्रकार से रखें कि हमं रोग हो ही नहीं। अर्थात रोग से पहले परिहार आयुर्वेद सिखाता है। यदि व्यक्ति रोगी हो जाता है तो आयुर्वेद में सभी रोगों के उपचार करने की क्षमता है। आयुर्वेद में कोई ऐसा रोग नहीं है जिसका उपचार न हो। सभी लोगों को आयुर्वेद की चिकित्सा पर विश्वास करने की जरूरत है। आज सम्पूर्ण विश्व आयुर्वेद की ओर अग्रसर हो रहा है।

इस अवसर पर अकादमी के सहायक लेखा अधिकारी श्री भारत भूषण ने कहा कि चिकित्सा विज्ञान के क्षेत्र में आयुर्वेद के ज्ञान से प्राचीन काल से ही विश्व लाभान्वित होता आ रहा है। आयुर्वेद में कोई ऐसी बीमारी नहीं है जिसका उपचार आयुर्वेद चिकित्सा में न हो। अथर्ववेद के उपवेद को आयुर्वेद कहते हैं आयुर्वेद में चरक, सुश्रुत एवं कश्यप आदि मुख्य ग्रन्थ हैं। आयुर्वेद का रचना काल लगभग सृष्टि के रचना काल के साथ–साथ ही माना गया है। आयुर्वेद का सर्वप्रथम ज्ञान चरक ने दिया है। चरक संहिता आयुर्वेद का आधार स्तंभ है।

इस अवसर पर अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

दिनांक 03.08.2019

आयुर्वेद चिकित्सा से रोगों के उपाय की जरूरत की जानकारी सभी को आवश्यक
– डॉ0 जीतराम भट्ट

भारत में आयुर्वेद चिकित्सा उपचार की परम्परा प्राचीन काल से रही है
–डॉ0 भगवान सहाय

भारत में ही नहीं सम्पूर्ण विश्व में स्वस्थ्य जीवन के लिये आयुर्वेद चिकित्सा से उपचार प्राचीन काल से चला आ रहा है। आधुनिक चिकित्सा में भी आयुर्वेद चिकित्सा के माध्यम से आम लोगों के उपचार को बहुत अधिक जोर दिया जा रहा है। आज भी कई ऐसी बीमारियां है जिनका ईलाज केवल आयुर्वेद की औषधियों के द्वारा ही किया जाता है। आज हम सभी को आवश्यकता है कि दैनिक जीवन में होने वाली छोटी छोटी बीमारियों को ठीक करने के लिये आयुर्वेद की दवाईयों के बारे में जानकारी हर घर में होनी चाहिये। पूर्व वैदिक काल में भी जीवन को स्वस्थ रखने के अनेक मंत्र एवं घर में रखी वस्तुओं के माध्यम से कई बीमारियों को ठीक किया जाता रहा है। इसी परम्परा को हमें आगे बढाना है तथा आम लोगों को आयुर्वेद के बारे में जानकारी देनी है।

ये विचार दिल्ली संस्कृत अकादमी दिल्ली सरकार द्वारा झण्डेवालान में आयोजित ''दैनिक जीवन में आयुर्वेद की उपयोगिता'' विषय पर आयोजित संगोष्ठी पर विशिष्ट व्याख्यान के अन्तर्गत अकादमी के सचिव डॉ. जीतराम भट्ट ने व्यक्त किये। डॉ. भट्ट ने आगे कहा कि भारत में आयुर्वेद का महत्त्व वैदिककाल से चला आ रहा है। अब तक इसके समकक्ष कोई चिकित्सा पद्धति नहीं बनी है। आयुर्वेद में रोग से पहले उस

पर किस प्रकार से नियत्रण किया जा सकता है जिससे ये रोग न हो के बारे में विस्तार से बताया गया है। और यदि रोग हो गया तो उस को कैसे हम ठीक कर सकते हैं उसके छोट छोट उपाय जो हमारे घर में ही उपलब्ध हैं वे बहुत सारे हैं जिसका ज्ञान सभी को होना चाहिये। आज इसी के बारे में विस्तार से बताया गया। आयुर्वेद में तो चिकित्सा के सभी सिद्धन्तों का वर्णन किया गया है। हमें उनको समाज के समक्ष लाने की जरूरत है।

इस अवसर पर अपने विशिष्ट व्याख्यान में तिविया आयुर्वेद महाविद्यालय के प्रो. डॉ. भगवान सहाय ने कहा कि हमें कुछ रोगों के लिये चिकित्सक के पास जाने की जरूरत ही नहीं है उन्हें हम घर में रखी वस्तुओं या हमारे आस पास उपलब्ध पेड पौधों का उपयोग कर के कई बीमारियों को ठीक किया जा सकता है। पहले यदि हम अपना खान पान ठीक से संयमित एवं नियमित हो कर करें तो हमें कोई बीमारी होगी ही नहीं इस लिये पहले इस पर ध्यान देना चाहिये। किस मौसम में क्या खाना चाहिये और क्या नहीं खाना चाहिये इसके बारे में भी हमें जानकारी होनी चाहिये। भोजन के साथ साथ नियमित साधारण व्यायाम या योग से भी अपने आप को स्वस्थ रखा जा सकता है। यदि किसी कारण से बीमारी हो जाय तो इसके लिये भी आयुर्वेद में बहुत औषधियां हैं उनका प्रयोग करना चाहिये। डॉ. सहाय ने कहा कि घर में रखें मसालों में ही अनेक रोगों को ठीक करने के गुण होते हैं। सोंठ, जीरा, अज्वाईन, धनिया, हल्दी, इलाईची, लोंग, हींग आदि के प्रयोग से भी हम कई बीमारियों को होने ही नहीं दे सकते है।

इस अवसर पर अकादमी के सहायक लेखा अधिकारी श्री भारत भूषण ने कहा कि घरेलू सामग्री से ही हम कई बीमारियों को समाप्त कर सकते हैं। विश्व में आज चिकित्सा उपचार से पूर्व प्राथमिक जानकारी से लोगों को सजग किया जा रहा है। संस्कृत साहित्यों में हर प्रकार का ज्ञान निहित है। उसे लोगों तक पहुँचाने की जरूरत है। आयुर्वेद को आधुनिक रूप में लोगों तक पहुँचाने का प्रयास किया जा रहा है।

इस अवसर पर अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

दिनांक 13.08.2019

राष्ट्रीय संस्कृत कवि सम्मेलन का आयोजन युवा वर्ग को प्रेरणा स्रोत है
–प्रो. परमेश्वर नारायण शास्त्री

राष्ट्र याद कर रहा है आजादी के लिये बलिदान हुये शहीदों को –डॉ. जीतराम भट्ट
दिल्ली में संस्कृत भाषा के विकास के लिये अकादमी निरन्तर प्रयासरत है –डॉ. कान्ता भाटिया

दिल्ली संस्कृत अकादमी दिल्ली सरकार द्वारा स्वतंत्रता दिवस के उपलक्ष्य में करोल बाग झण्डेवालान में आयोजित **"अखिल भारतीय संस्कृत कवि सम्मेलन"** का आयोजन किया गया। इस कवि सम्मेलन में देश के प्रतिष्ठित संस्कृत कवियों को संस्कृत काव्य पाठ के लिये आमंत्रित किया गया था।

कवि सम्मेलन का शुभारम्भ राष्ट्रगान एवं सरस्वती वन्दना से हुआ। इसी श्रृंखला में चण्डीगढ़ से

आये हुए कविवर प्रो. जगदीश प्रसाद सेमवाल जी ने हिमालय की सुन्दरता एंव अखण्डता तथा किस प्रकार हमारी रक्षा हिमालय कर रहा है और हमें जीवनदायिनी तथा राष्ट्र के विकास में किस प्रकार से हिमालय से निकलती नदियों के जल द्वारा प्राप्त करता है।

इसी क्रम में रायबरेली से आये कविवर डॉ. प्रशस्यमित्र शास्त्री ने हास्य विनोद से परिपूर्ण काव्यपाठ किया जिसमें कई सूक्तियों का वर्णन किया जो कि प्रचलित भी हैं।

दिल्ली से डॉ. भारतेन्दु पाण्डेय जी ने कुछ पद्यों में भारत मां की वन्दना करते हुए काव्यापाठ किया और काव्यपाठ में उन्होंने समस्त विद्वानों तथा संस्कृतज्ञों को अवगत कराया कि किस प्रकार हम स्वतन्त्र होकर भी वर्तमान में परतन्त्रता का जीवन यापन कर रहे हैं तथा प्रसिद्ध देश भक्ति पर लिखा संस्कृत काव्य से श्रोताओं को मंत्रमुग्ध किया।

दिल्ली से ही डॉ. भागीरथी नन्द ने भी "भारतं नः" इस काव्यपाठ के द्वारा अपनी सुमधुर आवाज के द्वारा काव्यापाठ किया जिससे समस्त संस्कृतज्ञ भाव विभोर होकर काव्य का रसासवादन करने लगें।

दिल्ली की डॉ. प्रवेश सक्सेना ने राष्ट्र की उन्नति के लिए वेदों एवं यज्ञ को श्रेष्ठ कर्म की प्रधानता को मानते हुए तथा वर्तमान में नये विज्ञान को प्राचीन एवं आधुनिक परम्परा को संस्कृत की देन है इन विचारों की भावना से काव्यपाठ किया जिसका शीर्षक राष्ट्र मे भूरि वर्धताम् थी।

कवि सम्मेलन का संचालन दिल्ली के युवा संस्कृत कवि डॉ. परमानन्द जी ने अपनी मधुर वाणी एवं कवियों को विभिन्न छन्दों से उनकी उपमाओं का वर्णन कर कवियों को क्रमशः मंच पर काव्य पाठ हेतु आमन्त्रित किया जिससे समस्त काव्यरसों एवं उपस्थित विद्वानों एवं सभागार में आनन्दानुभूति का अनुभव हो रहा था।

कवि सम्मेलन में दिल्ली विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग के आचार्य डॉ बलराम शुक्ल ने राष्ट्र की एकता में संस्कृत के महत्व का वर्णन किया और देश को संस्कृत क्या देता है वह सार अपनी कविता के माध्यम से वर्णित किया। दिल्ली के ही श्री युवराज भट्टराई ने आजादी के बाद देश को किस प्रकार से श्रेष्ठ बनाया जा सकता है कविता के माध्यम से अपने विचार रखे।

कवि सम्मेलन का शुभारम्भ प्रसिद्ध संस्कृत विदुषी एवं शिक्षाविद डॉ. कान्ता भाटिया ने किया। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि संस्कृत संसार की प्राचीनतम भाषा है। प्राचीन भारतीय मनीषियों का ज्ञान–विज्ञान से सम्बन्धित समस्त चिन्तन, मनन और विश्लेषण संस्कृत भाषा में ही हुआ है। भारत के साहित्यिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, आध्यात्मिक, नैतिक, राजनैतिक और ऐतिहासिक जीवन की व्यवस्था भी इसी भाषा में प्राप्त होती है। विद्वानों द्वारा ग्रीक, लैटिन, जर्मन इत्यादि अनेक भारोपीय परिवार की भाषाओं की जननी भी संस्कृत भाषा को ही माना जाता है। भारत की समस्त प्रान्तीय भाषाओं में संस्कृत शब्दों का ही बाहुल्य है।

इस अवसर पर अकादमी के सचिव डॉ. जीतराम भट्ट ने कहा कि स्वतंत्रता दिवस के इस राष्ट्रीय पर्व पर दिल्ली सरकार की ओर से दिल्ली में संस्कृत कवि सम्मेलन का आयोजन राष्ट्रीय एकता एवं

अखण्डता को मजबूत करता है। इस कवि सम्मेलन को प्रति वर्ष आयोजित कर अकादमी वीर स्वतंत्रता सेनानियों द्वारा किये गये निःस्वार्थ बलिदान को देश की युवा पीढ़ी को बताने का प्रयास करती है। अकादमी संस्कृत भाषा के प्रति लोगों में अभिरूचि पैदा करने के लिये निरन्तर अनेक स्तर पर कार्य कर रही है। आज के इस कवि सम्मेलन में देश के अनेक प्रदेशों के संस्कृत कवियों ने अपना काव्य पाठ किया। दिल्ली में संस्कृत भाषा के लिये दिल्ली सरकार निरन्तर प्रयासरत है।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में दिल्ली नगर निगम की पार्षद श्रीमती गीता रावत ने कहा कि संस्कृत कवियों ने समाज को नई शिक्षायें दी हैं जिस कारण देश अपनी संस्कृति की जड़ों को मजबूती से आगे बढ़ाता रहा। संस्कृत ने देश को नई पहचान दी है। सभी संस्कृत कवियों का दिल्ली सरकार की ओर से मैं स्वागत करती हूँ।

कार्यक्रम की अध्यक्षता राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान के कुलपति प्रो. पी.एन. शास्त्री ने की ओर देश से आये सभी कवियों का सम्मान किया। संस्कृत का देश की आजादी में किये गये योगदान को याद दिलाया कि किस प्रकार देश को एकता का स्वरूप देने में संस्कृत अग्रणीय रही है।

बलरामपुर उत्तर प्रदेश से डॉ. कृपाराम त्रिपाठी अपनी कविता के माध्यम से विश्व की अनेक प्राचीन भाषायें, संस्कृतियां विलुप्त हो गई है, किन्तु भारतीय संस्कृति आज भी पूरे विश्व मे अपना गौरव और महत्त्व के साथ विद्यमान है इससे लोगों को परिचित कराया।

घोण्डा उत्तर प्रदेश के डॉ. महरादीन पाण्डेय ने कविताओं के द्वारा संस्कृत के महत्त्व को बताते हुये भारतीय संस्कृति को सबसे महान बताते हुये स्वतंत्रता दिवस को राष्ट्रीय पर्व के रूप में देश भर में मनाया जाता है विषय में अपने विचार प्रस्तुत किये ।

राजस्थान के कौशल तिवारी ने श्लोकों के माध्यम से इस दिन को राष्ट के प्रति हर व्यक्ति का क्या दायित्व है राष्ट निर्माण मं किसकी क्या आवश्यकता है इसका अवलोकन कर हम राष्ट्र के प्रति अपनी निष्ठा का परिचय दिया ।

कोलकाता के डॉ. नारायण दास ने संस्कृत मानव –सभ्यता के प्राचीनतम इतिहास से जुड़ी भाषा एवं संस्कृति है। विश्व में काव्य सर्व प्रथम इसी भाषा में हुआ है पर अपना काव्यपाठ प्रस्तुत किया।

केरल से आये डॉ. रामकृष्ण पेजथाया ने भारत के सौन्दर्य के बारे में विस्तार से अपने काव्यों में हर पक्ष को प्रस्तुत किया। हिमाचल प्रदेश के डॉ. सुज्ञान कुमार ने पर्वतो के बारे में मनोहर चित्रण प्रस्तुत किया। दिल्ली के डॉ. दयाल सिंह पंवार ने देश की प्रगति में सभी लोगों के योगदान को चित्रित किया। युवा कवियों में दिल्ली के डॉ. ऋषिराज पाठक ने वीरो को याद करते हुये उनके बलिदान पर नमन किया और देश को आगे ले जाने के किये एक साथ चलने को प्रोत्साहित करते हुये अपना काव्यपाठ किया।

इस अवसर पर दिल्ली विश्वविद्यालय के सेण्ट स्टीफन्स महाविद्यालय के संस्कृत विभाग की आचार्य डॉ. आशुतोश दयाल माथुर, डॉ. पंकज कुमार मिश्रा, डॉ. क्षेमचन्द सहित अनेक गणमान्य संस्कृत प्रेमी महानुभाव भी उपस्थित थे।

दिनांक 14.08.2019

प्राचीन काल में संस्कृत राजभाषा के रूप में प्रयोग होती थी –प्रो रमेश कुमार पाण्डेय
संस्कृत दिवस के उपलक्ष्य में सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन – डॉ0 जीतराम भट्ट
संस्कृत दिवस का आयोजन किया गया –डॉ0 कान्ता भाटिया

संस्कृत सभी भाषाओं की जननी है। संस्कृत के व्याकरण का उच्चकोटि के होने के कारण संस्कृत मूल स्वरूप को परिवर्तित नहीं किया जा सकता है कोई भी शब्द या वाक्य संस्कृत के अनुसार ही संस्कृत भाषा में प्रयोग होगा उसे साधारण रूप से नहीं समायोजित किया जा सकता है यही संस्कृत की समृद्धि का कारण है। प्राचीन काल में संस्कृत राजभाषा के रूप में प्रयोग होती थी। आज विश्व की इस महान भाषा को संस्कृत सप्ताह के रूप में मनाना पड़ रहा है। सरकार द्वारा संस्कृत के प्रचार प्रसार एवं विकास को प्रोत्साहित करने के लिये प्रतिवर्ष रक्षाबन्धन के दिन को संस्कृत दिवस के रूप में मनाया जाता है। इस वर्ष संस्कृत सप्ताह के अवसर पर इस पूरे सप्ताह अनेक संस्कृत विषय कार्यक्रमों का आयोजन किया जा रहा है। इसी क्रम में दिल्ली संस्कृत अकादमी दिल्ली सरकार द्वारा संस्कृत दिवस के अवसर पर आज "सांस्कृतिक कार्यक्रम" का आयोजन कर संस्कृत के प्रचार प्रसार का कार्य किया जा रहा है।

ये विचार दिल्ली संस्कृत अकादमी द्वारा आयोजित संस्कृत दिवस समारोह के मुख्य अतिथि श्री लालबहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ के कुलपति प्रो. रमेश कुमार पाण्डेय ने व्यक्त किये। प्रो. पाण्डेय ने आगे कहा कि भारत अपने विशाल ज्ञान के आधार पर ही विश्वगुरु है और इस के लिये संस्कृत बहुत मजबूती से खड़ी है। भारत को विश्वगुरु माना जाता रहा है।

इस अवसर पर अकादमी के सचिव डॉ0. जीतराम भट्ट ने कहा कि विश्व संस्कृत के महत्व एवं इस में निहित ज्ञान विज्ञान से परिचित होकर इसका लाभ सभी को पहुँचाने के लिये अपने स्तर पर शोध कार्य कर रहे हैं। हमारे देश में इस सप्ताह को संस्कृत सप्ताह के रूप में मनाया जा रहा है संस्कृत अकादमी संस्कृत सप्ताह में संस्कृत विषय सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन कर रही है आज अकादमी के सभागार में संस्कृत में भारतीय फिल्मों के प्रसिद्ध गीतों का संस्कृत अनुवाद एवं श्रीमती मीनू ठाकुर द्वारा कुचिपूडी नृत्य के माध्यम से विभिन्न संस्कृतमय प्रस्तुतियां की गई । संस्कृत में आयोजित इस सांस्कृतिक कार्यक्रम का अनेक लोगों ने आनन्द लिया । इस वर्ष हर्ष का विषय है कि स्वतंत्रता दिवस एवं संस्कृत दिवस एक ही दिन है। इससे स्वतंत्रता के महत्व को संस्कृत के माध्यम से अधिक समझा जा सकता है ।

इस अवसर पर कार्यक्रम के बारे में विस्तार से बताते हुये अकादमी की उपाध्यक्षा डॉ0 कान्ता भाटिया ने कहा कि रक्षाबन्धन के दिन को प्रति वर्ष सरकार द्वारा संस्कृत दिवस के रूप में मनाया जाता है। आज अकादमी द्वारा संस्कृत दिवस का आयोजन किया जा रहा है अकादमी अपने कर्तव्यों का निर्वहन करते हुये संस्कृत के प्रचार प्रसार के हर विषय को लोगो के समक्ष लाने का पूर्ण प्रयास करती है डॉ. भाटिया ने आगे कहा कि हम संस्कृत में पहले लोगों के लिये रूचिकर वातावरण बनायें फिर संस्कृत के

व्याकरण एवं साहित्य की ओर इनको ले जायें। हमारा उद्देश्य केवल संस्कृत सीखना ही नहीं होना चाहिये। आप सभी संस्कृत प्रेमियों एवं सभी दिल्ली वासियों को मेरी ओर से "संस्कृत दिवस एवं संस्कृत सप्ताह" की हार्दिक शुभकामना।

इस अवसर पर अकादमी के सहायक लेखा अधिकारी श्री भारत भूषण ने कहा कि हमारे देश में संस्कृत विद्वानों को हमेशा से ही सम्मान की दृष्टि से देखा जाता रहा है। सस्कृतज्ञों का देश के ज्ञान विज्ञान को बढ़ाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। नालन्दा, तक्षशिला, विक्रमशिला आदि ऐसे विद्यालय थे, जिसमें देश के ही नहीं, अपितु विदेशों से भी छात्र पढ़ने आते थे और यहां से उन्नत शिक्षा एवं संस्कार प्राप्त करके अपने–अपने देशों के लोगों को शिक्षित करते थे ।

इस अवसर पर अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे ।

दिनांक 23.08.2019

आज के कम्प्यूटर युग में संस्कृत का महत्व अधिक हो गया है –डॉ. जीतराम भट्ट

अकादमी संस्कृत के युवा वर्ग को प्रोत्साहित करने के लिये निरन्तर प्रयासरत है –प्रो. भागीरथी नन्द

गुरुकुलीय शिक्षा आज की जरूरत है –श्री कीमतीलाल

आज के कम्प्यूटर युग में संस्कृत का महत्व अधिक हो गया है। संस्कृत को कम्प्यूटर की भाषा बनाने पर बहुत जोर दिया जा रहा है। संस्कृत में इस क्षेत्र में बहुत कार्य हो रहे है । संस्कृत में रोजगार की नई नई व्यवस्थायें हो रही है। आप लोगों को एकाग्र होकर पूर्ण मनायोग से संस्कृत को गहराई से पढ़ने की जरूरत है। संस्कृत के याद करने की परम्परा को यदि जीवित रखना है तो इस प्रकार की प्रतियोगिताओं का किया जाना आवश्यक है। इस परम्परा से प्रतिभागियों को श्लोक याद करने की क्षमता मिलेगी। संस्कृत के माध्यम से देश के अनेक छात्र–छात्राएँ अपना भविष्य बना रहे हैं। संस्कृत साहित्य सभी साहित्यों की आत्मा है। संस्कृत एवं संगीत से साहित्य में जीवन का संचार होता है। अभी तक संस्कृत भाषा को याद करने की परम्परा से पढ़ाया एवं पढ़ा जाता रहा है।

ये विचार दिल्ली संस्कृत अकादमी दिल्ली सरकार द्वारा श्री हनुमान संस्कृत महाविद्यालय रघुबीर नगर नई दिल्ली में मध्यमा स्तरीय "एकल श्लोक संगीत प्रतियोगिता समारोह " का शुभारम्भ करते हुए अकादमी के सचिव डॉ० जीतराम भट्ट ने व्यक्त किये । डॉ० भट्ट ने आगे कहा कि दिल्ली में चल रहे अनेक परम्परागत संस्कृत विद्यालय एवं गुरुकुल युवा पीढ़ी में संस्कृत को पढ़ाने के लिये अथक प्रयास कर रहे हैं। आपके विद्यालयों से संस्कृत शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थी उच्च शिक्षा लेकर संस्कृत एवं भारतीय संस्कृति की सेवा कर रहे हैं। संस्कृत के अनेक क्षेत्र हैं हम एक क्षेत्र को केन्द्रित कर अपना ज्ञान अर्जित करें तो इसमें हम सफल जल्दी हो सकते हैं। सफलता के लिये डर को दिल से हटाना जरूरी है।

इस अवसर पर श्री हनुमान संस्कृत महाविद्यालय के प्रबन्धक श्री कीमतीलाल ने कहा कि हमारा महाविद्यालय अपनी स्थापना से ही संस्कृत के क्षेत्र में कइ विद्यार्थियों को उच्च शिक्षा देते आ रहे हैं। संस्कृत विद्यार्थियों को संस्कृत पढाने के लिये जितनी सुविधाओं की आवश्यकता है वह सुविधायें हमारे विद्यालय में हर विद्यार्थी को दी जा रही है। दिल्ली संस्कृत अकादमी संस्कृत के युवा वर्ग को हर स्तर पर प्रोत्साहन देने के लिये निरन्तर प्रयासरत है। अकादमी प्रति वर्ष निर्धारित कार्यक्रमों के अलावा नये कार्यक्रमों को भी शमिल करती है। अकादमी प्रति वर्ष दिल्ली के युवा प्रतिभाशाली प्रतिभागियों को अपनी प्रतिभा दिखाने के लिये दिल्ली में अनेक प्रकार की संस्कृत विषयक प्रतियोगिताओं का आयोजन करती है इसी क्रम में आज विद्यालयीय स्तर के प्रतिभागियों के लिये "एकल श्लोक संगीत प्रतियोगिता" का आयोजन किया गया है। दिल्ली के लगभग संस्कृत विद्यालयों के 30 छात्र–छात्राओं ने आज इस प्रतियोगिता में भाग लेकर संस्कृत के भविष्य को उज्ज्वल बनाने का प्रयास किया है।

इस अवसर पर श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ के साहित्य संकाय के अध्यक्ष प्रो0 भागीरथी नन्द ने कहा कि संस्कृत विश्व की प्रथम भाषा है जिसका उपयोग बोलने में पढ़ने में और लिखने में हुआ है। जब विश्व में कोई पढना लिखना ही नहीं जानता था उस समय भारत में वेद लिख दिये गये थे। आज भारतीय ज्ञान विज्ञान एवं दर्शन के लिये और भारतीय मान–सम्मान, गौरव, अस्मिता, संस्कृति, सभ्यता आदि की रक्षा हेतु हमें संस्कृत की आवश्यकता है।

इस अवसर पर संगीत विशेषज्ञ डॉ. भास्करानन्द पाण्डेय ने कहा कि दिल्ली के इस गुरूकुल से शिक्षा एवं अन्य क्षेत्रों में अनेक उत्कृष्ट संस्कृत छात्र दे रहे हैं। इस महाविद्यालय की प्रबन्धक समिति कई वर्षो से संस्कृत के प्रचार प्रसार के लिये कार्यरत है। इस महाविद्यालय के छात्र अन्य विद्यालयों के लिये उदाहरण होते हैं ।

इस अवसर पर कार्यक्रम की संयोजिका विद्यालय की प्राचार्या श्रीमती नीलम नागपाल ने कहा कि इस प्रतियोगिता को आयोजित करने में महाविद्यालय के आचार्यों एवं स्टाफ के साथ प्रबन्धन समिति का पूर्ण योगदान रहा है। प्रतियोगिता में प्रथम एवं द्वितीय स्थान श्री हनुमान संस्कृत महाविद्यालय के श्री रमेश सिंह एवं श्री शिवम को प्राप्त हुआ। तृतीय एवं चतुर्थ स्थान महर्षि वेद व्यास संस्कृत विद्यापीठ के श्री रमेश सिंह एवं श्री शिवम को प्राप्त हुआ। तृतीय एवं चतुर्थ स्थान महर्षि वेद व्यास संस्कृत विद्यापीठ के श्री हरिदर्शन तिवारी एवं श्री अमन पाण्डेय को प्राप्त हुआ। श्री रामऋषि महाविद्यालय कराला के श्री अभिषेक कुमार को पंचम स्थान प्राप्त हुआ। प्रतियोगिता में भाग लेने वाले प्रतिभागियों को नकद पुरस्कार से सम्मानित किया गया। इस अवसर पर अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

संस्कृत एकल श्लोक संगीत प्रतियोगिता वर्ष 2019–20 (मध्यमा स्तरीय)

क्र.सं.	महाविद्यालय का नाम	प्रतिभागी का नाम	प्राप्त स्थान	पुरस्कार राशि
1.	श्री हनुमान संस्कृत महाविद्यालय, एफ–487/3, रघुवीरनगर, नई दिल्ली–27	रमेश सिंह	प्रथम	2000/–

2.	श्री हनुमान संस्कृत महाविद्यालय, एफ–487/3, रघुबीरनगर, नई दिल्ली–27	शिवम	द्वितीय	1800/–
3.	महर्षि वेदव्यास गुरुकुल विद्यापीठ,आनन्दधाम आश्रम, बक्करवाला मार्ग, नांगलोई–नजफगढ़ रोड, दिल्ली–41	हरिदर्शन तिवारी	तृतीय	1500/–
4.	महर्षि वेदव्यास गुरुकुल विद्यापीठ, आनन्दधाम आश्रम, बक्करवाला मार्ग, नांगलोई–नजफगढ़ रोड, दिल्ली–41	अमन पाण्डेय	चतुर्थ	1200/–
5.	श्री रामऋषि संस्कृत महाविद्यालय, कराला, दिल्ली–81	अभिषेक कुमार	पंचम	1000/–
6.	श्रीराम ज्योतिष एवं कर्मकाण्ड संस्कृत महाविद्यालय, 358/4, मण्डावली, फाजलपुर, दिल्ली–92	श्याम झा	प्रोत्साहन	500/–
7.	बसन्त ग्राम आदर्श संस्कृत महाविद्यालय, बसन्तगांव, बसन्तविहार, नई दिल्ली–57	अंकित दूबे	प्रोत्साहन	500/–
8.	आर्ष कन्या गुरुकुल महाविद्यालय, नरेला, दिल्ली–40	सुमन आर्या	प्रोत्साहन	500/–

दिनांक 31.08.2019

संस्कृत भाषा न मृत भाषा है और न ही कभी मृत हो सकती है –डॉ. जीतराम भट्ट

नाटकों से समाज को नई दिशा दी जा सकती है –देवी सिंह

विश्व की अनेक भाषायें समाप्त हो गयी हैं। परन्तु संस्कृत भाषा न मृत भाषा है और न ही कभी मृत हो सकती है। जिस दिन संस्कृत भाषा समाप्त हो जायेगी सभी भाषायें अपने आप विलुप्त हो जायेगी। यह एक बहुत स्थाई सत्य है सत्य को कुछ देर के लिये दबाया जा सकता किन्तु समाप्त नहीं किया जा सकता है। अमेरिका इगलैण्ड आदि देशों में पहली कक्षा से ही संस्कृत पढ़ायी जाने लगी है। हमारे देश में 6वीं कक्षा से संस्कृत पढ़ाने पर ही बहुत प्रश्न किये जाते हैं। ब्रिटिश शासनकाल में मैकाले ने भारतीय शिक्षा को इस प्रकार से बना दिया है कि इस में भारत की मूल भाषा को ह्रास किया गया। शिक्षा को केवल रोजगार तक सीमित कर दिया जिस कारण हमें संस्कृति सभ्यता आदर भावनायें आदि की शिक्षा से विमुख कर दिया गया जो अभी तक चली आ रही है। शिक्षा मनुष्य को मनुष्य बनाती है।

ये विचार दिल्ली संस्कृत अकादमी दिल्ली सरकार द्वारा आर्ष कन्या गरुकुल नरेला दिल्ली में आयोजित संस्कृत एकांकी नाटक प्रतियोगिता समारोह (मध्यमा स्तरीय) का शुभारम्भ करते हुये अकादमी के सचिव डॉ. जीतराम भट्ट ने व्यक्त किये। डॉ. भट्ट ने कहा कि एकांकी नाटकों का अपना अलग महत्व है। एकांकी नाटकों से ही नाटकों की ओर अग्रसर हुआ जाता है। एकांकी नाटकों के मंचन के लिये कम पात्रो एवं समय की आवश्यकता होती है। भास संस्कृत साहित्य के प्रसिद्ध नाटककार थे। अकादमी द्वारा समाज को संस्कृत साहित्य में निहित विषयों के माध्यम से किस प्रकार से लाभान्वित किया जाय इस विषय में जानकारी के इस संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर कार्यक्रम के मुख्य अतिथि आर्षकन्या गुरुकुल के अध्यक्ष श्री देवी सिंह ने कहा कि संस्कृत साहित्य में प्राचीन काल से ही अनेक महर्षियों द्वारा संस्कृत भाषा में उच्च कोटि के नाटकों का लेखन हुआ है। नाटकों को उच्च कोटि का बनाने के लिये इसमें संगीत, शास्त्रीय नृत्य एवं साहित्य का समावेश बहुत महत्त्वपूर्ण हैं। संस्कृत नाटकों के मंचन एवं लेखन की परम्परा बहुत प्राचीन है। आज समाज को जागृत करने की जरूरत है जिसके लिये संस्कृत नाटकों का सहारा ले कर समाज को नई दिशा दी जा सकती है। एकांकी नाटक में किसी नाटक के एक अंक ही चित्रण किया जाना होता है जिससे इसे बढी आसानी से लोगों को एक समय में एक संदेश दिया जा सकता है ।

इस अवसर पर दिल्ली शिक्षा निदेशालय के उप शिक्षा निदेशक डॉ. वीरेन्द्र शास्त्री ने कहा कि एकांकी नाटकों के माध्यम से समाज में बहुत बढे स्तर पर सामाजिक चेतना जागृत की जा सकती है। इस प्रकार समय समय पर अन्य संस्कृत विषयक नाटकों, एकांकी नाटकों, नुक्कड नाटकों से लोगों को परिचित कराने का कार्य निरन्तर किया जाना चाहिये। एकांकी नाटकों को सरल भाषा में एवं आधुनिक तकनीकी का प्रयोग करते हुए इन्हें अन्य भाषाओं में भी रूपान्तरित करके मंचित किये जाने की जरूरत है।

इस अवसर पर गुरुकुल के प्रबन्धक श्री सोमवीर शास्त्री ने कहा कि दिल्ली संस्कृत अकादमी द्वारा दिल्ली के संस्कृत प्रेमियों के लिये संस्कृत एकांकी नाटकों पर संगोष्ठी आयोजन कर लोगों में नाटक की अभिरुचि को पूर्ण करने का कार्य किया है और आज इस विषय में संगोष्ठी में आये विद्वान जो इस क्षेत्र से जुड़े हैं उनके विचारों और अनुभवों को जानने को मौका मिला।

इस अवसर पर कन्या गुरुकुल नरेला की प्रधानाचार्या श्रीमती सविता ने कहा कि मेडिकल साइन्स भी यह कह रही है कि संस्कृत थैरेपी के माध्यम से रोगियो का उपचार किया जा सकता है। नाटकों में निहित विभिन्न अवतरणों में अलग अलग रसों का निष्पादन होता है जिससे शरीर के विभिन्न अंग काम करने लगते है। नाटको का समाज पर बहुत जल्दी असर पढता है। आज की प्रतियोगिता में दिल्ली के अनेक संस्कृत विद्यालयों के प्रतिभागियों ने भाग लेकर एकाकी नाटको की प्रस्तुति की।

इस अवसर पर अनेक संस्कृत प्रेमी महानुभाव उपस्थित थे।

संस्कृत एकांकी नाटक प्रतियोगिता वर्ष 2019–20

क्र.सं.	महाविद्यालय का नाम	प्रतिभागी का नाम	प्राप्तस्थान	पुरस्कार राशि
1.	आर्ष कन्या गुरुकुल महाविद्यालय, नरेला, दिल्ली–110040	प्रिया आर्या	प्रथम	600/–
2.		खुशी आर्या	प्रथम	600/–
3.		श्वेता आर्या	प्रथम	600/–
4.		चंचल आर्या	प्रथम	600/–
5.		नैन्सी आर्या	प्रथम	600/–
6.		वैष्णवी आर्या	प्रथम	600/–
7.		संगीता आर्या	प्रथम	600/–
8.		पायल आर्या	प्रथम	600/–
9.		बुलबुल आर्या	प्रथम	600/–
10.		प्राची आर्या	प्रथम	600/–
11.	ब्रह्म ऋषि रामप्रपन्नाचार्य संस्कृत वेद वेदांग महाविद्यालय, राजघाट, नई दिल्ली–02	आदर्श तिवारी	प्रोत्साहन	350/–
12.		कन्हैया	प्रोत्साहन	350/–
13.		प्रितम	प्रोत्साहन	350/–
14.		राम	प्रोत्साहन	350/–
15.		रोनित	प्रोत्साहन	350/–
16.		विवेकानन्द	प्रोत्साहन	350/–

दिनांक 03.09.2019

भारतीय आचार्यों ने विश्व को विज्ञान के अनेक सूत्र का ज्ञान दिया –डॉ. जीतराम भट्ट
ज्योतिष शास्त्र भारतीय शिक्षा के विज्ञान परक विषय हैं –आचार्य राजकुमार द्विवेदी

दिल्ली संस्कृत अकादमी दिल्ली सरकार द्वारा झण्डेवालान करोलबाग में संचालित ज्योतिष अध्ययन केन्द्र का समापन आज किया गया। इस अवसर पर प्रशिक्षार्थियों को प्रमाण पत्र वितरित किये गये। इस केन्द्र का शुभारम्भ जून 2019 के प्रथम सप्ताह में किया गया था। इस केन्द्र में प्रशिक्षित प्रशिक्षार्थियों की संख्या 55 से अधिक थी। इस अवसर पर प्रशिक्षार्थियों को प्रशिक्षण के बारे में बताते हुये अकादमी के सचिव डॉ. जीतराम भट्ट ने कहा कि ज्योतिष पूर्णरूप से विज्ञान है। इस में ग्रहों की स्थिति के साथ साथ अनेक विषय है जो विज्ञान की कसौटी पर खरे उतरते है। भूगोल शब्द स्वतः ही बताता है कि पृथ्वी गोल है यह भी कई शताब्दी पूर्व भारतीय ज्ञान विज्ञान में प्रयोग होता चला आ रहा है। ज्योतिष का उपयोग मानव कल्याण के लिये किया जा रहा है। भारतीय आचार्यों ने विश्व को विज्ञान के अनेक सूत्र एवं ज्ञान दिया है। गुरुत्वाकर्षण का नियम सबसे पहले कणाद ऋषि ने प्रतिपादित किया था। इसी प्रकार शून्य के व्यवहारिक प्रयोग को आर्यभट्ट ने प्रतिपादित किया था। डॉ. भट्ट ने आगे कहा कि भारतीय ज्योतिष

विज्ञान में ग्रह, नक्षत्रों की हर प्रकार की गणना का उल्लेख प्राचीन काल से किया जाता रहा है। ज्योतिष आज के वैज्ञानिक स्वरुप को ही दिखाता है ग्रहों के बारे में वैज्ञानिकों को ज्ञान ज्योतिष से ही मिला है। दिल्ली का जन्तर मन्तर ज्योतिष की विज्ञान शाला थी। दिल्ली संस्कृत अकादमी, दिल्ली सरकार द्वारा करोलबाग नई दिल्ली में दिल्ली के जिज्ञासुओं के लिये ज्योतिष अध्ययन केन्द्र चलाया गया जिसमें अनेक लोगों ने ज्योतिष का ज्ञान अर्जन किया। आपके द्वारा इन कक्षाओं में किया गया ज्ञान अर्जन आपके भविष्य में काम आयेगा और भारतीय परम्परा को आगे ले जाने में आप सहयोग करेंगे।

इस अवसर पर अकादमी के सहायक लेखा अधिकारी श्री भारत भूषण ने कहा अकादमी का मूल उद्देश्य यह है कि दिल्ली में संस्कृत के किसी भी क्षेत्र में ज्ञान रखने वाले प्रतिभागियों के लिये दिल्ली संस्कृत अकादमी कक्षाओं का संचालन करती है इसी क्रम में ज्योतिष के जिज्ञासुओं के लिये ज्योतिष अध्ययन केन्द्र का संचालन किया गया आगे वास्तुशास्त्र अध्ययन केन्द्र चलाया जायेगा। ये कक्षायें अकादमी परिसर में सोमवार से शुक्रवार तक सायं 4.00 बजे से चलायी जाती थी। इन कक्षाओं में उच्च कोटि के शिक्षकों के द्वारा प्रतिभागियों को शिक्षण दिया गया। अकादमी झण्डेवालान कार्यालय परिसर में निरन्तर संस्कृत विषय कोई न कोई अध्ययन केन्द्र चलाता रहता है जिससे संस्कृत की गतिविधियाँ निरन्तर चलती रहें। वर्तमान में अकादमी परिसर में आयुर्वेद, प्रशासनिक सेवा, संस्कृत एवं योग अध्ययन केन्द्र पहले से ही चल रहे हैं।

इस अवसर पर आचार्य राज कुमार द्विवेदी ने कहा कि ज्योतिष में काल गणना आज भी वैज्ञानिको के लिये आश्चर्य का विषय है। परन्तु यह आश्चर्य नहीं विज्ञान है। शिक्षा के सभी विकल्पों में ज्योतिष शास्त्र सर्वप्रथम वैज्ञानिक निष्ठ विषय है। ज्योतिष भारतीय प्राचीन विज्ञान है। हमारे ऋषियों द्वारा विशेष शोध के बाद एवं गहन अध्ययन के बाद निकले निष्कर्षों से ज्योतिष को इस रूप में व्यवस्थित किया गया है। ज्योतिष में कई क्षेत्र हैं जैसे स्वास्थ्य के लिये, रोजगार के लिये, शिक्षा के लिये , खगोल, काल गणना, जल विज्ञान, सूर्यग्रहण, चन्द्र ग्रहण की गणना आदि। इसके अलावा भी कई विषयों की वैज्ञानिकता को लिये हुये है जिसमें से कई विषय ऐसे हैं कि जो अब उपलब्ध ही नहीं है परन्तु यदि शोध किया जाय व पुरातत्व आदि अन्य क्षेत्रों से सहयोग ले कर कार्य किया जाय तो संस्कृत में अनेक विषय मिल जायेगे।

इस अवसर पर प्रतिभागियों को शिक्षण में उपस्थित होने पर प्रमाण पत्र दिये गये। इस अवसर पर अनेक

दिनांक 07.09.2019

संस्कृत में शलाका प्रतियोगिता ही विद्वानों की सही कसौटी है –आचार्य गोविन्दाचार्य इस प्रकार के कार्यक्रमों के माध्यम से संस्कृत भाषा को सभी जनमानस तक पहुँचाया जाता है–डॉ. जीतराम भट्ट

दिल्ली संस्कृत अकादमी दिल्ली सरकार द्वारा श्रीनिवास संस्कृत विद्यापीठ दिल्ली में संस्कृत शलाका प्रतियोगिता समारोह का आयोजन किया गया। यह प्रतियोगिता शास्त्री/आचार्य एवं उत्तर

मध्यमा एवं/पूर्व मध्यमा स्तर के छात्रों के लिये अलग अलग आयोजित की गई। इस प्रतियोगिता में दिल्ली के अनेक संस्कृत विद्यालयों एवं महाविद्यालयों के छात्र/छात्राओं ने भाग लिया। प्रतियोगिता शास्त्री एवं आचार्य स्तर पर मेघदूतम पर आधारित एवं मध्यमा एवं उत्तर मध्यमा में शिवराजविजयम् पर आधारित थी।

इस अवसर पर कार्यक्रम का शुभारम्भ प्रसिद्ध संस्कृत विद्वान श्रीनिवास संस्कृत विद्यापीठ के प्रबन्धक आचार्य गोविन्दाचार्य द्वारा किया गया। उन्होंने कहा कि संस्कृत भाषा में शलाका शास्त्रार्थ की परम्परा प्राचीन काल से ही आयोजित हुआ करती थी। संस्कृत की मुख्य पुस्तकों को याद करने के लिये इस प्रकार के शास्त्रार्थ का प्रयोग किया जाता था। दिल्ली संस्कृत अकादमी इसी परम्परा को आगे बढ़ते हुये शलाका प्रतियोगिता का आयोजन कर रही है। संस्कृत ही भारतीय संस्कृति का आधार है। विश्व में यह देश संस्कृत के कारण ही जाना जाता है। संस्कृत भाषा अनेकता में एकता का सन्देश सदियों से देती आयी है। यह भाषा मानव सभ्यता के प्राचीनतम इतिहास से जुड़ी है।

कार्यक्रम प्रस्तावना प्रस्तुत करते हुए अकादमी के सचिव डॉ. जीतराम भट्ट ने कहा कि दिल्ली संस्कृत अकादमी द्वारा दिल्ली के विद्यालयों एवं महाविद्यालयों के युवा छात्र–छात्राओं को किसी विषय में अपनी विषय वस्तु को प्रस्तुत करने के लिये इस प्रकार की प्रतियोगिताओं का आयोजन करती है। अकादमी का प्रयास है कि संस्कृत की हर प्राचीन एवं नई विधाओं से संस्कृत के युवाओं को प्रतियोगिता के माध्यम से परिचय कराया जाय। संस्कृत को जन सामान्य तक पहुँचाने के लिये संस्कृत साहित्यों में निहित सभी विधाओं में प्रचीन काल से चली आई मान्यताओं को लोगों तक पहुँचाने का प्रयास किया जाता है। शलाका प्रतियोगिता प्राचीन समय चली आ रही है कई दिनों तक प्रचार प्रसार के बाद इस प्रतियोगिता में विशिष्ट विद्वान भाग लेते थे जो विद्वान विजेता होता था वह श्रेष्ठ माना जाता था। इस प्रतियोगिता में जहां भी शलाका पड़ी वहीं से प्रतिभागी को आगे पाठ को कठस्थ सुनाना होता है। जिस पर निर्णायक मण्डल द्वारा बीच बीच में प्रश्न पूछा जाता है। आज की इस प्रतियोगिता में सभी प्रतिभागी छात्र/छात्रायें अपने–अपने विद्यालयों एवं महाविद्यालयों का प्रतिनिधित्व कर पुरस्कार प्राप्त करेंगे। संस्कृत भाषा में रोजगार के अनेक अवसर हैं केवल इसकी व्यापकता के प्रति आपके मन में विश्वास होने की जरूरत है।

प्रतियोगिता में मध्यमा स्तर पर हितोपदेश पुस्तक को रखा गया था जबकि स्नातक स्तर पर "अभिज्ञानशाकुन्तलम्" पुस्तक को रखा गया था। प्रतियोगिता में मध्यमा स्तर पर 10 प्रतिभागी तथा स्नातक स्तर पर 16 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

सारस्वत अतिथि के रूप में डॉ. भास्करानन्द पाण्डेय ने कहा कि हमारी संस्कृति, सभ्यता, लोकव्यवहार, आदर्श शासनव्यवस्था, गणित, राजनीति, भूगर्भ विज्ञान, परमाणु विज्ञान, ज्योतिष, योग, दर्शन आदि समस्त विद्याएँ संस्कृत साहित्य में हैं। अतः हम कह सकते हैं कि यह विश्व की प्रथम भाषा है। आज संस्कृत को हमारी आवश्यकता नहीं, अपितु अपने मान–सम्मान, गौरव, अस्मिता, संस्कृति, सभ्यता आदि

की रक्षा हेतु हमें संस्कृत की अधिक आवश्यकता है। श्री झा ने कहा कि आज के आधुनिक युग में शिक्षा के क्षेत्र में अनेक आधुनिक विद्यालय, महाविद्यालय संस्कृत पढ़ने के लिये बच्चों को प्रोत्साहित कर रहे हैं।

इस अवसर पर पूर्व प्राचार्य श्री यतीन्द्र कुमार शर्मा ने कहा कि संस्कृत भाषा का विशाल क्षेत्र है मैं विश्व के अनेक देशों में संस्कृत का प्रतिनिधित्व कर चुकी हूँ। परन्तु मैंने पाया कि विदेशों में संस्कृत को भारतीयता की दृष्टि से नहीं पढ़ाया जाता है। इसके लिये हमें अपने स्तर पर प्रयास करने की जरूरत है। संस्कृत भाषा के विकास एवं इसकी उपयोगिता बनाये रखने के लिए सभी संस्कृत विद्यालय के छात्र एवं छात्रायें अपना महत्त्वपूर्ण योगदान देते आ रहे हैं।

कार्यक्रम श्री निवास संस्कृत महाविद्यालय इब्राहिमपुर के सान्निध्य में हुआ। इस अवसर पर अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

संस्कृत शलाका प्रतियोगिता वर्ष 2019–20

क्र.सं.	महाविद्यालय का नाम	प्रतिभागी का नाम	प्राप्तस्थान	पुरस्कार राशि
1.	ब्रह्मऋषि रामप्रपन्नाचार्य संस्कृत वेद वेदांग महाविद्यालय, राजघाट, नई दिल्ली–02	सत्यप्रकाश तिवारी	प्रथम	2000/–
2.	श्री निवास संस्कृत विद्यापीठम्, 174 रामानुजमार्ग, इब्राहिमपुर, दिल्ली–36	धर्मराज दुलाल	द्वितीय	1800/–
3.	श्री निवास संस्कृत विद्यापीठम् ,174 रामानुजमार्ग, इब्राहिमपुर, दिल्ली–36	दण्डपाणि आचार्य	तृतीय	1500/–
4.	श्री निवास संस्कृत विद्यापीठम्, 174 रामानुजमार्ग, इब्राहिमपुर, दिल्ली–36	पवन भण्डारी	चतुर्थ	1200/–
5.	ब्रह्मऋषि रामप्रपन्नाचार्य संस्कृत वेद वेदांग महाविद्यालय, राजघाट, नई दिल्ली–02	शिखर शुक्ला	प्रोत्साहन	500/–

संस्कृत शलाका प्रतियोगिता वर्ष 2019–20
(स्नातक–स्नातकोत्तर स्तरीय)

क्र.सं.	महाविद्यालय का नाम	प्रतिभागी का नाम	प्राप्तस्थान	पुरस्कार राशि
1.	श्री हनुमान संस्कृत महाविद्यालय, एफ–487/3, रघुबीरनगर, नई दिल्ली–27	अरविन्द	प्रथम	2000/–
2.	श्री रामऋषि संस्कृत महाविद्यालय, कराला, दिल्ली–81	प्रदीप कुमार	प्रोत्साहन	500/–

दिनांक 14.09.2019

व्याकरण के कारण संस्कृत भाषा को वैज्ञानिक भाषा माना जाता है
– डॉ. जीतराम भट्ट

संस्कृत भाषा अपने व्याकरणीय गुण के कारण ही विश्व की श्रेष्ठ भाषा है
–डॉ. जीतराम भट्ट

अष्टाध्यायी के सूत्रों में व्याकरण एवं भाषा शास्त्र सम्बन्धी अनेक महत्त्वपूर्ण तथ्यों का समावेश है। –डॉ. नोदनाथ मिश्र

संस्कृत साहित्य का इतिहास जितना प्राचीन है संस्कृत का व्याकरण भी उतना ही प्राचीन है। इस संस्कृत भाषा के साहित्य को सही स्वरूप एवं वैज्ञानिकता की दृष्टि देने के लिये संस्कृत के व्याकरण का महत्वपूर्ण योगदान है। पाणिनि द्वारा प्रतिपादित अष्टाध्यायी से पूर्व भी संस्कृत साहित्य में व्याकरण की अनेक पद्धतियों का प्रचलन रहा है। किन्तु पाणिनि और उनके द्वारा प्रणीत अष्टाध्यायी ही सबसे सही एवं सूत्रों पर आधारित होने के कारण संस्कृत साहित्य को सही दिशा देने का कार्य कर रही है। पाणिनि ने अष्टाध्यायी में 3995 सूत्रों की रचना कर संस्कृत भाषा के नियमों को व्यवस्थित किया जिसमें वाक्यों में पदों का संकलन, पदों का प्रकृति, प्रत्यय एवं पदों की रचना आदि प्रमुख तत्व हैं। इन नियमों की पूर्ति के लिये धातु पाठ, गण पाठ तथा उणादि सूत्र भी पाणिनि ने बनाये। संस्कृत भाषा को वैज्ञानिक स्वरूप बनाये रखने में संस्कृत व्याकरण का महत्त्वपूर्ण योगदान है। संस्कृत भाषा अपने व्याकरणीय गुण के कारण ही विश्व की श्रेष्ठ भाषा है।

ये विचार दिल्ली संस्कृत अकादमी द्वारा श्री मोतीनाथ संस्कृत महाविद्यालय रमेश नगर, नई दिल्ली में आयोजित संस्कृत विद्यालयों के शास्त्री एवं आचार्य में पढने वाले प्रतिभागियों के लिये आयोजित संस्कृत व्याकरण सूत्र अन्त्याक्षरी प्रतियोगिता समारोह के अवसर पर अकादमी के सचिव डॉ. जीतराम भट्ट ने व्यक्त किये। डॉ भट्ट ने आगे कहा कि संस्कृत भाषा का मूल ही व्याकरण है। जिसको संस्कृत का व्याकरण के सूत्र याद हैं और उन्हें किस प्रकार से प्रयोग में लाया जाता है आ जाता है उसके लिये संस्कृत एक वरदान हो जाती है। अष्टाध्यायी में लगभग चार हजार सूत्रों में महर्षि पाणिनि ने सम्पूर्ण संस्कृत भाषा के निर्माण की पद्धति बना ली। इन सूत्रों में व्याकरण एवं भाषा शास्त्र सम्बन्धी अनेक महत्वपूर्ण तथ्यों का समावेश है। इस प्रकार की प्रतियोगिता के माध्यम से प्रतिभागी छात्रों में संस्कृत व्याकरण के सूत्रों को याद करने की जिज्ञासा बनेगी।

इस अवसर पर भारत सरकार के पूर्व संस्कृत सलाहाकार डॉ. नोदनाथ मिश्र ने कहा कि संस्कृत भाषा के लिये संस्कृत भाषा का व्याकरण का अध्ययन करना आवश्यक है। महर्षि पाणिनि ने वैदिक संस्कृत और लौकिक संस्कृत दोनों के लिये अष्टाध्यायी की रचना की। संस्कृत भाषा के लिये महर्षि पाणिनि की अष्टाध्यायी बहुत महत्त्व किस प्रकार से शब्द एवं वाक्यों की रचना होती है ये इससे हमें मिलता है। संस्कृत

भाषा का साहित्य इनना सुदृढ़ है कि जिसके कारण ये एक वैज्ञानिक भाषा है।

इस अवसर पर विद्यालय के प्रबन्धक डॉ. महेश कुमार ने कहा कि श्रीमोती नाथ संस्कृत महाविद्यालय की स्थापना लाहोर में हुई थी स्वतंत्रता के बाद इसे दिल्ली में रमेश नगर में स्थापित किया गया। यह विद्यालय विगत कई वर्षों से संस्कृत के मेधावी छात्रों का निर्माण कर रहा है। आगे भी संस्कृत के लिये हम निरन्तर कार्य करते रहेंगे। संस्कृत में भारतीय संस्कृति का श्रोत है। संस्कृत भाषा रहेगी तो भारत रहेगा यदि संस्कृत नहीं रहेगी तो भारत की अपनी कोई पहचान नहीं रहेगी।

इस प्रतियोगिता में प्रथम स्थान श्रीविश्वनाथ संस्कृत महाविद्यालय के प्रधानाचार्य श्री गीताराम त्रिपाठी ने कहा कि प्रतियोगिता में कुल 20 प्रतिभागियों ने भाग लिया। प्रतिभागियों को प्रथम द्वितीय एवं तृतीय स्थान से पुरस्कृत किया गया। इस अवसर पर अनेक संस्कृत प्रेमी महानुभाव एवं क्षेत्र के गण्मान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

संस्कृत व्याकरण सूत्रान्त्याक्षरी प्रतियोगिता वर्ष 2019–20
(स्नातक स्तरीय)

क्र.सं.	महाविद्यालय का नाम	प्रतिभागी का नाम	प्राप्त स्थान	पुरस्कार राशि
1.	आर्ष कन्या गुरूकुल महाविद्यालय, नरेला, दिल्ली–40	सुमन	प्रथम	2000/–
2.	श्री हनुमान संस्कृत महाविद्यालय, एफ–487/3, रघुवीर नगर, नई दिल्ली–27	अरविन्द	द्वितीय	1800/–
3.	श्री हनुमान संस्कृत महाविद्यालय, एफ–487/3, रघुवीर नगर, नई दिल्ली–27	अनिरुद्ध पाण्डेय	तृतीय	1500/–
4.	श्री महावीर विश्व विद्यापीठ, ए–6, पश्चिम विहार, नई दिल्ली–63	विजय कुमार झा	चतुर्थ	1200/–
5.	श्री रामऋषि संस्कृत महाविद्यालय, कराला, दिल्ली–81	सन्दीप कुमार झा	पंचम	1000/–
6.	श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत विद्यापीठ, कटवारिया सराय, नई दिल्ली–16	आशीष चौबे	प्रोत्साहन–1	500/–
7.	श्री रामऋषि संस्कृत महाविद्यालय, कराला, दिल्ली–81	दीपांशु	प्रोत्साहन–2	500/–

दिनांक 26.09.2019

संस्कृत लेखन के लिये युवा वर्ग को आगे लाने की जरूरत है
– प्रो. रमेश कुमार पाण्डेय

आज के आधुनिक युग में संस्कृतज्ञों को अपडेट रखने की जरूरत है।
–डॉ. जीतराम भट्ट

साहित्य लेखन की अनेक विधायें हैं जिसमें निबन्ध लेखन भी महत्वपूर्ण है
– डॉ. कान्ता भाटिया

संस्कृत भाषा में विज्ञान का अपार ज्ञान निहित है। संस्कृत साहित्य में वर्णित ज्ञान की कोई सीमा नहीं है। विश्व की सबसे प्राचीन भाषा संस्कृत है। इस भाषा में साहित्य की सभी विधायें निहित हैं। संस्कृत साहित्य में निबन्ध लेखन आधुनिक काल से ही प्रारम्भ हुआ है। परन्तु संस्कृत लेखकों एवं साहित्यकारों ने संस्कृत भाषा में बहुत अच्छे निबन्धों को लिखा है। संस्कृत भाषा का विशाल क्षेत्र है विश्व के अनेक देशों में संस्कृत भाषा का पठन पाठन करवा रहे हैं। संस्कृत को विश्व स्तर की भाषा बनाने के लिये हमें और अधिक प्रयास करने की जरूरत है। आज के आधुनिक युग में शिक्षा के क्षेत्र में अनेक आधुनिक विद्यालय, महाविद्यालय संस्कृत पढ़ने के लिये बच्चों को प्रोत्साहित कर रहे हैं।

ये विचार दिल्ली संस्कृत अकादमी, दिल्ली सरकार द्वारा देशबन्धु महाविद्यालय कालका नई दिल्ली में दिल्ली विश्वविद्यालय के छात्र–छात्राओं के लिये आयोजित संस्कृत सद्यः निबन्ध लेखन प्रतियोगिता समारोह के मुख्य अतिथि श्री लाल बहादुर शास्त्री संस्कृत विद्यापीठ के कुलपति प्रो. रमेश कुमार पाण्डेय ने व्यक्त किये। प्रो. पाण्डेय ने आगे कहा कि जीवन के सभी क्षेत्रों में सफल विचार विमर्श के लिए हमें श्रेष्ठ निबन्ध लेखन की आवश्यकता होती है। निबन्ध किसी भी विषय पर लिखा जा सकता है। सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक वैज्ञानिक आदि सभी विषयों पर लिखा जा सकता है। निबन्ध गद्य लेखन की एक विद्या है लेकिन निबन्ध में जो शब्द होते हैं वे लेखक की व्यक्तित्व को प्रकाशित करने वाले होते हैं।

इस अवसर पर अकादमी के सचिव डॉ. जीतराम भट्ट ने कहा कि दिल्ली संस्कृत अकादमी प्रति वर्ष दिल्ली में संस्कृत भाषा के प्रचार प्रसार के लिये अनेक कार्यक्रमों का आयोजन करती है विशेष रूप से युवा प्रतिभागियों को किस प्रकार से संस्कृत से जोड़ा जाय इसी क्रम में आज यह प्रतियोगिता आयोजित की गई। महाविद्यालय स्तर पर संस्कृत निबन्ध लेखन का विशेष महत्व है। अच्छे निबन्ध लिखने के लिये कुछ जरूरी बातें होती हैं। एकसूत्रता निबन्ध का आधार है। उसमें विषय को क्रमानुसार और सुव्यवस्थित ढ़ंग से लिखने से है। किसी विषय पर निबन्ध लिखने के लिये अपने विचारों को सुव्यवस्थित रूप से आगे बढ़ाना होता है। लेखन से पूर्व विचारों की एक रूपरेखा तैयार कर लेनी होती है। निबन्ध सरल भाषा में लिखना होता है। निबन्ध में शब्दों की सीमा होती है तथा विचार की पुनरावृत्ति नहीं होनी चाहिये। इसी को ध्यान में रखते हुये इस प्रतियोगिता का आयोजन किया गया है। प्रतियोगिता में निबन्ध लेखन के लिये विषय प्रतिभागी को प्रतियोगिता स्थल पर ही दिया जाता है जिससे कि प्रतिभागी उस विषय पर अपने आप निबन्ध लिख सकें।

इस अवसर कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुये दिल्ली संस्कृत अकादमी की अध्यक्षा डॉ. कान्ता भाटिया ने कहा कि अकादमी द्वारा युवा वर्ग के लिये जो भी प्रतियोगितायें आयोजित की जाती हैं उनका सन्देश उसके व्यक्तित्व के निर्माण में काम आता है। ये प्रतियोगितायें केवल पुरस्कार तक ही सीमित नहीं हैं। निबन्ध लिखने की कला होती है कि आप उस विषय को अपने शब्दों में किस प्रकार से वर्णित करते हैं। समाज को कितना प्रभावित कर सकते हैं। निबन्ध लेखन में भाषा की शुद्धता पर विशेष ध्यान दिया जाता है। विराम चिन्हों का उचित प्रयोग किया जाना होता है।

कार्यक्रम में देशबन्धु महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. राजीव अग्रवाल ने कहा कि संस्कृत की गरिमा को बनाये रखने के लिये हर प्रकार के साहित्यों के साथ हर तकनीकी शिक्षा का प्रयोग कर युवा वर्ग को लाभान्वित किया जाना चाहिये। संस्कृत विषय में रोजगार के अनेक अवसर हैं आने वाले समय में हर विषय को पढने के लिये संस्कृत की आवश्यकता होगी।

कार्यक्रम देशबन्धु महाविद्यालय के संस्कृत विभाग के सान्निध्य में हुआ। जिसमें महाविद्यालय के संस्कृत विभाग के प्रभारी डॉ. आनन्द कुमार ने कार्यक्रम में आये प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत किया कार्यक्रम का संचालन संस्कृत विभाग के आचार्य डॉ. राजवीर शास्त्री ने किया।

इस अवसर पर डॉ. बलदेवानन्द सागर, डॉ. पुष्पा गुप्ता, डॉ. भास्करानन्द पाण्डेय सहित अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

संस्कृत सद्यः निबन्ध लेखन प्रतियोगिता वर्ष 2019–20

(शास्त्री / आचार्य / स्नातक / स्नातकोत्तर स्तरीय)

क्र.सं.	महाविद्यालय का नाम	प्रतिभागी का नाम	प्राप्त स्थान	पुरस्कार राशि
1.	श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत विद्यापीठ, कटवारिया सराय, नई दिल्ली–16	हरिशंकर कुमार	प्रथम	रू. 3000/–
2.	सेंट स्टीफन्स महाविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय परिसर, दिल्ली–07	ऋतम्भरा	द्वितीय	रू. 2500/–
3.	सेंट स्टीफन्स महाविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय परिसर, दिल्ली–07	अन्वीक्षा	तृतीय	रू. 2000/–
4.	श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत विद्यापीठ, कटवारिया सराय, नई दिल्ली–16	आशीष शर्मा	चतुर्थ	रू. 1500/–
5.	मिराण्डा हाउस महाविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय परिसर, दिल्ली–07	अर्चना वर्मा	पंचम	रू. 1000/–
6.	किरोड़ीमल महाविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय परिसर, दिल्ली–07	केशव राम मौर्य	प्रोत्साहन–1	रू. 500/–
7.	श्री वेंकटेश्वर महाविद्यालय, बेनितो जुआरेज मार्ग, धौला कुआँ, नई दिल्ली–21	सौरभ	प्रोत्साहन–2	रू. 500/–

8.	श्री वैंकटेश्वर महाविद्यालय, बेनितो जुआरेज मार्ग, धौला कुआँ, नई दिल्ली–21	पुष्पराज द्विवेदी	प्रोत्साहन–3	रू. 500/–
9.	जाकिर हुसैन महाविद्यालय, जवाहर लाल नेहरू मार्ग, नई दिल्ली–01	अनिल चन्दन के	प्रोत्साहन–4	रू. 500/–

दिनांक 28.09.2019

भाषा व्याकरण के कारण ही परिस्कृत होती है – डॉ. जीतराम भट्ट

संस्कृत भाषा व्याकरणीय गुण के कारण ही वैज्ञानिक एवं विश्व की श्रेष्ठ भाषा है

–डॉ. जीतराम भट्ट

अष्टाध्यायी के सूत्रों में व्याकरण एवं भाषा शास्त्र सम्बन्धी अनेक महत्वपूर्ण तथ्यों का समावेश है। – डॉ. रामसलाई द्विवेदी

संस्कृत भाषा के साहित्य को सही स्वरूप देने एवं वैज्ञानिकता प्रदान करने में संस्कृत व्याकरण का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। विश्व की भाषाओं में सबसे सुदृढ व्याकरण संस्कृत भाषा का ही है। महर्षि पाणिनि द्वारा रचित संस्कृत व्याकरण के कारण ही प्राचीन काल से चली आ रही संस्कृत भाषा अपने मूल स्वरूप में चली आ रही है। पाणिनि से पूर्व भी संस्कृत साहित्य में व्याकरण की अनेक पद्धितियाँ का प्रचलन था। किन्तु पाणिनि और उनके द्वारा प्रणीत अष्टाध्यायी ही इसका केन्द्र बिन्दु है। पाणिन ने अष्टाध्यायी में 3995 सूत्रों की रचना कर संस्कृत भाषा के नियमों को व्यवस्थित किया जिसमें वाक्यों में पदों का संकलन, पदों का प्रकृति, प्रत्यय एवं पदों की रचना आदि प्रमुख तत्व हैं। इन नियमों की पूर्ति के लिये धातु पाठ, गण पाठ तथा उणादि सूत्र भी पाणिनि ने बनाये। संस्कृत भाषा को वैज्ञानिक स्वरूप बनाये रखने में संस्कृत व्याकरण का महत्वपूर्ण योगदान है। संस्कृत भाषा अपने व्याकरणीय गुणों के कारण ही विश्व की श्रेष्ठ भाषा है।

ये विचार दिल्ली संस्कृत अकादमी द्वारा ब्रह्मऋषि रामप्रपन्नाचार्य संस्कृत वेद वेदांग महाविद्यालय, राजघाट, नई दिल्ली में आयोजित संस्कृत विद्यालयों के "मध्यमा स्तरीय" संस्कृत व्याकरण सूत्र अन्त्याक्षरी प्रतियोगिता समारोह के मुख्य अतिथि श्री लाल बहादुर शास्त्री संस्कृत विद्यापीठ के व्याकरण विभाग के आचार्य प्रो. रामसलाई द्विवेदी ने व्यक्त किये।

इस अवसर पर संस्कृत अकादमी के सचिव डॉ. जीतराम भट्ट ने कहा कि संस्कृत भाषा संस्कृत के व्याकरण के कारण ही परिस्कृत है। संस्कृत भाषा को जानने के लिये संस्कृत भाषा के व्याकरण का अध्ययन करना आवश्यक है। महर्षि पाणिनि ने वैदिक संस्कृत और लौकिक संस्कृत दोनों के लिये अष्टाध्यायी की रचना की। अष्टाध्यायी में लगभग चार हजार सूत्रों में महर्षि पाणिनि ने सम्पूर्ण संस्कृत भाषा के निर्माण की पद्धति बना ली। इन सूत्रों में व्याकरण एवं भाषा शास्त्र सम्बन्धी अनेक महत्त्वपूर्ण तथ्यों का समावेश है। इस प्रकार की प्रतियोगिता के माध्यम से प्रतिभागी छात्रों में संस्कृत व्याकरण के सूत्रों को याद करने की

इस अवसर पर ब्रह्मऋषि रामप्रपन्नाचार्य संस्कृत वेद वेदांग महाविद्यालय, राजघाट की पूर्व प्राचार्या श्रीमती सुधा शर्मा ने कहा कि संस्कृत भाषा के लिये महर्षि पाणिनि की अष्टाध्यायी का बहुत महत्त्व है। किस प्रकार से शब्द एवं वाक्यों की रचना होती है ये इससे हमें मिलता है। संस्कृत भाषा का साहित्य इतना सुदृढ़ है कि जिसके कारण ये एक वैज्ञानिक भाषा है। पाणिनि व्याकरण के अतिरिक्त संस्कृत के जो अन्य व्याकरण इस समय उपलब्ध हैं वे सभी पाणिनि शैली से प्रभावित हैं। पाणिनि व्याकरण पर आज अनेक भाष्य लिखे गये हैं। संस्कृत का स्वरूप नियमबद्ध होने में संस्कृत व्याकरण का ही योगदान है।

प्रतियोगिता में 30 प्रतिभागियों ने भाग लिया। प्रतिभागियों को पुरस्कृत किया जायेगा। इस अवसर पर अनेक संस्कृत प्रेमी महानुभाव एवं क्षेत्र के गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

संस्कृत व्याकरण सूत्रान्त्याक्षरी प्रतियोगिता वर्ष 2019–20
(मध्यमा स्तरीय)

क्र.सं.	महाविद्यालय का नाम	प्रतिभागी का नाम	प्राप्त स्थान	पुरस्कार राशि
1.	श्रीनिवास संस्कृत विद्यापीठम्, 174 रामानुज मार्ग, इब्राहिमपुर, दिल्ली–36	धर्मराज दुलाल	प्रथम	2000/–
2.	श्रीनिवास संस्कृत विद्यापीठम्, 174 रामानुज मार्ग, इब्राहिमपुर, दिल्ली–36	दण्डपाणि आचार्य	द्वितीय	1800/–
3.	श्रीनिवास संस्कृत विद्यापीठम्, 174 रामानुज मार्ग, इब्राहिमपुर, दिल्ली–36	बालकृष्ण आचार्य	तृतीय	1500/–
4.	श्री हनुमान संस्कृत महाविद्यालय, एफ–487/3, रघुवीर नगर, नई दिल्ली–27	नन्द किशोर	चतुर्थ	1200/–
5.	श्री विश्वनाथ संस्कृत महाविद्यालय, बेला रोड, सिविल लाईन्स, दिल्ली–54	राजन अधिकारी	पंचम	1000/–
6.	श्री मोतीनाथ संस्कृत महाविद्यालय, रमेशनगर, नई दिल्ली–15	दीपचन्द्र कोटिया	प्रोत्साहन	500/–
7.	ब्रह्म ऋषि रामप्रपन्नाचार्य संस्कृत वेद वेदांग महाविद्यालय, राजघाट, नई दिल्ली–02	सत्यप्रकाश तिवारी	प्रोत्साहन	500/–
8.	श्री मोतीनाथ संस्कृत महाविद्यालय, रमेशनगर, नई दिल्ली–15	अमन चमोली	प्रोत्साहन	500/–

संस्कृत वार्ता प्रतियोगिता वर्ष 2019–20
(शास्त्री / आचार्य / स्नातक / स्नातकोत्तर स्तरीय)

क्र.सं.	महाविद्यालय का नाम	प्रतिभागी का नाम	प्राप्त स्थान	पुरस्कार राशि
1.	सेंट स्टीफन्स महाविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय परिसर, दिल्ली–07	ऋतम्भरा	प्रथम	रू. 2000/–
2.	सेंट स्टीफन्स महाविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय परिसर, दिल्ली–07	विश्वम्भरा	द्वितीय	रू. 1800/–
3.	मिराण्डा हाउस महाविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय परिसर, दिल्ली–07	अर्चना वर्मा	तृतीय	रू. 1500/–
4.	किरोड़ीमल महाविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय परिसर, दिल्ली–07	मुस्कान	चतुर्थ	रू. 1200/–
5.	गार्गी महाविद्यालय, सिरिफोर्ट मार्ग, नई दिल्ली–49	ज्योति	प्रोत्साहन–1	रू. 500/–

दिनांक 17.10.2019

संगीत में निहित होती है संस्कृत साहित्य की आत्मा। –डॉ. जीतराम भट्ट
संस्कृत को आज विश्व धरोहर के रूप में माना जाता है। –डॉ. जीतराम भट्ट
अकादमी संस्कृत के युवा वर्ग को हर स्तर पर प्रोत्साहान देने के लिये निरन्तर प्रयासरत है।–डॉ. साधना शर्मा

संस्कृत साहित्य की आत्मा संगीत में निहित होती है। संगीत से साहित्य को प्राण मिलता है। वर्तमान समय में संगीत के माध्यम से रोजगार के नये क्षेत्र जुड़ रहे हैं। इस प्रकार की संगीतमय प्रतियोगिताओं के माध्यम से संस्कृत के छात्र–छात्राओं को रोजगार से जोडने में मदद मिलेगी। जिससे युवा वर्ग को रोजगार के नये अवसर मिलेगें। संस्कृत भाषा अनेकता में एकता का सन्देश सदियों से देती आयी है। यह भाषा मानव सभ्यता के प्राचीनतम इतिहास से जुड़ी है। संस्कृत के नीति शास्त्र, अर्थशास्त्र आदि साहित्यों का आधुनिक कोई भी विषय मुकाबला नहीं कर सकता है। हमें संस्कृत भाषा में निहित ज्ञान विज्ञान को आम लोगों के साथ वैज्ञानिकों के साथ भी समन्वय बनाना होगा।

ये विचार दिल्ली संस्कृत अकादमी दिल्ली सरकार द्वारा श्यामा प्रसाद मुखर्जी महाविद्यालय पंजाबी बाग नई दिल्ली में स्नातक स्तरीय "एकल श्लोक संगीत प्रतियोगिता समारोह" का शुभारम्भ करते हुए महाविद्यालय की प्राचार्या डॉ. साधना शर्मा ने व्यक्त किये। डॉ. साधना शर्मा ने आगे कहा कि दिल्ली संस्कृत

अकादमी संस्कृत के युवा वर्ग को हर स्तर पर प्रोत्सान देने के लिये निरन्ता प्रयासरत है। आप लोग दिल्ली संस्कृत अकादनी की वैब साईट या आन्य किसी भी माध्यम से अकादमी की गतिविधियों की जानकारी ले सकते हैं। अकादमी व्यक्तिगत रूप से दिल्ली के युवा वर्ग को संस्कृत से जोडने के लिये अनेक संस्कृत विषयक कार्यक्रमों का आयोजन करती आ रही है। प्रति वर्ष निर्धारित कार्यक्रमों के अलावा नये कार्यक्रमों को भी शामिल करती है।

इस अवसर पर अकादमी के सचिव डॉ. जीतराम भट्ट ने कहा कि संस्कृत आज विश्व की धरोहर ही नही ज्ञान विज्ञान का आधार है। संस्कृत के सभी विषयों पर विश्व में अनेक शोध कार्य चल रहे हैं। सभी इस बात को मानते हैं कि मानवीय दर्शन का विज्ञान के साथ समावेश जरूरी है। डॉ. भट्ट ने आगे कहा कि पिछले वर्ष से इस वर्ष नियमों में कुछ परिवर्तन किया गया है जिससे अधिक से अधिक युवा वर्ग संस्कृत से जुड सके। इसी प्रकार अकादमी इस वर्ष दिल्ली के युवा प्रतिभाशाली प्रतिभागियों को अपनी प्रतिभा दिखाने के लिये दिल्ली में अनेक प्रकार की संस्कृत विषयक प्रतियोगिताओं का आयोजन कर रही है इसी क्रम में आज महाविद्यालयीय स्तर के प्रतिभागियों के लिये "एकल श्लोक संगीत प्रतियोगिता" का आयोजन किया गया है। दिल्ली के लगभग सभी महाविद्यालय के 55 छात्र–छात्राओं ने आज इस प्रतियोगिता में भाग लेकर संस्कृत के भविष्य को उज्ज्वल बनाने का प्रयास किया है।

इस अवसर पर राष्ट्रपति सम्मान से सम्मानित संस्कृत विद्वान डॉ. बलदेवानन्द सागर ने कहा कि दिल्ली विश्वविद्यालय के इस महाविद्यालय से शिक्षा एवं अन्य क्षेत्र में अनेक उत्कृष्ट विद्वान एवं विदुषियां निकली हैं। संस्कृत एवं अन्य विषयों के क्षेत्र में भी इस महाविद्यालय की अनेक विद्वानों एवं विदुषियों ने अपना योगदान दिया है और आज भी दे रहे हैं आगे भी देगीं। इस महाविद्यालय के कई विभाग दिल्ली विश्वविद्यालय के उच्चकोटि के विभागों मं से प्रमुख हैं।

इस अवसर पर संस्कृत विभाग की पूर्व आचार्या डॉ. शशि तिवारी ने कहा कि संस्कृत भाषा के विकास एवं इसकी उपयोगिता बनाये रखने के लिए सभी महाविद्यालय अपना महत्त्वपूर्ण योगदान देते आ रहे हैं। हमारी संस्कृति, सभ्यता, लोकव्यवहार, आदर्श शासन व्यवस्था, गणित, राजनीति, भूगर्भ विज्ञान, परमाणु विज्ञान, ज्योतिष, योग, दर्शन आदि समस्त विद्याएँ संस्कृत साहित्य में हैं।

इस अवसर पर कार्यक्रम के संयोजक संस्कृत विभाग के प्रभारी डॉ. अमित कुमार शर्मा ने कहा कि संस्कृत विश्व की प्रथम भाषा है। जब विश्व में कोई पढना लिखना ही नही जानता था उस समय भारत में वेद लिख दिये गये थे। आज भारतीय ज्ञान विज्ञान एवं दर्शन के लिये और भारतीय मान–सम्मान, गौरव, अस्मिता, संस्कृति, सभ्यता आदि की रक्षा हेतु हमें संस्कृत की आवश्यकता है।

कार्यक्रम श्यामा प्रसाद मुखर्जी महाविद्यालय के संस्कृत विभाग के सानिध्य में हुआ। जिसमें विभाग के सभी आचार्यों का अथक प्रयास रहा। कार्यक्रम के अन्त में सभी विजेता प्रतिभागियों की घोषणा की गई। प्रतिभागियों का पुरस्कार एवं अन्य सम्मान आगामी समय में एक भव्य कार्यक्रम आयोजित किया जायेगा।

इस अवसर पर अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे ।

संस्कृत एकल श्लोक संगीत प्रतियोगिता वर्ष 2019–20
(शास्त्री / आचार्य / स्नातक / स्नातकोत्तर स्तरीय)

क्र.सं.	महाविद्यालय का नाम	प्रतिभागी का नाम	प्राप्त स्थान	पुरस्कार राशि
1.	रामजस महाविद्यालय, मौरिस नगर, दिल्ली विश्वविद्यालय परिसर, दिल्ली–07	शुभम शर्मा	प्रथम	रू. 2000 / –
2.	देशबन्धु महाविद्यालय, ब्लॉक–एच., कालकाजी, नई दिल्ली–19	अक्षय कुमार मिश्रा	द्वितीय	रू. 1800 / –
3.	श्यामा प्रसाद मुखर्जी महाविद्यालय, पश्चिमी पंजाबी बाग, दिल्ली–26	हिमांशी	तृतीय	रू. 1500 / –
4.	रामजस महाविद्यालय, मौरिस नगर, दिल्ली विश्वविद्यालय परिसर, दिल्ली–07	नीतीश भारद्वाज	चतुर्थ	रू. 1200 / –
5.	राजधानी महाविद्यालय, महात्मा गाँधी मार्ग, राजा गार्डन, नई दिल्ली–15	मानसी बेदी	पंचम	रू. 1000 / –
6.	श्री अरविन्दो महाविद्यालय, मालवीय नगर, नई दिल्ली–17	मोहम्मद ओवेश	प्रोत्साहन–1	रू. 500 / –
7.	राजधानी महाविद्यालय, महात्मा गाँधी मार्ग, राजा गार्डन, नई दिल्ली–15	वृषभ गिरी	प्रोत्साहन–2	रू. 500 / –
8.	सेंट स्टीफन्स महाविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय परिसर, दिल्ली–07	ऋचा	प्रोत्साहन–3	रू. 500 / –
9.	कालिन्दी महाविद्यालय, पूर्वी पटेल नगर, नई दिल्ली–08	स्नेहा धोरीई	प्रोत्साहन–4	रू. 500 / –
10.	श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत विद्यापीठ, कटवारिया सराय, नई दिल्ली–16	योगेश्वर भट्टराई	प्रोत्साहन–5	रू. 500 / –
11.	श्यामा प्रसाद मुखर्जी महाविद्यालय, पश्चिमी पंजाबी बाग, दिल्ली–26	मंजू	प्रोत्साहन–6	रू. 500 / –
12.	लेडी श्रीराम महिला महाविद्यालय, पश्चिमी पंजाबी बाग, दिल्ली–26	ज्योति	प्रोत्साहन–7	रू. 500 / –
13.	लक्ष्मीबाई महाविद्यालय, अशोक विहार फेज–3, दिल्ली–52	ऋचा	प्रोत्साहन–8	रू. 500 / –

दिनांक 19.10.2019

संस्कृत भाषा में निहित वेद विश्व के श्रेष्ठ साहित्य है – स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती वेदमंत्रों को याद करने के लिये प्रतियोगिता सबसे उत्तम माध्यम है

– डॉ. जीतराम भट्ट

वेद विश्व के पहले साहित्य ग्रन्थ हैं। वेदो का वृहद इतिहास है वेद कई पीढियो तक श्रुति के रूप में एक पीढी से दूसरी पीढी तक चलते रहे। इस परम्परा में वेद कई पीढियों तक चलते रहे। वेद श्रुति के आधार पर अपने मूल स्वरूप में चलने के बाद लिखित रूप में हमारे समक्ष हैं। वेदों में निहित सभी मंत्र एक वैज्ञानिक सूत्र की तरह कार्य करते हैं। जिनमें विज्ञान पूर्ण रूप से निहित है।

ये विचार दिल्ली संस्कृत अकादमी द्वारा श्रीमद्दयानन्द वेदार्ष महाविद्यालय गौतम नगर नई दिल्ली में आयोजित वेदमंत्र अन्त्याक्षरी प्रतियोगिता समारोह के मुख्य अतिथि श्रीमद्दयानन्द वेदार्ष महाविद्यालय के संस्थापक आचार्यश्री स्वामी प्रवणानन्द सरस्वती जी ने व्यक्त किये। स्वामी प्रवणानन्द जी ने कहा कि वेदों के माध्यम से विज्ञान में शोध हो रहा है। हमे वेदों पर इतना शोध होना चाहिये कि कोई भी इण्टर नेशनल कम्पनी आ कर हमारे वेद के विद्वानों को अपनी कम्पनी में रोजगार दे। ये समय बहुत जल्दी ही आने वाला है। वेदों में निहित विज्ञान को समझने के लिये सभी वेदों का सही ज्ञान होना आवश्यक है।

इस अवसर पर अकादमी के सचिव डॉ. जीतराम भट्ट ने कहा कि संस्कृत भाषा के सम्यग् ज्ञान लिये वेदों का अध्ययन आवश्यक है। वेदों की शिक्षा सामान्य विद्यालयों के छात्रों के लिये भी हर कक्षा में किया जाना चाहिये। चारों वेद अपने आप में विशिष्ट ज्ञान के भण्डर से निहित है। विश्व में कोई भी ज्ञान ऐसा नहीं है जो वेदों में वर्णित न हो। वेद मंत्रों मे विज्ञान के अनेक सूत्रों से सम्बन्धी महत्वपूर्ण तथ्यों का समावेश है। इस प्रकार की प्रतियोगिता के माध्यम से प्रतिभागी छात्रों में वेदों के मंत्रों को याद करने की जिज्ञासा बनेगी। अकादमी द्वारा वेदों को छात्रों से जोडने के लिये ये प्रतियोगिता आयोजित की गई। इस प्रतियोगिता में मध्यमा स्तर एवं महाविद्यालय स्तार पर इस प्रकार दो स्तरों पर अलग अलग आयोजित की गई। मध्यमा स्तर पर 12 कक्षा तक के छात्रों के लिये तथा स्नातक स्तर पर बी.ए एवं एम.ए के छात्रों के लिये आयोजित की गई। भारतीय संस्कृति का प्रारम्भ वेदों से ही हुआ है। वेदों में भारतीय संस्कृति के सभी पहलू निहित हैं। दिल्ली संस्कृत अकादमी संस्कृत भाषा में निहित सभी विषयों को जन सामान्य के बीच ले जाने के लिये अनेक कार्यक्रमों का आयोजन करती है जिसमें लोगों की सहभागिता मिलती रहती है। अकादमी दिल्ली में संस्कृत को लोकप्रिय बनाने के लिये निरन्तर प्रयास करती रहेगी।

इस अवसर पर श्री लाल बहादुर शास्त्री संस्कृत विद्यापीठ के वेद विभाग के आचार्या प्रो. गोपाल प्रसाद शर्मा ने कहा कि संस्कृत भाषा के प्रचार प्रसार एवं संस्कृत भाषा को सजीव रखने एवं वेदों के लिये समर्पित यह गुरुकुल कई वर्षों से दिल्ली एवं दिल्ली के अतिरिक्त अन्य प्रदेशो में भी संस्कृत गुरुकुलों का संचालन कर रहा है। संस्कृत भाषा की उपयोगिता हर क्षेत्र में है। इसमें निहित ज्ञान विज्ञान का उपयोग सभी लोग कर रहे हैं।

इस अवसर पर श्री लाल बहादुर शास्त्री संस्कृत विद्यापीठ के आचार्य डॉ. रामानुज उपाध्याय ने प्रतियोगिता में आये सभी प्रतिभागियों के प्रति स्नेह व्यक्त किया और उनकी सफलता की कामना की।

इस अवसर पर अनेक संस्कृत प्रेमी महानुभाव एवं गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

संस्कृत वेदमन्त्रान्त्याक्षरी प्रतियोगिता वर्ष 2019–20

(मध्यमा स्तरीय)

क्र.सं.	महाविद्यालय का नाम	प्रतिभागी का नाम	प्राप्तस्थान	पुरस्कार राशि
1.	श्रीमद् दयानन्द वेदार्ष महाविद्यालय, 119 गौतम नगर, नई दिल्ली–110049	रोबिन	प्रथम	2000/–
2.	श्री हनुमान संस्कृत महाविद्यालय, एफ–487/3, रघुबीरनगर, नई दिल्ली–27	साहिल शर्मा	द्वितीय	1800/–
3.	श्री मोतीनाथ संस्कृत महाविद्यालय, रमेशनगर, नई दिल्ली–15	दीपचन्द कोटिया	तृतीय	1500/–
4.	श्री हनुमान संस्कृत महाविद्यालय, एफ–487/3, रघुबीरनगर, नई दिल्ली–27	अभिषेक मिश्र	चतुर्थ	1200/–
5.	श्री हनुमान संस्कृत महाविद्यालय, एफ–487/3, रघुबीरनगर, नई दिल्ली–27	मनीष मिश्रा	प्रोत्साहन	500/–

संस्कृत वेदमन्त्रान्त्याक्षरी प्रतियोगिता वर्ष 2019–20

(स्नातक–स्नातकोत्तर स्तरीय)

क्र.सं.	महाविद्यालय का नाम	प्रतिभागी का नाम	प्राप्तस्थान	पुरस्कार राशि
1.	श्री हनुमान संस्कृत महाविद्यालय, एफ–487/3, रघुबीरनगर, नई दिल्ली–27	अरविन्द	प्रथम	2000/–
2.	शारदा देवी संस्कृत विद्यापीठ, तिराहा बेरमखाँ चौक, दरियागंज, नई दिल्ली–02	हरिओम शुक्ल	द्वितीय	1800/–
3.	श्री हनुमान संस्कृत महाविद्यालय, एफ–487/3, रघुबीरनगर, नई दिल्ली–27	अनिरूद्ध	तृतीय	1500/–
4.	श्रीमद् दयानन्द वेदार्ष महाविद्यालय, 119 गौतम नगर, नई दिल्ली–110049	राजेश कुमार	चतुर्थ	1200/–
5.	शारदा देवी संस्कृत विद्यापीठ, तिराहा बेरमखाँ चौक, दरियागंज, नई दिल्ली–02	मोहित	प्रोत्साहन	500/–

दिनांक 21.10.2019

22 अक्टूबर से 24 अक्टूबर तक सेण्ट्रल पार्क में आयोजित किया जा रहा है "संस्कृत उत्सव"

दिल्ली संस्कृत अकादमी दिल्ली सरकार द्वारा दिल्ली के सेण्ट्रल पार्क में दिनांक 22 से 24 अक्टूबर 2019 को "संस्कृत उत्सव का आयोजन किया जा रहा है। इस विषय में अकादमी के सचिव डॉ0 जीतराम भट्ट ने एक प्रैस विज्ञप्ति जारी की जिसमें उत्सव के बारे में विस्तार से बताया गया। दिल्ली के सेण्ट्रल पार्क में 3 दिनों तक विभिन्न संस्कृत विषय सांस्कृतिक कार्यक्रमों के अतिरिक्त अन्य जन सामान्य गतिविधियों का आयोजन किया जा रहा है। जिसमें विभिन्न प्रकार की प्रदर्शिनियों को लगाया जा रहा है। प्रतिदिन आम लोगों के लिये अपराह्ण 4.00 बजे विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया जा रहा है जिसमें संस्कृत में काव्वाली, संस्कृत नुक्कड़ नाटकों का मंचन आदि है। "संस्कृत उत्सव" में दिल्ली के सेण्ट्रल पार्क को संस्कृतमय बनाया जा रहा है। सायं 6.00 बजे से मुख्य सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया जायेगा। कार्यक्रमों की प्रस्तुति इस प्रकार से है। संस्कृत उत्सव का उदघाट्न दिल्ली के उपमुख्यमंत्री श्री मनीष सिसोदिया द्वार दिनांक 22.10.2019 को सायं 6.00 बजे किया जायेगा।

संस्कृतिक कार्यक्रम का विवरण दिनांक 22.10.2019

(1) स्वरतृष्णा एवं पुष्पांजलि ग्रुप के कलाकारों द्वारा संस्कृत में हरियाणवी, राजस्थानी, गढ़वाली आदि लोकगीतों की प्रस्तुति । — 6.30 से 07.30 तक

(2) श्री शुभम् आर्य द्वारा संस्कृत गीतों की प्रस्तुति बैण्ड के माध्यम से(हिन्दी फिल्मों पर आधारित) — 7.30. से 08.15 तक

(3) डॉ0 ऋषिराज पाठक द्वारा संस्कृत गीतों की प्रस्तुति बैण्ड के माध्यम से (विभिन्न संस्कृत क्लासिकल गीतों) — 7.17. से 09.00 तक

सांस्कृतिक कार्यक्रम संस्कृत संगीत एवं नृत्य कार्यक्रम

(1) संस्कृत संगीत एवं नृत्य की प्रस्तुति श्री कुलदीप जोशी एवं ग्रुप – 06.15 से 07.00

(2) संस्कृत संगीत एवं नृत्य श्री आनन्द जोशी श्री कुलदीप जोशी एवं ग्रुप –07.00 से 07.30

दिनांक 23.10.2029 को विभिन्न छात्र–छात्राओं
द्वारा संस्कृत संगीत नृत्य की प्रस्तुतियां

(क) जामिया मीलिया विश्वविद्यालय – ऋत्विका (3 मिनिट)

(ख) सेण्टस्टीफेन्स – आकृति (3 मिनिट)

(ग) सेण्टस्टीफेन्स – कोरियोग्राफी सोसायटी (11 मिनिट)

(घ) सेण्टस्टीफेन्स – कोरियोग्राफी सोसायटी (3 मिनिट)

(कृ) हिन्दू महाविद्यालय – रवि (10 मिनिट)

(च) हिन्दू महाविद्यालय – आनन्द (15मिनिट)

(कृ) हिन्दू महाविद्यालय – रवि (10 मिनिट)

(च) हिन्दू महाविद्यालय – आनन्द(15मिनिट)

(छ) मिराण्डा हाउस महाविद्यालय – रवि (10–11 मिनिट)

(ज) मिराण्डा हाउस डान्स सोसायटी –मृदंग(10 मिनिट)

(झ) जानकी देवी –लेडी हार्डिंग –संस्कृति एवं प्रतिभा

दिनांक 24.10.2019 सांस्कृतिक कार्यक्रम

संस्कृत नृत्यनाटिका "पाशुपत्विजयम्" – 06.30 से 08.00 बजे तक

की प्रस्तुति कथक नृत्य के माध्यम से।

अकादमी द्वारा दिल्ली को संस्कृतमय बनाने का प्रयास किया जा रहा है आप लोगों की उपस्थित संस्कृत के प्रचार प्रार में योगदान देगी ।

दिनांक 22.10.2019

राष्ट्र की धरोहर है हमारी संस्कृत भाषा – डॉ० कान्ता भाटिया
सेण्ट्रल पार्क में "संस्कृत उत्सव" में सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजित

–डॉ० जीतराम भट्ट

कला, संस्कृति एवं भाषा ही हमारी विशिष्ट पहचान है। हम पाश्चात्य संस्कृति को अपना कर अपनी संस्कृति को भूल जाये यह नहीं होना चाहिये। संस्कृत भाषा का साहित्य अनेक अमूल्य ग्रन्थों का सागर है। इतना समृद्ध साहित्य किसी भी दूसरी भाषा का नहीं है और न ही किसी अन्य भाषा की परम्परा ऐसी अविच्छिन्न प्रवाह के रूप में इतने दीर्घ काल तक चल पाई है। संस्कृत भाषा अति प्राचीन होने पर भी प्रवीन एवं आधुनिक भाषाओं में सबसे श्रेष्ठ भाषा है। आज से दिल्ली सरकार की ओर से देश के प्रसिद्ध पार्क सेण्ट्रल पार्क में 3 दिनों तक "संस्कृत उत्सव" का आयोजन इसलिए किया जा रहा है कि हमारे देश की हजारों सालों पुरानी विरासत को लोगों तक पहुँचाया जा सके। देश में सभी भाषाओं का विकास हो सभी भाषायें आगे बढ़े, यही हमारा प्रयास है। दिल्ली में सभी भाषाओं के विकास के लिये सरकार की ओर से अनेक अकादमियों के माध्यम से भाषाओं का विकास हो रहा है। इसी क्रम में आज दिल्ली संस्कृत अकादमी द्वारा संस्कृत के विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया जा रहा है।

ये विचार दिल्ली संस्कृत अकादमी दिल्ली सरकार द्वारा कर्नाट प्लेस के सेण्ट्रल पार्क में आयोजित संस्कृत उत्सव का शुभारम्भ करते हुए अकादमी की उपाध्यक्षा डॉ. कान्ता भाटिया ने व्यक्त किये। डॉ. भाटिया ने आगे कहा कि आज के भौतिकवादी युग में संस्कृत की प्रासगिता अधिक है हम अपने सामाजिक परिवेश से दूर हो रहे हैं इसलिए संस्कृत साहित्यकारों एवं संस्कृत के प्रति अनुराग रखने वालों को संस्कृत भाषा निहित अपने ज्ञान–विज्ञान को लोगों तक पहुँचाने का प्रयास करना चाहिये। दिल्ली सरकार

द्वारा दिल्ली के सेण्ट्रल पार्क में आयोजित किये जा रहे इस तीन दिनों के संस्कृत उत्सव में संस्कृत को लोकप्रिय बनाने के लिये अनेक प्रकार के संस्कृत विषयक सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया जा रहा है। इस उत्सव में हरियाणवी, राजस्थानी गढ़वाली सहित अनेक प्रांतीय भाषाओं के प्रसिद्ध लोकगीतों की संस्कृत भाषा में प्रस्तुतियाँ की जा रही है। जहां एक ओर विद्यालयीय एवं महाविद्यालयीय स्तर पर युवा प्रतिभागियों द्वारा संस्कृत गीतों एवं संस्कृत नृत्यों की प्रस्तुतिया की जा रही हैं। वहीं दूसरी ओर बैंगलूरु से आये श्री एम.बी. नगराज के निर्देशन में संस्कृत नृत्य नाटिका "पाशुपतविजयम्" का मंचन कथक नृत्य के माध्यम से किया जायेगा।

कार्यक्रम की प्रस्तावना प्रस्तुत करते हुए दिल्ली संस्कृत अकादमी के सचिव डॉ. जीतराम भट्ट ने कहा कि माननीय मुख्यमंत्री एवं उपमुख्यमंत्री की प्रेरणा से अकादमी इस वर्ष दिल्ली में पहली बार दिल्ली के सेण्ट्रल पार्क में दिनांक 22 से 24 अक्टबर 2019 को "संस्कृत उत्सव" का आयोजन कर रही है। दिल्ली के सेण्ट्रल पार्क में 3 दिनों तक विभिन्न संस्कृत विषय सांस्कृतिक कार्यक्रमों के अतिरिक्त अन्य जन–सामान्य गतिविधियों का आयोजन किया जा रहा है। जिसमें विभिन्न प्रकार की प्रदर्शिनियों को लगाया जा रहा है। प्रतिदिन आम लोगों के लिये अपराहण 4.00 बजे से विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया जा रहा है जिसमें संस्कृत में काव्याली, संस्कृत नुक्कड नाटकों का मंचन आदि सामिल है। "संस्कृत उत्सव" में दिल्ली के सेण्ट्रल पार्क को संस्कृतमय बनाया जा रहा है। सायं 6.00 बजे से मुख्य सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया जायेगा। जिसमें आज 22.10.2019 को स्वरतृष्णा एवं पुष्पांजलि ग्रुप के माध्यम से विभिन्न क्षेत्रीय भाषाओं के प्रसिद्ध लोकगीतों की प्रस्तुतियां संस्कृत में की गई। इसके साथ श्री शुभम आर्य द्वारा बैण्ड के माध्यम से फिल्मी गीतों को संस्कृतानुवाद में प्रस्तुत किये गये। डॉ. ऋषिराज पाटक द्वारा अनेक क्लासिकल म्यूजिकों की प्रस्तुतियां की गई।

इस अवसर पर डॉ. पंकज मिश्र ने कहा कि संस्कृत भाषा में विशाल ज्ञान–विज्ञान निहित है। भारतीय संस्कृति से विश्व की अनेक संस्कृतियों का उदय हुआ है, क्योंकि इसके मूल में संस्कृत भाषा है। दिल्ली सरकार आगे भी इसी प्रकार से संस्कृत के कलाकारों को प्रोत्साहित करती रहेगी। इस अवसर पर डॉ० बलदेवानन्द सागर ने कहा कि दिल्ली सरकार का प्रयास है कि दिल्ली में हर भाषा के विकास के लिये निरन्तर कार्य होता रहे। इसी के लिये हमारी सरकार ने दिल्ली में विभिन्न भाषा अकादमियों की स्थाना की है। इन अकादियों में से गढवाली, कुमाऊँनी एवं जौनसारी अकादमी की स्थापना कर दी गई है। दिल्ली में सभी भाषा के लोग निवास करते हैं इन लोगों को उनकी भाषा एवं संस्कृति से परिचत करना एवं जोडे रखने के लिये ये निर्णय लिया गया।

इस अवसर पर डॉ. रणजीत बेहरा ने कहा कि अकादमी द्वारा 3 दिनों में संस्कृत की सभी विधाओं से लोगों को अवगत कराया जायेगा। प्रदर्शिनियों के माध्यम से प्राचीन से लेकर अर्वाचीन भारत के विकास की झलक संस्कृत के माध्यम से दिखाई जा रही है।

दिनांक 23.10.2019

भारतीय संस्कृति की अनोखी छटा दिखाई गई संस्कृत उत्सव में – डॉ. जीतराम भट्ट

अनेक संस्कृतियों का संगम है भारत –डॉ० कान्ता भाटिया

सेण्ट्रल पार्क में "संस्कृत उत्सव" में सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजित

–डॉ. जीतराम भट्ट

देश की राजधानी के केन्द्र में स्थित कनॉट प्लेस के सेण्ट्रल पार्क में दिल्ली संस्कृत अकादमी दिल्ली सरकार द्वारा आज कल "संस्कृत उत्सव" का आयोजन किया जा रहा है। संस्कृत उत्सह के द्वितीय दिन संस्कृत के विभिन्न सांस्कृतिक गतिविधियों से सुसाज्जित संस्कृत स्टॉलों से किया गया। इन स्टॉलों में संस्कृत में किस वस्तु को संस्कृत में क्या बोलते हैं आम लोगों को इसका परिचय दिया जा रहा है। स्टॉलों में फलों के नाम, सब्जियों के नाम, घरों में प्रयोग में आने वाली वस्तुओं के नाम, ग्रामीण जीवन शैली पर आधारित स्टॉल, विज्ञान में प्रयोग होने वाले विभिन्न शब्दावलियों के नाम, कार्यालय प्रयोग में आने वाली वस्तुओं के अलावा महात्मा गांधी के 150 जयन्ती वर्ष के अवसर पर एक प्रदर्शनी को भी लगाया गया है। उत्सव की विशेषता है कि इसमें एक सेल्फी पॉइन्ट बनाया गया है इस पॉइन्ट पर एक शब्द संस्कृत में बोलो ओर अपनी फोटो खीचों।

संस्कृत उत्सव के दूसरे दिन बक्करवाला गुरुकुल के छात्रों के द्वारा गुरुकुलीय वेशभूषा में पथ संचलन किया गया जो सेण्ट्रल पार्क पर पूरा घूम कर किया गया। इसके बाद दिल्ली के विभिन्न विद्यालयों एवं संस्कृत विद्यालयों एवं महाविद्यालयों की ओर से संस्कृत में नुक्कड नाटक एवं संस्कृत में कव्वालि आदि की प्रस्तुतियाँ की गई।

संस्कृत उत्सव में मुख्य आकर्षण सायं 6.00 बजे से विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। जिसमें श्री आनन्द जोशी ग्रुप द्वारा संस्कत वाद्यवृन्द में संगीत के साथ नृत्यों की प्रस्तुतियां की गई। दिल्ली के विभिन्न महाविद्यालयों के युवा प्रतिभागियों ने अपनी संस्कृत प्रतिभा के माध्यम से संस्कृत में नृत्य एवं गान की प्रस्तुतियां दी। जिसमें हिन्दू महाविद्यालय के श्री रवि, सेण्टस्टीफेन्स महाविद्यालय के कोरियोग्राफर सोसायटी द्वारा 11 मिनट की संस्कृत में बहुआयामी बहुत सुन्दर कोरियोग्राफी प्रस्तुत की गई। जामिया मिलिया विश्वविद्यालय की ऋत्विका द्वारा नृत्य, लेडी श्रीराम कालेज की छात्राओं द्वारा कव्वालि की प्रस्तुत की गई। अन्य प्रस्तुतियों में सेण्टस्टीफेन्स – आकृति, हिन्दू महाविद्यालय–आनन्द, मिराण्डा हाउस महाविद्यालय–रवि, मिराण्डा हाउस सोसायटी द्वारा मृदंग की प्रस्तुतियां की गई। कार्यक्रम के अन्त में श्री कुलदीप जोशी ग्रुप द्वारा संस्कृत में नृत्य एवं गायन की प्रस्तुति की गई।

इस अवसर पर अकादमी की उपाध्यक्षा डॉ. कान्ता भाटिया ने कहा कि कला, संस्कृति एवं भाषा ही हमारी विशिष्ट पहचान है। इसी का परिचय आज के कलाकारों द्वारा दिया गया। हम पाश्चात्य संस्कृति को अपना कर अपनी संस्कृति को भूल जाये यह नहीं होना चाहिये। पाश्चात्य संस्कृति में भी संगीत एवं

नृत्य भारतीय संगीत से ही निकले हैं। संस्कृत भाषा अति प्राचीन होने पर भी प्रचीन एवं आधुनिक भाषाओं में सबसे श्रेष्ठ भाषा है। आज से दिल्ली सरकार की ओर से देश के प्रसिद्ध पार्क सेण्ट्रल पार्क में 3 दिनों तक "संस्कृत उत्सव" का आयोजन इसलिए किया जा रहा है कि हमारे देश की हजारों सालों पुरानी विरासत को लोगों तक पहुँचाया जा सके। देश में सभी भाषाओं का विकास हो सभी भाषायें आगे बढे, यही हमारा प्रयास है। दिल्ली में सभी भाषाओं के विकास के लिये सरकार की ओर से अनेक अकादमियों के माध्यम से भाषाओं का विकास हो रहा है। इसी क्रम में आज दिल्ली संस्कृत अकादमी द्वारा संस्कृत के विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया जा रहा है।

इस अवसर पर अकादमी के सचिव डॉ. जीतराम भट्ट ने कहा कि भौतिकवादी युग में संस्कृत की प्रासंगिता अधिक है हम अपने सामाजिक परिवेश से दूर हो रहे हैं इसलिए संस्कृत साहित्यकारों एवं संस्कृत के प्रति अनुराग रखने वालों को संस्कृत भाषा निहित अपने ज्ञान–विज्ञान को लोगों तक पहुँचाने का प्रयास करना चाहिये। दिल्ली सरकार द्वारा दिल्ली के सेण्ट्रल पार्क में आयोजित किये जा रहे इस इस तीन दिनों के संस्कृत उत्सव में संस्कृत को लोकप्रिय बनाने के लिये अनेक प्रकार के संस्कृत विषयक सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया जा रहा है। आज की प्रस्तुतियों में युवा वर्ग को महत्व दिया गया था कि वे अपनी अपनी प्रस्तुतियाँ दिल्ली के सेण्ट्रल पार्क में करें। सभी विद्यालयों एवं महाविद्यालयों का निरन्तर सहयोग इस संस्कृत उत्सव को मिल रहा है।

इस अवसर पर डॉ. आशुतोष दयाल माथुर, डॉ. पंकज कुमार मिश्र, डॉ. धनञ्जयमणि त्रिपाठी सहित अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे ।

संस्कृत एक जीवन शैली है – डॉ0 विजयलक्ष्मी
संस्कृत सम्पूर्ण विश्व के ज्ञान का स्रोत है संस्कृत भाषा एवं साहित्य–डॉ0 जीतराम भट्ट
संस्कृत से ही संगीत निकला है –डॉ0 कान्ता भाटिया

संस्कृत एक जीवन शैली है। इस भाषा में निहित ज्ञान विज्ञान से हमें जहां एक ओर अतिविशिष्ट ज्ञान मिलता है वहीं दूसरी ओर विश्व की सर्वश्रेष्ठ संस्कृति भी मिलती है। भारतीय संस्कृति में विश्व को एक परिवार के रूप में माना है। सभी के कल्याण को लेकर विकास सुनिश्चित किया गया है। संस्कृत भाषा में धन को कम महत्व दिया गया है परोपकार की भावना सबसे पहले सोची गई है। सभी विषयों को पढने के बाद यह ज्ञात होता है कि संस्कृत भाषा एवं साहित्य में ज्ञान का सागर है। ज्ञान का इतना विशाल भण्डार विश्व के किसी अन्य साहित्य में नहीं है और न ही किसी अन्य विषय में। संस्कृत भाषा भारतीय ही नही सभी भारतीय भाषाओं की जननी है।

ये विचार दिल्ली संस्कृत अकादमी दिल्ली सरकार द्वारा मिराण्डा हाउस महाविद्यालय, दिल्ली में महाविद्यालयीय श्लोक संगीत प्रतियोगिता समारोह का शुभारम्भ करते हुए मिराण्डा हाउस महाविद्यालय की प्राचार्या डॉ. विजयलक्ष्मी नन्दा ने व्यक्त किये। डॉ. विजयलक्ष्मी ने आगे कहा कि इस प्रकार के समारोहों का

आयोजन बार बार किया जाना चाहिये जिससे हम युवा वर्ग को अपनी संस्कृति एवं संस्करो से जोड़ सकें। जब कभी भी कहीं पर संस्कृत की बात आती है तो उस स्थान पर सभी लोगों के अन्दर एक गौरव की अनुभूति होती है। इस का अनुभव मैंने कई बार किया है।

इस अवसर पर दिल्ली संस्कृत अकादमी के सचिव डॉ. जीतराम भट्ट ने कहा कि संस्कृत सम्पूर्ण विश्व को ज्ञान देता आ रहा है। महाविद्यालय स्तर पर संस्कृत को प्रभावी बनाने के लिये प्रतियोगिता के माध्यम से अकादमी युवा पीढी को प्रोत्साहित करती है। आज दिल्ली के महाविद्यालयों के छात्र–छात्राओं के लिये संस्कृत श्लोक संगीत प्रतियोगिता का आयोजन किया जा रहा है। सभी प्रतिभागी छात्र / छात्रायें अपने अपने महाविद्यालयों का प्रतिनिधित्व कर पुरस्कार प्राप्त करेंगे। इस प्रकार की प्रतियोगिताओं से सभी को लाभ मिला होगा। इस प्रकार के कार्यक्रमों के माध्यम से संस्कृत भाषा को मजबूती मिलती है।

इस अवसर पर अकादमी की उपाध्यक्षा डॉ. कान्ता भाटिया ने कहा कि विश्व स्तर पर चिन्तन, वैज्ञानिक सोच या विशाल साहित्य हो इन में संस्कृत सबसे आगे रही है। मैंने संस्कृत और इससे निकली भाषाओं पर बहुत शोध कार्य किया है। मैंने यह पाया कि यूरोप की सभी भाषायें संस्कृत पर ही निर्भर हैं। हमे ध्यान से अनुसंधान कर संस्कृत भाषा के महत्व को विश्व के भाषाविदों के सम्मुख रखने चाहिये। चाईनीज भाषा भी संस्कृत के बहुत समीप है। इण्डोनेशियन जापनीज आदि भाषाओं पर भी संस्कृत भाषा का बहुत प्रभाव है। इन भाषाओं में संस्कृत के शब्दों में प्रत्यय या उपसर्ग के रूप में निहित हैं और यही शब्द उस भाषा के संस्कृतमय स्वरुप को दर्शाते है। युवा वर्ग के संस्कृतज्ञों से मेरा निवेदन है कि वे इस विषय में कार्य करें। संस्कृत साहित्य में निहित ज्ञान विज्ञान की तुलना किसी से नहीं की जा सकती है।

इस अवसर पर श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ के साहित्य विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. भागीरथी नन्द ने कहा कि हमारी संस्कृति, सभ्यता, लोकव्यवहार, आदर्श शासन व्यवस्था, गणित, राजनीति, भूगर्भ विज्ञान, परमाणु विज्ञान, ज्योतिष, योग, दर्शन आदि समस्त विद्याएँ संस्कृत साहित्य में हैं। अतः हम कह सकते हैं कि यह विश्व की प्रथम भाषा है। आज हमें अपने मान–सम्मान, गौरव, अस्मिता, संस्कृति, सभ्यता आदि की रक्षा हेतु हमें संस्कृत की अधिक आवश्यकता है।

प्रतियोगिता मिराण्डा हाउस महाविद्यालय के संस्कृत विभाग के सानिध्य में हुआ। प्रतियोगिता में दिल्ली के अनेक महाविद्यालयों ने भाग लिया। इस अवसर पर अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

संस्कृत श्लोक संगीत प्रतियोगिता वर्ष 2019–20
(स्नातक / स्नातकोत्तर स्तरीय)

क्र.सं.	महाविद्यालय का नाम	प्रतिभागी का नाम	प्राप्त स्थान	पुरस्कार राशि
1.	मिराण्डा हाउस महाविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय परिसर, दिल्ली–07	सुदेष्णा घोडूइ	प्रथम	रू. 1000/–
2.	मिराण्डा हाउस महाविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय परिसर, दिल्ली–07	हरिणी रघुरामन	प्रथम	रू. 1000/–

3.	मिराण्डा हाउस महाविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय परिसर, दिल्ली–07	प्रिया बनर्जी	प्रथम	रू. 1000/–
4.	मिराण्डा हाउस महाविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय परिसर, दिल्ली–07	शालिनी पाण्डेय	प्रथम	रू. 1000/–
5.	मिराण्डा हाउस महाविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय परिसर, दिल्ली–07	प्रिया कुमारी	प्रथम	रू. 1000/–
6.	मिराण्डा हाउस महाविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय परिसर, दिल्ली–07	कृतिका सिन्हा	प्रथम	रू. 1000/–
7.	लेडी श्रीराम महिला महाविद्यालय, लाजपत नगर–4, नई दिल्ली–24	रजनी	प्रोत्साहन–1	रू. 350/–
8.	लेडी श्रीराम महिला महाविद्यालय, लाजपत नगर–4, नई दिल्ली–24	चंचल	प्रोत्साहन–1	रू. 350/–
9.	लेडी श्रीराम महिला महाविद्यालय, लाजपत नगर–4, नई दिल्ली–24	लतेश	प्रोत्साहन–1	रू. 350/–
10.	लेडी श्रीराम महिला महाविद्यालय, लाजपत नगर–4, नई दिल्ली–24	मुस्कान	प्रोत्साहन–1	रू. 350/–
11.	लेडी श्रीराम महिला महाविद्यालय, लाजपत नगर–4, नई दिल्ली–24	सौम्य समीक्षा	प्रोत्साहन–1	रू. 350/–
12.	लेडी श्रीराम महिला महाविद्यालय, लाजपत नगर–4, नई दिल्ली–24	अक्षिता	प्रोत्साहन–1	रू. 350/–

दिनांक 09.11.2019

आयुर्वेद चिकित्सा में सभी रोगों का इलाज है –डॉ. जीतराम भट्ट
आयुर्वेद चिकित्सा विश्व में विश्वसनीय है – डॉ. भगवान सहाय

आयुर्वेद में आधुनिक चिकित्सा शिक्षा के सभी मूल निहित हैं। मेडिसिन, शल्य चिकित्सा, अस्थि चिकित्सा आदि सभी का इलाज एवं रोगों के निदान आयुर्वेद में वर्णित हैं। इस केन्द्र के माध्यम से दिल्ली के उन प्रशिक्षार्थियों को आयुर्वेद के बारे में जानकारी देना चाहते है जो आयुर्वेद चिकित्सा पर विश्वास करते हैं तथा साधारण रोगों को घरेलू औषधियों से ठीक कर सकते हैं। आयुर्वेद के विकास में चीन अमेरिका जर्मन आदि देश बहुत बढे स्तर पर कार्य कर रहे हैं। एक शोध के अनुसार विश्व की आवादी के 21 प्रतिशत रोगियों की संख्या भारत में है। यह एक बहुत चिन्ता का विषय है और भारतीय चिकित्सकों के लिये एक चैलेन्ज है। जर्मन में 200 मेडिकल कालेजो में तथा अमेरिका में 100 मेडिकल कालेजों में आयुर्वेद को अनिवार्य रूप से पढाया जाता है। आयुर्वेद में च्यवन ऋषि का अति महत्वपूर्ण योगदान है । फिर भारद्वाज ने आयुर्वेद क प्रभाव से सुखी और आरोग्य जीवन प्राप्त कर अन्य ऋषियों को बताया। आयुर्वेद की सिद्धता वैदिक काल से ही है ।

ये विचार दिल्ली संस्कृत अकादमी, दिल्ली सरकार द्वारा करोल बाग नई दिल्ली में आयुर्वेद प्रशिक्षण शिक्षण केन्द्र के समापन पर प्रशिक्षार्थियों को अपने उद्‌बोधन में दिल्ली संस्कृत अकादमी के सचिव

डॉ. जीतराम भट्ट ने व्यक्त किये। डॉ. भट्ट ने आगे कहा कि आयुर्वेद में कोई ऐसा रोग नहीं है जिसका उपचार न हो। सभी लोगों को आयुर्वेद की चिकित्सा पर विश्वास करने की जरूरत है। आज सम्पूर्ण विश्व आयुर्वेद की ओर अग्रसर हो रहा है। इस अध्ययन केन्द्र में 190 से अधिक जिज्ञासुओ ने आयुर्वेद का अध्ययन किया। 140 जिज्ञासुओं को प्रमाण पत्र दिये गये। केन्द्र में सोमवार से शुक्रवार तक दोपहर 4.00 बजे 6.00 बजे तक दो घण्टे की कक्षा चलाई गई। अकादमी द्वारा इसी प्रकार से संस्कृत में निहित अन्य विषयों पर भी कक्षायें चलाई जा रही हैं ।

इस अवसर पर तिविया आयुर्वेद महाविद्यालय के आचार्य डॉ0 भगवान सहाय शर्मा ने कहा कि आयुर्वेद संस्कृत साहित्य के चिकित्या सम्बन्धी वैज्ञानिक पक्ष को मजबूती देता है। चिकित्सा के क्षेत्र में मनुष्य को निरोग रखने के लिये अनादि काल से ही आयुर्वेद का उपयोग जन कल्याण के लिये होता आ रहा है। चरक एवं सुश्रुत आदि मान्य ग्रन्थों म आयुर्वेद को अथर्ववेद का उपवेद माना जाता है। ये ग्रन्थ आयुर्वद की प्राचीनतम सिद्ध रचनायें हैं। आज भी विश्व चिकित्सा विज्ञान आयुर्वेद के मूल सिद्धन्तों पर आधारित है। स्वस्थ्य व्यक्ति एवं रोगी के लिये उत्तम मार्ग बताने वाले विज्ञान को आयुर्वेद कहते हैं। आयुर्वेद का अर्थ ही जीवन का ज्ञान है। चिकित्सा शास्त्र के भारतीय स्वरूप को आयुर्वेद कहते हैं। आयुर्वेद विश्व में विद्यमान वह ज्ञान है जिसके अध्ययन के पश्चात हम अपनी जीवन शैली का विश्लेषण कर सकते हैं

इस अवसर पर अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

संस्कृत सद्यः निबन्ध प्रतियोगिता वर्ष 2019–20

(मध्यमा स्तरीय)

क्र.सं.	महाविद्यालय का नाम	प्रतिभागी का नाम	प्राप्तस्थान	पुरस्कार राशि
1.	ब्रह्म ऋषि रामप्रपन्नाचार्य संस्कृत वेद वेदांग महाविद्यालय, राजघाट, नई दिल्ली–02	अनुराग त्रिपाठी	प्रथम	2000 /–
2.	श्रीनिवास संस्कृत विद्यापीठम्, 174 रामानुज मार्ग, इब्राहिमपुर, दिल्ली–36	दण्डपाणि आचार्य	द्वितीय	1800 /–
3.	श्रीनिवास संस्कृत विद्यापीठम्, 174 रामानुज मार्ग, इब्राहिमपुर, दिल्ली–36	धर्मराज दुलाल	तृतीय	1500 /–
4.	महर्षि वेदव्यास गुरुकुल विद्यापीठ, आनन्दधाम आश्रम, बक्करवाला मार्ग, नांगलोई–नजफगढ़ रोड, दिल्ली–41	नमन	चतुर्थ	1200 /–
5.	ब्रह्म ऋषि रामप्रपन्नाचार्य संस्कृत वेद वेदांग महाविद्यालय, राजघाट, नई दिल्ली–02	ई.संग्राम नारायण	प्रोत्साहन	500 /–

दिनांक 16.11.2019

संस्कृत विद्यालय को चलाना आज कल बहुत मुश्किल होता जा रहा है
–मदनलाल गुप्ता

विश्व को वर्तमान में रोजगार नहीं मानवता की आवश्यकता है
– डॉ. जीतराम भट्ट

संस्कृत भाषा को जन सामान्य की भाषा बनाने के लिये अनेक स्तर पर प्रयास करने की जरूरत है। जिसमें सबसे पहले संस्कृत को अपने मूल स्वरूप में रखने पर कार्य किया जाना चाहिये। संस्कृत विद्यालय को चलाना पहले बहुत परमार्थ का कार्य माना जाता था परन्तु आजकल संस्कृत विद्यालय चलाना बहुत मुश्किल हो गया है। हर स्तर पर बहुत परेशानियों का सामना करना पढ़ता है। दिल्ली संस्कृत अकादमी पूरे वर्ष दिल्ली में संस्कृत विद्यालयों के प्रोत्साहन के लिये अनेक प्रयास करती है जिसमें युवा छात्रों के लिये प्रतियोगिताओं का आयोजन भी मुख्य है। इस प्रकार की प्रतियोगिताओं के माध्यम से संस्कृत भाषा को युवा वर्ग एवं आम लोगों के बीच ले जाने के लिये निरन्तर प्रयास कर रही है। भारतीय संस्कृति का मूल आधार संस्कृत भाषा एवं उसमें निहित ज्ञान विज्ञान है। इस भाषा के साहित्य में सभी विषयों का ज्ञान निहित है। संस्कृत साहित्य मे अनेक ऐसे विषय है जिसमे आधुनिक विषयो का सम्पूर्ण ज्ञान वर्णित है।

ये विचार दिल्ली संस्कृत अकादमी दिल्ली सरकार द्वारा शारदा देवी संस्कृत विद्यापीठ, दरियागंज नई दिल्ली में आयोजित अक्षर श्लोक प्रतियोगिता समारोह(मध्यमा स्तरीय) का शुभारम्भ करते हुये शारदा देवी संस्कृत विद्यापीठ के प्रबन्धक श्री मदनलाल गुप्ता ने व्यक्त किये।

इस अवसर दिल्ली संस्कृत अकादमी के सचिव डॉ. जीतराम भट्ट ने कहा कि संस्कृत भाषा को पुनः अपना गौरव प्रदान करने के लिये युवा वर्ग को संस्कृत के प्रति लगाव होना आवश्यक है। संस्कृत में

इस अवसर दिल्ली संस्कृत अकादमी के सचिव डॉ. जीतराम भट्ट ने कहा कि संस्कृत भाषा को पुनः अपना गौरव प्रदान करने के लिये युवा वर्ग को संस्कृत के प्रति लगाव होना आवश्यक है। संस्कृत में रोजगार तो बहुत है पर विश्व आज रोजगार नही मानवता के लिये संस्कृत को पढ़ना चाहता है। संस्कार एवं मानवता संस्कृत साहित्यों मे ही निहित है। संस्कृत के गुरुकुलों एवं संस्कृत के विद्वानों ने विपरीत परस्थितियों में भी संस्कृत की रक्षा की आज पूरा विश्व संस्कृत के महत्त्व को जानता है। आज के समय में प्रतिकूल परस्थियां हैं इस स्थिति मे आप लोग संस्कृत को विश्वस्तर पर ले जाने के लिये जो निरन्तर प्रयास कर रहे हैं वे अपने आप में प्रशंसनीय है। संस्कृत भाषा अनेकता में एकता का सन्देश सदियों से देती आयी है। यह भाषा मानव सभ्यता के प्राचीनतम इतिहास से जुड़ी है।

इस अवसर पर अतिथि के रूप में भारत सरकार के पूर्व संस्कृत परामर्शक डॉ. नोदनाथ मिश्र ने कहा कि संस्कृत विद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों से प्रति वर्ष अनेक विद्यार्थी संस्कृत भाषा का गौरव बढ़ा रहे हैं। आज के आधुनिक युग में शिक्षा के क्षेत्र में अनेक आधुनिक गुरुकुल संस्कृत पढ़ने के लिये बच्चों को उत्साहित कर रहे है। संस्कृत को यदि ध्यान से पढ़ा जाय तो यह विश्व की सबसे सरलतम भाषाओं में से एक भाषा है।

इस अवसर पर शारदा देवी संस्कृत विद्यापीठ, के प्राचार्य विनोद पाण्डेय ने समारोह में आये सभी प्रतिभागियों एवं विद्वानों का स्वगत करते हुये कहा कि संस्कृत की सेवा के लिये जो भी अवसर इस विद्यालय को दिया जाता है विद्यालय उसे पूरा करने में अपना पूरा योगदान देता है।

इस प्रतियोगिता में दिल्ली के 5 संस्कृत विद्यालयों के प्रतिभागियों ने भाग लिया। इस प्रतियोगिता का संयोजन शारदा देवी संस्कृत विद्यापीठ द्वारा किया गया।

इस अवसर पर अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

संस्कृत अक्षर श्लोक प्रतियोगिता वर्ष 2019–20
(मध्यमा स्तरीय)

क्र.सं.	महाविद्यालय का नाम	प्रतिभागी का नाम	प्राप्तस्थान	पुरस्कार राशि
1.	शारदा देवी संस्कृत विद्यापीठ, तिराहा बेरमखाँ चौक, दरियागंज, नई दिल्ली–02	शिवम शुक्ला	प्रथम	1000/–
2.		अतुल पाण्डेय	प्रथम	1000/–
3.		विवेकानन्द	प्रथम	1000/–
4.		पंकज कुमार शुक्ला	प्रथम	1000/–
5.		अनुज घस्माना	प्रथम	1000/–
6.		सौरभ कुमार	प्रथम	1000/–
7.	श्री रामऋषि संस्कृत महाविद्यालय, कराला, दिल्ली–81	अभिषेक कुमार	प्रोत्साहन	350/–
8.		रोहित	प्रोत्साहन	350/–
9.		कृष्णकान्त मिश्र	प्रोत्साहन	350/–
10.		दीपांशु	प्रोत्साहन	350/–
11.		आशु मिश्रा	प्रोत्साहन	350/–
12.		रोहित मिश्रा	प्रोत्साहन	350/–

दिनांक 22.11.2019

संस्कृत भाषा एवं साहित्य युवा वर्ग को विचारों एवं चिन्तन की नई दिशा देती है । –रोशन लाल जैन

प्रतियोगिता से सीखने को मिलता है जो कि जीवन में आवश्यक है – डॉ0 जीतराम भट्ट।

साहित्य के निमार्ण में संस्कृत साहित्यकारों का सबसे अधिक योगदान होता है। जिस देश का साहित्य प्राचीन काल से ही इतना समृद्ध रहा है उस के चिन्तन को कभी मिटाया नहीं जा सकता है। यदि

किसी राष्ट्र का चिन्तन साहित्य लेखन सशक्त एवं विचार शील हो वह राष्ट्र विकास की नई ऊँचाईयों को पाता है। संस्कृत भाषा एवं साहित्य समाज को विचारों की नई दिशा एवं चिन्तन आदि काल से ही देती आ रही है। इस विचार एवं चिन्तन में संस्कृत भाषा के विभिन्न आयामों में संस्कृत भाषण का अपना अलग महत्व है। भाषाण के माध्यम से प्रतिभागी अपने विचारों को रखने की कला सीखता है जो आगे चलकर भविष्य में व्यक्ति के कोशल के निर्मित करने में सहायक होती है। देश के विकास में संस्कृत छात्रों, विद्वानों एवं संस्कृत साहित्य का हर समय योगदान रहा है और आगे भी रहेगा। संस्कृत सभी भाषाओं की जननी है और भारतीय संस्कृति का आधार है।

ये विचार दिल्ली संस्कृत अकादमी दिल्ली सरकार द्वारा श्री महावीर संस्कृत विश्वविद्यापीठ, पश्चिम विहार, नई दिल्ली में दिल्ली स्थित संस्कृत विद्यालयों के मध्यमा स्तर के छात्र/छात्राओं के लिये आयोजित "संस्कृत भाषण प्रतियोगिता समारोह का शुभारम्भ करते हुये विद्यापीठ के प्रबन्धक श्री रोशन लाल जैन ने व्यक्त किये।

इस अवसर पर कार्यक्रम में आये प्रतिभागियों को सम्बोधित करते हुये अकादमी के सचिव डॉ. जीतराम भट्ट ने कहा कि दिल्ली संस्कृत अकादमी द्वारा दिल्ली के संस्कृत विद्यालयों के प्रतिभागियों की प्रतिभा विकशित करने के उद्देश्य से यह मध्यमा स्तरीय भाषण प्रतियोगिता आयोजित की गई। इस प्रतियोगिता में दिल्ली के लगभग सभी संस्कृत विद्यालयों के छात्र/छात्राओं ने भाग लिया। इसके लिये सभी विद्यालयों का धन्यवाद। इस प्रकार के कार्यक्रमों के माध्यम से संस्कृत भाषा को मजबूती मिलती है। संस्कृत भाषा मानव सभ्यता के प्राचीनतम इतिहास से जुड़ी भाषा है। विज्ञान के सबसे समीप भाषा होने का गौरव भी संस्कृत भाषा को ही है। दिल्ली में अनेक संस्थायें निस्वार्थ भाव से संस्कृत के विकास एवं ज्ञान विज्ञान का कार्य कर रही है। श्री महावीर संस्कृत विश्वविद्यापीठ भी संस्कृत की शिक्षा में अनेक वर्षों से अपना योगदान देती आ रही है।

प्रतियोगिता में प्रथम स्थान श्री सौरभ कुमार, शारदा देवी संस्कृत विद्यापीठ, द्वितीय स्थान श्रीनिवास संस्कृत विद्यापीठ के श्री दण्डपाणि को, तृतीय स्थान महर्षि वेद व्यास संस्कृत विद्यालय के श्री हिमांशु मिश्र एवं चतुर्थ स्थान श्री रामऋषि संस्कृत विद्यालय कराला के श्री कृष्णकान्त मिश्र को प्राप्त हुआ। सभी प्रतिभागियों एवं विजेता छात्रों को अगामी किसी कार्यक्रम में पुरस्कार प्रदान किये जायेगे।

कार्यक्रम का संयोजन श्री महावीर संस्कृत विश्वविद्यापीठ द्वारा किया गया। विद्यापीठ की प्राचार्या श्रीमती सुमित्रा ने सभी अतिथियों एवं प्रतिभागियों का स्वागत करते हुये कहा कि संस्कृत के महत्व को विश्व नकार नहीं सकता। संस्कृत का मजबूत आधार है इस भाषा में सभी विषयों का समावेश है।

इस अवसर पर डॉ. राजकुमारी त्रिखा, डॉ. शशि तिवारी, प्रो. सुमन झा सहित अनेक संस्कृत प्रेमी महानुभाव उपस्थित थे।

संस्कृत भाषण प्रतियोगिता वर्ष 2019–20
(मध्यमा स्तरीय)

क्र.सं.	महाविद्यालय का नाम	प्रतिभागी का नाम	प्राप्तस्थान	पुरस्कार राशि
1.	शारदा देवी संस्कृत विद्यापीठ, तिराहा बेरमखाँ चौक, दरियागंज, नई दिल्ली–02	सौरभ कुमार	प्रथम	2000/–
2.	श्री निवास संस्कृत विद्यापीठम् 174 रामानुजमार्ग, इब्राहिमपुर, दिल्ली–36	दण्डपाणि आचार्य	द्वितीय	1800/–
3.	महर्षि वेदव्यास गुरुकुल विद्यापीठ, आनन्दधाम आश्रम, बक्करवाला मार्ग, नांगलोई–नजफगढ़ रोड, दिल्ली–41	हिमांशु मिश्र	तृतीय	1500/–
4.	श्री रामऋषि संस्कृत महाविद्यालय, कराला, दिल्ली–81	कृष्णकान्त मिश्र	चतुर्थ	1200/–
5.	महर्षि वेदव्यास गुरुकुल विद्यापीठ, आनन्दधाम आश्रम, बक्करवाला मार्ग, नांगलोई–नजफगढ़ रोड, दिल्ली–41	नमन कम्बोज	प्रोत्साहन	500/–

दिनांक 23.11.2019

भारतीय ज्ञान विज्ञान पर शोध कार्य निरन्तर चल रहा है – डॉ० कान्ता भाटिया
अकादमी संस्कृत के युवा वर्ग को हर स्तर पर प्रोत्साहन देने के लिये निरन्तर प्रयासरत है – डॉ० जीतराम भट्ट
संस्कृत विश्व की प्रथम भाषा है– दौलतराम कटारिया

संस्कृत के माध्यम से देश के अनेक छात्र–छात्राएँ अपना भविष्य बना रहे हैं। संस्कृत साहित्य सभी साहित्यों की आत्मा है। संस्कृत एवं संगीत से साहित्य में जीवन का संचार होता है। अभी तक संस्कृत भाषा को याद करने की परम्परा से पढाया एवं पढा जाता रहा है। परन्तु आज के कम्प्यूटर युग में इस पर लोगों का ध्यान हट गया है। जो कि किसी भी विषय के लिये सही नहीं है। संस्कृत के याद करने की परम्परा को यदि जीवित रखना है तो इस प्रकार की प्रतियोगिताओं का किया जाना आवश्यक है। इस परम्परा से प्रतिभागियों को श्लोक याद करने की क्षमता मिलेगी।

ये विचार दिल्ली संस्कृत अकादमी दिल्ली सरकार द्वारा महर्षि वेद व्यास संस्कृत विद्यापीठ, आनन्दधाम नई दिल्ली में मध्यमा स्तरीय "वाद विवाद प्रतियोगिता समारोह " का शुभारम्भ करते हुए दिल्ली संस्कृत अकादमी की उपाध्यक्षा डॉ. कान्ता भाटिया ने व्यक्त किये। डॉ. भाटिया ने आगे कहा कि विश्व में भारतीय ज्ञान विज्ञान पर शोध कार्य निरन्तर चल रहा है जिसके परिणाम भी सकारात्मक हैं। संस्कृत के अनेक क्षेत्र हैं हम एक क्षेत्र को केन्द्रित कर अपना ज्ञान अर्जित करें तो इसमें हम सफल जल्दी हो सकते हैं। सफलता के लिये डर को दिल से हटाना जरूरी है।

इस अवसर पर अकादमी के सचिव डॉ. जीतराम भट्ट ने कहा कि दिल्ली संस्कृत अकादमी संस्कृत के युवा वर्ग को हर स्तर पर प्रोत्साहन देने के लिये निरन्तर प्रयासरत है। आप लोग दिल्ली संस्कृत अकादमी की वैब साईट या आन्य किसी भी माध्यम से अकादमी की गतिविधियों की जानकारी ले सकते हैं। अकादमी व्यक्तिगत रूप से दिल्ली के युवा वर्ग को संस्कृत से जोड़ने के लिये अनेक संस्कृत विषयक कार्यक्रमों का आयोजन करती आ रही है। प्रति वर्ष निर्धारित कार्यक्रमों के अलावा नये कार्यक्रमों को भी सामिल करती है। पिछले वर्ष अकादमी द्वारा युवा छात्रों को विभिन्न विषयों पर अपने विचार रखने के लिये दिल्ली के विज्ञान भवन में तीन दिवसीय संस्कृत सम्मेलन का आयोजन किया था जिसमें दिल्ली के महा–विद्यालयों के संस्कृत के छात्र–छात्राओं ने बहुत बढ़ी संख्या में भाग लिया था। इसी प्रकार अकादमी प्रति वर्ष दिल्ली के युवा प्रतिभाशाली प्रतिभागियों को अपनी प्रतिभा दिखाने के लिये दिल्ली में अनेक प्रकार की संस्कृत विषयक प्रतियोगिताओं का आयोजन करती है इसी क्रम में आज मध्यमा स्तर के प्रतिभागियों के लिये "वाद विवाद प्रतियोगिता" का आयोजन किया गया है। दिल्ली के लगभग संस्कृत विद्यालयों के 20 छात्र–छात्राओं ने आज इस प्रतियोगिता में भाग लेकर संस्कृत के भविष्य को उज्ज्वल बनाने का प्रयास किया है।

इस अवसर पर संस्कृत विद्यापीठ के संस्कृत विद्यापीठ के प्रबन्धक श्री दौलतराम कटारिया ने कहा कि संस्कृत विश्व की प्रथम भाषा है। जब विश्व में कोई पढ़ना लिखना ही नहीं जानता था उस समय भारत में वेद लिख दिये गये थे। आज भारतीय ज्ञान विज्ञान एवं दर्शन के लिये और भारतीय मान–सम्मान, गौरव, अस्मिता, संस्कृति, सभ्यता आदि की रक्षा हेतु हमें संस्कृत की आवश्यकता है।

इस अवसर पर पूर्व प्रधानाचार्या डॉ. भाष्करानन्द पाण्डेय ने कहा कि दिल्ली के इस गुरुकुल से शिक्षा एवं अन्य क्षेत्रों में अनेक उत्कृष्ट संस्कृत छात्र दे रहे हैं यहां के संस्थापक स्वामी सुधान्शु महाराज जी ने भारत के अनेक प्रान्तों में संस्कृत गुरूकुलों की स्थापना कर रहे है जो संस्कृत शिक्षा के क्षेत्र में अपना योगदान दे रहे हैं। यह गुरूकुल भारत के उच्चकोटि के शिक्षा संस्थाओं मं आता है।

कार्यक्रम महर्षि वेदव्यास संस्कृत विद्यापीठ के सानिध्य में हुआ। जिसमें आचार्यों का अथक प्रयास रहा। कार्यक्रम के अन्त में सभी विजेता प्रतिभागियों की घोषणा की गई। प्रतिभागियों का पुरस्कार एवं अन्य सम्मान आगामी समय में एक भव्य कार्यक्रम आयोजित कर दिया जायेगा।

इस अवसर पर अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

संस्कृत वाद–विवाद प्रतियोगिता वर्ष 2019–20
(मध्यमा स्तरीय)

क्र.सं.	महाविद्यालय का नाम	प्रतिभागी का नाम	प्राप्त स्थान	पुरस्कार राशि
1.	शारदा देवी संस्कृत विद्यापीठ, तिराहा बेरमखाँ चौक, दरियागंज, नई दिल्ली–02	मृत्युंजय द्विवेदी	प्रथम	2000/–

2.	शारदा देवी संस्कृत विद्यापीठ, तिराहाबेरमखाँ चौक, दरियागंज, नई दिल्ली–02	सौरभ कुमार	प्रथम	2000/–
3.	महर्षि वेदव्यास गुरूकुल विद्यापीठ, आनन्दधाम आश्रम, बक्करवाला, नई दिल्ली–41	हरिदर्श तिवारी	प्रोत्साहन	600/–
4.	महर्षि वेदव्यास गुरूकुल विद्यापीठ, आनन्दधाम आश्रम, बक्करवाला, नई दिल्ली–41	पीयूष तिवारी	प्रोत्साहन	600/–

दिनांक 30.11.2019

संस्कृत भाषा में स्थित ज्ञान विज्ञान विश्व में प्रवाहित हो रही है। –सुखवीर सिंह दलाल
संस्कृत सस्कारों की भाषा है शिक्षाकों संस्कारों जोडना आवश्यक है। –
डॉ0 जीतराम भट्ट।

संस्कृत साहित्य का महत्व इसके श्लोकों के कारण ही है। संस्कृत में श्लोको के महत्व के कारण ही यह भाषा कर्णप्रिय एवं लोगों को प्रभावित करने वाली भाषा है। भारतीय संस्कृति आज भी पूरे विश्व में अपने गौरव और महत्त्व के साथ विराजमान है, क्योंकि इसके मूल में संस्कृत भाषा है। यह सर्व विदित है कि संस्कृत विश्व की अत्यन्त प्राचीन भाषा के साथ सबसे नवीन भाषा है। माता एवं पिता सबके प्रथम गुरु होते हैं। जीवन में एक समय ऐसा होता है जब हम माता पिता के नाम से जाने जाने जाते है। परन्तु व्यक्ति जब जीवन में धीरे धीरे आगे बढता है तो एक समय ऐसा आता है कि हमारे नाम से माता पिता को जाना जाता है। यही भारतीय संस्कृति है। संस्कृत भाषा में स्थित ज्ञान विज्ञान की अनन्त धाराएं ऋग्वेद काल से लेकर आज तक अबाध गति से विश्व में प्रवाहित होती रही हैं।

ये विचार दिल्ली संस्कृत अकादमी दिल्ली सरकार द्वारा श्रीराम ऋषि संस्कृत महाविद्यालय कराला दिल्ली में आयोजित दिल्ली के संस्कृत विद्यालयों के मध्यमा स्तरीय एवं स्नातक स्तरीय श्लोक अन्त्याक्षरी प्रतियोगिता समारोह के मुख्य अतिथि दिल्ली विधान सभा सदस्य श्री सुखवीर सिह दलाल ने व्यक्त किये।

इस अवसर पर अकादमी के सचिव डॉ0 जीतराम भट्ट ने कहा कि संस्कृत जन जन के सस्कारों की भाषा है। शिक्षा को रोजगार से पहले संस्कारों से जोडना आवश्यक है। मानव–सभ्यता के आचार–विचार, रहन–सहन, धर्म–कर्म आदि के रहस्यों को भली भांति जानने के लिए संस्कृत परक ज्ञान परमावश्यक है। जीवन में सुयोग्य बनने के लिये किसी एक क्षेत्र में निपुणता प्राप्त कर लेना पर्याप्त नहीं है। शाररिक एवं मानसिक शक्तियों के साथ बुद्धि के भी विकास के साथ संस्कारित होना चाहिये। प्रतिभा विकास होने से व्यक्ति अपने देश का नाम रोशन करता है। इस प्रकार की प्रतियोगिता के माध्यम से छात्रों में श्लोकों को याद करने की प्रवृति आयेगी। इस अवस्था में जो श्लोक याद हो गये वे जिन्दगी भर याद रहेंगे।

इस अवसर पर नगर निगम पार्षद श्री भरत माथुर ने कहा कि संस्कृत में निहित ज्ञान विज्ञान से युवा वर्ग को प्रेरित करना आवश्यक है। इस विद्यालय से मेरा लगाव बचपन से हर रहा है। विद्यालय के प्रबन्धक श्री जानकी दास गुप्ता ने संस्कृत सेवा में अपना पूरा जीवन समर्पित किया हुआ है। इस अवस्था में भी ये इस विद्यालय को चलाने में पूर्ण योगदान दे रहे हैं।

इस अवसर पर महाविद्यालय के प्रबन्धक श्री जानकी दास गुप्ता ने कहा कि संस्कृत शिक्षा समाज का आधार है। भारतीय संस्कृति एवं ज्ञान विज्ञान का स्रोत है संस्कृत साहित्य में वर्णित ज्ञान। इस पर शोध किया जा रहा है। विज्ञान भारतीय संस्कृति एवं दर्शन पर शोध कार्य कर रहा है। प्रतिभा विकास के लिये इस प्रकार के कार्यक्रमों के माध्यम से संस्कृत का विकास किया जा सकता है। समय एक गति है, एक बहाव है जो अनवरत बहता रहता है। इस अमूल्य समय की धारा को पहचान कर छात्र सफलता के उच्च शिखर तक पहुँच सकते है।

इस अवसर पर डॉ. रामकरण डबास ने कहा कि हमारे संस्कृत विद्यालय संस्कृत के युवा छात्रों को शिक्षा देने के लिये निरन्तर प्रयत्नशील है। इस महाविद्यालय में प्रथमा से लेकर शिक्षा शास्त्री तक शिक्षण की व्यवस्था है। छात्रों को निशुल्क छात्रावास की व्यवस्था एवं भोजन व्यवस्था विद्यापीठ के प्रबन्धको द्वारा किया जाता है।

इस अवसर पर महाविद्यालय के प्राचार्य श्री राम भज ने बताया कि दिल्ली के सभी संस्कृत विद्यालयों को इस प्रतियोगिता के लिये आमंत्रित किया गया था। प्रतियोगिता दो स्तर पर आयोजित की गई जिसमें मध्यमा स्तर एवं स्नातक स्तर के लिये अलग अलग प्रतियोगिता आयोजित की गई। मध्यमा स्तर पर 23 प्रतिभागियों तथा स्नातक स्तर पर 25 से अधिक प्रतिभागियों ने भाग लिया। प्रतियोगिता में संस्कृत श्लोकों की प्रस्तुति की जानी थी। प्रतियोगिता 3 घण्टे तक चलती रही। कार्यक्रम श्रीरामऋषि संस्कृत महाविद्यालय के सौजन्य से हुआ। महाविद्यालय के सभी संस्कृत आचार्यों का इस कार्यक्रम के संयोजन में पूर्ण योगदान दिया।

इस अवसर पर डॉ. भास्करानन्द पाण्डेय, डॉ. सुमन कुमार झा, डॉ. पातीराम शर्मा, श्री यतीन्द कुमार शर्मा, डॉ. शंकर दत्त पाण्डेय सहित अनेक गणमान्य व्यक्ति भी उपस्थित थे।

संस्कृत श्लोकान्त्याक्षरी प्रतियोगिता वर्ष 2019–20

(मध्यमा स्तरीय)

क्र.सं.	महाविद्यालय का नाम	प्रतिभागी का नाम	प्राप्तस्थान	पुरस्कार राशि
1.	बसन्त ग्राम आदर्श संस्कृत महाविद्यालय, बसन्तगांव, बसन्तविहार, नई दिल्ली–57	नितिश कुमार ठाकुर	प्रथम	2000/–
2.	ब्रह्मऋषि रामप्रपन्नाचार्य संस्कृत वेद वेदांग महाविद्यालय, राजघाट, नई दिल्ली–02	लक्ष्मण न्यौपाने	द्वितीय	1800/–

3.	श्री निवास संस्कृत विद्यापीठम्,174 रामानुजमार्ग, इब्राहिमपुर, दिल्ली–36	दण्डपाणि	तृतीय	1500/–
4.	श्री रामऋषि संस्कृत महाविद्यालय, कराला, दिल्ली–81	रोहित	चतुर्थ	1200/–
5.	श्री हनुमान संस्कृत महाविद्यालय, एफ–487/3, रघुवीरनगर, नई दिल्ली–27	रमेश सिंह	पंचम	1000/–
6.	श्री रामऋषि संस्कृत महाविद्यालय, कराला, दिल्ली–81	दिवेश शर्मा	प्रोत्साहन	500/–
7.	श्री रामऋषि संस्कृत महाविद्यालय, कराला, दिल्ली–81	दीपांशु	प्रोत्साहन	500/–

संस्कृत श्लोकान्त्याक्षरी प्रतियोगिता वर्ष 2019–20
(स्नातक–स्नातकोत्तर स्तरीय)

क्र.सं.	महाविद्यालय का नाम	प्रतिभागी का नाम	प्राप्त स्थान	पुरस्कार राशि
1.	श्री रामऋषि संस्कृत महाविद्यालय, कराला, दिल्ली–81	प्रदीप कुमार	प्रथम	2000/–
2.	श्री हनुमान संस्कृत महाविद्यालय, एफ–487/3, रघुवीरनगर, नई दिल्ली–27	अरविन्द	द्वितीय	1800/–
3.	श्री महावीर संस्कृत विश्व विद्यापीठ, ए–6 पश्चिम विहार, नई दिल्ली–63	विजय कुमार झा	तृतीय	1500/–
4.	श्री रामऋषि संस्कृत महाविद्यालय, कराला, दिल्ली–81	चिन्तामणि	प्रोत्साहन	500/–

दिनांक 03.12.2019

भाषाओं में संजीवनी भाषा है संस्कृत भाषा – डॉ. जीतराम भट्ट

विश्व संस्कृत भाषा के महत्व को देखते हुये इस पर शोधकार्य चल रहा है। –डॉ. जीतराम भट्ट

ब्रह्माण्ड की भाषा है संस्कृत भाषा –नीति तिवारी

विश्व में अनेक भाषायें हैं। प्राचीन काल से लेकर वर्तमान काल तक विश्व में अनके भाषायें नयी बनी हैं और कई भाषायें समाप्त हो गयी हैं परन्तु संस्कृत भाषा ऐसी भाषा है जो प्राचीन काल से ले कर वर्तमान काल तक अपने उसी स्वरूप में निरन्तर चली आ रही है। इसके पीछे संस्कृत भाषा का वैज्ञानिक स्वरूप है। यह भाषा आगे भी सबसे समृद्ध भाषा होगी। संस्कृत भाषा भाषाओं की संजीवनी भाषा है जो सभी

भाषाओं को जीवन देती है।

ये विचार दिल्ली संस्कृत अकादमी दिल्ली सरकार द्वारा सर्वोदय कन्या विद्यालय, विकासपुरी नई दिल्ली में दिल्ली शिक्षा निदेशालय के "पश्चिम ए मण्डल" की छः दिवसीय संस्कृत प्रतियोगिताओं के पुरस्कार वितरण के अवसर पर अकादमी के सचिव डॉ. जीतराम भट्ट ने व्यक्त किये। डॉ. भट्ट ने आगे कहा कि संस्कृत सबसे समृद्ध एवं वैज्ञानिक भाषा है। संस्कृत भाषा भारतीय संस्कृति के साथ विश्व की महान संस्कृतियों का भी आधार। संस्कृत को सभी वर्गों के युवाओं से जोडने के लिये प्रतियोगिता से बढ कर कोई माध्यम नहीं है। दिल्ली के हर क्षेत्र में संस्कृत विषय में इस प्रकार के कार्यक्रमों में प्रतिभागियों की संख्या देख कर संस्कृत के विकास की नई सम्भावनायें दिखाई दे रही है ।

इस अवसर पर गार्गी सर्वोदय कन्या विद्यालय ग्रीनपार्क ऐक्टेनशन की प्रधानाचार्या श्रीमती मनीषा मलहोत्रा ने कहा संस्कृत प्रयोग में न लिये जाने के कारण कठिन लगती है जबकि बहुत सरल भाषा है। संस्कृत भाषा भारतीय संस्कृति, संस्कार तक ही सीमित नहीं है यह ज्ञान विज्ञान की भी भाषा है। सातवी जनरेशन के कम्प्यूटर पर किये जा रहे शोध में संस्कृत पर इस कम्प्यूटर पर विशेष जोर दिया जा रहा है। संस्कृत के महत्त्व को समझते हुये विदेशों में प्राईमरी स्तर से ही संस्कृत को पढाये जाने की व्यवस्था की गई है।

अकादमी द्वारा आयोजित इन प्रतियोगिताओं में श्लोक संगीत प्रतियोगिता (लडकियों के लिये) जिसमें 108 छात्राओं को, श्लोकोच्चारण में 54 छात्रों को, संस्कृत काव्वालि प्रतियोगिता के 48 छात्र–छात्राओं को, संस्कृत वाद विवाद में 20 छात्र–छात्राओं को, संस्कृत भाषण में 20 छात्र–छात्राओं को तथा एकल श्लोक संगीत प्रतियोगिता में 25 छात्र–छात्राओं को को नकद राशि एवं प्रमाण पत्र दे कर सम्मानित किया गया।

इस अवसर पर विद्यालय की प्रधानाचार्या एवं मण्डल की संयोजिका श्रीमती नीति तियारी ने कहा कि अकादमी की ओर से संस्कृत भाषा के विकास एवं प्रचार प्रसार के लिये इस मण्डल में आयोजित की जाने वाली अकादमी की छः दिनों तक चलने वाली विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन हमारे विद्यालय में किया गया। जिसमें विभिन्न विद्यालयों के छात्र–छात्राओं ने भाग लिया। आज पुरस्कार प्राप्त करने के लिये मण्डल स्तर पर इन प्रतियोगिताओं में भाग लेने वाले सभी प्रतिभागियों को पुरस्कार लेने के लिये आमंत्रित किया गया था। दिल्ली संस्कृत अकादमी दिल्ली में संस्कृत भाषा को लोक प्रिय बनाने के लिये अपने स्तर पर अनेक कार्यक्रमों का आयोजन करती है आप लोगों ने अधिक से अधिक संख्या में अकादमी के कार्यक्रमों में सहभागिता की। सभी प्रतियोगिताओं में इस मण्डल के 275 छात्र–छात्राओं को आज पुरस्कृत किया गया।

इस अवसर पर अनेक संस्कृत प्रेमी महानुभाव भी उपस्थित थे।

दिनांक 04.12.2019

संस्कृत भाषा में निहित ज्ञान का महत्व सबको पता है – डॉ. जीतराम भट्ट
विज्ञान के सूत्रों का वर्णन संस्कृत साहित्यों में मिलता है –डॉ. जीतराम भट्ट
मध्य मण्डल की संस्कृत प्रतियोगिताओं के प्रतिभागियों को पुरस्कृत किया गया

– हंसराज मोदी

संस्कृत भाषा में लिखित साहित्यों मे हर प्रकार का ज्ञान विज्ञान है। आज के विज्ञान को संस्कृत से ही मूल चिन्तन मिल रहा है। विज्ञान के सूत्रों का उल्लेख संस्कृत साहित्यों में मिलता है। शून्य आर्य भट्ट ने दिया। सर्जरी महर्षि सुश्रुत ने परमाणु संरचना आचार्य कणाद ने गुरुत्वाकर्षण भास्कराचार्य ने पाईथागोरस प्रमेय बौधायन ने तथाधातुर्मी तथा रसायन के सूत्र नागार्जुन ने दिये हैं। इसी प्रकार पाई दशमलव आदि का ज्ञान भी संस्कृत के आचार्यों ने दिया है। संस्कृत विषय में रोजगार की अपार सम्भावनायें हैं।

ये विचार दिल्ली संस्कृत अकादमी दिल्ली सरकार द्वारा राजकीय प्रतिभा विकास विद्यालय, लिंक रोड करोल बाग, नई दिल्ली में दिल्ली शिक्षा निदेशालय के मध्य मण्डल की छः दिवसीय संस्कृत प्रतियोगिताओं के पुरस्कार वितरण समारोह के अवसर पर अकादमी के सचिव डॉ. जीतराम भट्ट ने व्यक्त किये। डॉ. भट्ट ने आगे कहा कि कठिन परिश्रम के बिना प्रतिभा का अस्तित्व धुंधला हो जाता है बडी मेहनत का कोई पर्याय नहीं है। संस्कृत हमें हमेशा इस बात के लिये मार्ग दर्शन देती रहती है कि आप किसी जटिल स्थिति से शान्ति से निपटने में कितने सक्षम हैं। संस्कृत विषय अन्य विषयों की अपेक्षा अधिक रोजगार परक विषय है। संस्कृत की जीवन में कितनी आवश्यकता है इसकी समृद्धि से आप सभी परिचित हैं। इस मण्डल की संस्कृत प्रतियोगिताओं में भाग ले कर पुरस्कृत होने वाले सभी विद्यालयों के छात्र छात्राओं को शुभकामनाएें।

इस अवसर पर प्रतिभा विकास विद्यालय के प्रधानाचार्य एवं मण्डल के संयोजक डॉ. हंसराज मोदी ने कहा कि मध्य मण्डल के सभी विद्यालयों को इन प्रतियोगिताओं के बारे में विभिन्न माध्यमों से जानकारी भेजी गई थी। मण्डल के अधिक से अधिक विद्यालयों को भाग लेने के लिये प्रोत्साहित किया गया। प्रतियोगिताओं के माध्यम से शिक्षा के स्तर में भी गुणवत्ता आयेगी। दिल्ली संस्कृत अकादमी दिल्ली में संस्कृत भाषा को लोक प्रिय बनाने के लिये शिक्षा निदेशालय के सभी 13 मण्डलों में संस्कृत की छः प्रतियोगितायें आयोजित की गई। आज मध्य मण्डल की प्रतियोगिताओं का पुरस्कार वितरण किया गया। इन प्रतियोगिताओं में श्लोक संगीत, संस्कृत काव्यालि, श्लोकोच्चारण, संस्कृत वाद विवाद, संस्कृत भाषण एवं एकल श्लोक संगीत प्रतियोगितायें थी। डॉ. मोदी ने आगे कहा कि विश्व में आज भी भारतीय संस्कृति, संस्कार एवं संस्कृत भाषा का महत्व सबसे अधिक है। युवा वर्ग में संस्कृत भाषा के प्रति उत्साह बढ़ाने के लिये निरन्तर इस प्रकार की प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाना जाना चाहिये। संस्कृत भाषा विश्व में सबसे सुदृढ़ एवं वैज्ञानिक सम्मत भाषा है। जो भी व्यक्ति संस्कृत भाषा से जुड़ता है वह स्वंम संस्कारित हो जाता है। इस अवसर पर अनेक संस्कृत प्रेमी महानुभाव भी उपस्थित थे ।

दिनांक 06.12.2019

प्राचीन धरोहर एवं नवीन तकनीकी ज्ञान को साथ लेकर चलना होगा – अरब सिंह
संस्कृत को लेकर विज्ञान को समृद्ध किया जा सकता है –डॉ. जीतराम भट्ट
संस्कृति के बिना कोई देश प्रगति नहीं कर सकता है। श्रीमती मनीषा मल्होत्रा

संस्कृत भाषा के ज्ञान को आगे ले जाने के लिये आप जैसे युवा लोगों पर बहुत कुछ निर्भर करता है। संस्कृत भाषा एवं साहित्य में निहित ज्ञान विज्ञान को पाने के लिये विश्व के अनेक देशो में पठन पाठन का कार्य चल रहा है। विश्व विकास के रास्ते पर है पर इस विकास की धारा में विश्व मानवीय मूल्यों को भूल गये हैं तथा एक विकृत विकास की ओर अग्रसर हो रहा है। इस बात को विश्व के विकसित देशो के लोग समझ गये हैं और वे विकास के साथ संस्कारित होने के लिये संस्कृत के महत्व को जानते हुये संस्कृत पढा रहे हैं। संस्कृत भाषा एंव सहित्य में भारतीय संस्कृति का को स्रोत है। भाषा कोई भी हो वह मनुष्य के मन के विचारों की अभिव्यक्ति का आधार है। संस्कृत भाषा ही नही ज्ञान विज्ञान का केन्द है।

ये विचार दिल्ली संस्कृत अकादमी दिल्ली सरकार द्वारा गार्गी सर्वोदय कन्या विद्यालय, ग्रीन पार्क नई दिल्ली में आयोजित दिल्ली शिक्षा निदशालय के दक्षिण मण्डल की छः दिवसीय संस्कृत प्रतियोगिताओं के पुरस्कार वितरण समारोह के मुख्य अतिथि दक्षिण मण्डल के उपशिक्षा निदेशक श्री चौधरी अरब सिंह ने व्यक्त किये।

इस अवसर पर अकादमी के सचिव डॉ. जीतराम भट्ट ने का कि कोई भी देश अपनी प्राचीन धरोहर को समृद्ध किये बिना प्रगति नहीं कर सकता है। प्राचीन ज्ञान विज्ञान पर आधारित था। ज्ञान के साथ साथ हमें सुसंस्कृत होना भी आवश्यक है। विश्व के सभी देश चाहे रूस हो , फ्रान्स हो, जर्मनी हो जापान हो सभी देश विकास के साथ साथ अपनी संस्कृति को भी साथ लेकर चलते हैं। आज जब हम जीवन के अहम निर्णय लेते हैं तो हमें अपने छात्र जीवन में ग्रहण की गई संस्कृत शिक्षा से जो ज्ञान अर्जित किया उसके माध्यम से हर कायम को सफलता से पूरा कर लेते हैं। आप लोगों को भी संस्कृत में छुपा ज्ञान को सीखने का प्रयास करना चाहिये। भारतीय ज्ञान प्राचीन काल से ही बहुत समृद्ध रहा है।

इस अवसर पर दक्षिण मण्डल के शिक्षा अधिकारी श्री सिसोदिया ने कहा कि शिक्षा के महानतम केन्द्र भारत में रहे हैं। यदि आधुनिक भारत का सर्वांगीण विकास करना है तो प्राचीन भारतीय धरोहर के

साथ आधुनिक तकनीकी ज्ञान विज्ञान का समन्वय बनाकर चलना होगा । युवा पीढी को संस्कृत एवं विज्ञान कम्प्यूटर आदि सभी का ज्ञान देना आवश्यक है। संस्कृत श्लोकों की संगीतमय प्रस्तुति अपने आप में एक नई अनुभूति देती है। दिल्ली संस्कृत अकादमी को भी निरन्तर अपने प्रयासों से संस्कृत से जुड रही इस युवा पीढी को संस्कृत बोलने का प्रयास करवाना चाहिये। संस्कृत भाषा प्रतियोगिताओं एवं सम्मानों तक ही सीमित न हो इस का व्यापक स्तर विस्तार करने पर जोर देना होगा।

दिनांक 05.12.2019

राष्ट्रीय एकता की पहचान एवं भारतीय संस्कृति का आधार है संस्कृत भाषा – रघुविंदर शौकीन

पश्चिम 'बी'_मण्डल की छः दिवसीय संस्कृत प्रतियोगिताओं के पुरस्कार दिये गये–डॉ. जीतराम भट्ट

दिल्ली संस्कृत अकादमी दिल्ली सरकार द्वारा राजकीय सर्वोदय कन्या विद्यालय, नांगलोई, नई दिल्ली में दिल्ली शिक्षा निदेशालय के 'पश्चिम बी मण्डल" की छः दिवसीय संस्कृत प्रतियोगिताओं के पुरस्कारों का आज वितरण किया गया ।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में नांगलोई क्षेत्र के विधायक श्री रघुविंदर शौकीन ने कहा कि आप लोगों को इस प्रकार से प्रतियोगिताओं में भाग लेते देखने से हमें भी अपना बचपन याद आ रहा है। आप लोगों के लिये अनेक प्रतियोगितायें हैं वर्तमान में प्रतियोगिताओं के लिये सुविधायें भी हर प्रकार की मिल रही है । इन प्रतियोगिताओं में आप को अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करना है। संस्कृत भाषा राष्ट्रीय एकता की पहचान एवं भारतीय संस्कृति का आधार है। श्री शौकीन ने आगे कहा कि आप जो भी प्रतिभागी इन प्रतियोगिताओं में छः दिनों तक विभिन्न प्रतियोगिताओं में भाग लेकर विजेता बने हं। प्रतियोगिता में भाग लेना ही अपने आप में एक श्रेष्ठता है।

इस अवसर पर दिल्ली संस्कृत अकादमी के सचिव डॉ. जीतराम भट्ट ने कहा संस्कृत भाषा के महत्व को इसी बात से लगाया जा सकता है कि आधुनिक भाषाओं में सबसे समृद्ध एवं वैज्ञानिक भाषा है। संस्कृत भाषा भारतीय संस्कृति की आधार है। संस्कृत को युवा वर्ग से जोडने का माध्यम प्रतियोगिता से बढ़ कर कोई नहीं है। दिल्ली सरकार दिल्ली में दिल्ली संस्कृत अकादमी के माध्यम से संस्कृत भाषा के विकास एवं प्रचार प्रसार के लिये अनेक प्रकार की संस्कृत परक गतिविधियों का आयोजन निरन्तर करती आ रही है। इसी क्रम में इस मण्डल की संस्कृत प्रतियोगितायें भी आयोजित की गई थी। संस्कृत भारत के सभी प्रान्तों को जोडने वाली भाषा है।

इस अवसर पर विद्यालय की उप प्रधानाचार्या एवं मण्डल की संयोजिका श्रीमती सीमा शर्मा ने कहा कि अकादमी की ओर से संस्कृत भाषा के विकास एवं प्रचार प्रसार के लिये इस मण्डल में आयोजित अकादमी की ये छः प्रतियोगितायें छः दिनों तक चली। आयोजित की जाने वाली प्रतियोगितायें श्लोक संगीत, संस्कृत काव्वाली, श्लोकोच्चारण, संस्कृत वाद विवाद, संस्कृत भाषण एवं एकल श्लोक संगीत प्रतियोगितायें शामिल थी।

अकादमी द्वारा आयोजित इन प्रतियोगिताओं में इस मण्डल के 50 विद्यालयों के 1000 से अधिक प्रतिभागियों को पुरस्कृति किया गया। इस अवसर पर अनेक संस्कृत प्रेमी महानुभाव भी उपस्थित थे

इस अवसर पर कार्यक्रम के बारे मे बताते हुऐ विद्यालय की प्रधानाचार्या एवं मण्डल की संयोजिका श्रीमती मनीषा मल्होत्रा ने कहा कि आज से इस मण्डल की संस्कृत प्रतियोगिताओं में श्लोक संगीत, श्लोकोच्चारण, संस्कृत काव्यालि, संस्कृत वाद विवाद, संस्कृत भाषण एवं एकल श्लोक संगीत प्रतियोगितायें आयोजित की गई थी। इन प्रतियोगिताओं में भाग लेने वाले 425 से अधिक प्रतिभागियों को आज नकद राशि एवं प्रमाण पत्र से सम्मानित किया गया।

इस अवसर पर अनेक संस्कृत प्रेमी एवं गणमान्य लोग भी उपस्थित थे ।

दिनांक 07.12.2019?

गीता हमें जीवन में अनेक प्रकार का ज्ञान देती है –डॉ. जीतराम भट्ट
संस्कृत पढने से आन्तरिक चिन्तन बढता है–डॉ. समरभानु
उत्तर पूर्व मण्डल की छः दिवसीय संस्कृत प्रतियोगिताओं के पुरस्कारों का वितरण किया गया– डॉ. कृष्णमोहन त्रिपाठी

दिल्ली सरकार ने दिल्ली में भाषाओं के विकास एवं प्रचार प्रसार के लिये दिल्ली अनेक अकादमियों की स्थापना की है। संस्कृत भाषा के लिये संस्कृत अकादमी की स्थापना की गई है। संस्कृत अकादमी प्रति वर्ष संस्कृत को जनमानस की भाषा बनाने और आम लोगों तक संस्कृत को पहुँचाने के लिये अनेक प्रकार की गतिविधियों को आयोजित करती है। संस्कृत विश्व की सबसे प्राचीन भाषा के साथ साथ आधुनिक विज्ञान की भाषा है। इस भाषा की महत्ता इसी बात से लगाई जा सकती है कि आधुनिक भाषाओं में सबसे समृद्ध एवं वैज्ञानिक भाषा है। संस्कृत अकादमी द्वारा इस प्रकार के कार्यक्रमों के माध्यम से युवा वर्ग को नई चेतना मिलेगी। संस्कृत को पढने से आत्म चिन्तन का विकास होता है।

ये विचार दिल्ली संस्कृत अकादमी दिल्ली सरकार द्वारा गांधी मेमोरियल राजकीय सर्वोदय बाल विद्यालय शाहदरा दिल्ली में आयोजित "उत्तर पूर्व" मण्डल की छः दिवसीय संस्कृत प्रतियोगिताओं के पुरस्कार वितरण समारोह के मुख्य अतिथि शिक्षा निदेशालय के उप शिक्षानिदेशक डॉ. समरभानु ने व्यक्त किये। डॉ. समरभानु ने आगे कहा कि भारतीय संस्कृति का आधार ही संस्कृत भाषा है। संस्कृत को सभी वर्गों के युवाओं से जोडने का माध्यम प्रतियोगिता से बढ़ कर कोई नहीं है। युवा वर्ग का आज जो उत्साह मुझे दिखाई दे रहा इस उत्साह संस्कृत को नई उर्जा मिलेगी ।

इस अवसर पर अकादमी के सचिव डॉ. जीतराम भट्ट ने कहा कि संस्कृत में अनेक ज्ञान परक ग्रन्थ लिखे गये हैं जो कि शुद्ध रूप से विज्ञान के प्रयोगों पर आधारित हैं इस ज्ञान को लोगों तक पहुचाने के लिये हमें निरन्तर अपने स्तर पर शोध कार्य करने की जरूरत है। गीता हमें जीवन में अनेक प्रकार का ज्ञान देती है। इस लिये अपने जीवन को आगे बढाने के लिये गीता का अवश्य अध्ययन करें। अकादमी द्वारा

आयोजित इस मण्डल की प्रतियोगिताओं में 120 विद्यालयों के 875 से अधिक प्रतिभागियो को नकद पुरस्कार एवं प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया गया। श्लोक संगीत प्रतियोगिता में 312, श्लोक उच्चारण प्रतियोगिता में 216, संस्कृत काव्याालि प्रतियोगिता में 156, संस्कृत वाद विवाद प्रतियोगिता में 50, एकल श्लोक संगीत प्रतियोगिता में 83 तथा संस्कृत भाषयें प्रतियोगिता में 58 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

इस अवसर पर मण्डलीय प्रतियोगिताओं के संयोजक एवं विद्यालय का प्रधानाचार्य डॉ. कृष्णमोहन त्रिपाठी ने प्रतियोगिताओं के बारे में विस्तार से बताते हुए कहा कि इन प्रतियोगिताओं में इस मण्डल के सभी विद्यालयों को आमंत्रित किया गया था। दिल्ली संस्कृत अकादमी निरन्तर इस प्रकार की प्रतियोगिताओं का आयोजन करती रहती है। इसी क्रम में इस मण्डल में ये प्रतियोगिताएँ आयोजित की गई। आज सभी प्रतिभागियों एवं विजेता छात्रों को पुरस्कृत किया गया। संस्कृत भाषा के लिये सम्मान लेने वाले सभी प्रतिभागियों को जीवन में संस्कृत के विषय में हर समय अग्रसर होने की प्रेरणा देता है।

इस अवसर पर अनेक संस्कृत प्रेमी महानुभाव भी उपस्थित थे।

दिनांक 09.12.2019

संस्कृत प्रतियोगिताओं के कारण दिल्ली में संस्कृतमय वातावरण बनाया गया

–डॉ० जीतराम भट्ट

संस्कृत के 500 से अधिक छात्र–छात्राओं को सम्मानित किया गया– श्रीमती पूनम आनन्द

विश्व प्रगति में संस्कृत साहित्य का बहुत बड़ा योगदान है। आज चाहे आर्थिक प्रगति हो या औद्योगिक प्रगति हो इस में संस्कृत साहित्यो में निहित ज्ञान विज्ञान का पूर्ण योगदान रहा है। परन्तु इस प्रगति में सस्कारों की कमी है जिस कारण यह प्रगति अब विश्व के लोगों को कमी लगती है। भारतीय संस्कृति एवं संस्कार विश्व में सर्वोपरि माना जाता है। रामायण भारतीय संस्कृति की ऐसी पुस्तक है जिसमें भारतीय संस्कृत एवं संस्कारों का पूर्णरूप से वर्णन मिलता है। भारतीय संस्कृति, संस्कार एवं संस्कृत भाषा विश्व में सबसे प्राचीन एवं आज भी सबसे अहम हैं। हमारी संस्कृति विश्व को अनेक शिक्षायें देती आ रही है। भारत का इतिहास लम्बा एवं अनेक प्रतिभाओं से भरा हुआ है।

ये विचार दिल्ली संस्कृत अकादमी दिल्ली सरकार द्वारा राजकीय प्रतिभा विकास विद्यालय लाजपत नगर नई दिल्ली में "दक्षिण पूर्व" मण्डल की छः दिवसीस संस्कृत प्रतियोगिताओं के पुरस्कार वितरण समारोह के अवसर पर दिल्ली संस्कृत अकादमी के सचिव डॉ. जीतराम भट्ट ने व्यक्त किये। श्री भट्ट ने आगे कहा कि संस्कृत के प्रचार से हमारी संस्कृति के साथ साथ हमारा प्राचीन ज्ञान विज्ञान भी लोगों तक पहुंच पायेगा। हमारे देश में प्राचीन काल से ही उत्कृष्ट शिक्षा के केन्द रहे हैं। शिक्षा के लिये शिक्षकों एवं छात्रों का महत्त्वपूर्ण योगदान होता है। युवा वर्ग का जिस प्रकार से संस्कृत के प्रति उत्साह है इस उत्साह में दिल्ली संस्कृत अकादमी का सबसे बड़ा योगदान है।" "अकादमी दिल्ली के शिक्षा निदेशालय के सभी 13 मण्डलों में संस्कृत की छः प्रतियोगिताओं का आयोजन करती है जिसमें हजारों की

संख्या में बच्चे भाग लेकर अपनी प्रतिभा दिखाते है। भारतीय संस्कृति अनन्त काल से चली आ रही है और विश्व की सबसे प्राचीन संस्कृति एवं सभ्यता है। संस्कृत भाषा भी सबसे पुरानी भाषा है। भाषा मनुष्य के मन के विचारों की अभिव्यक्ति का आधार भाषा है। भाषा की समृद्धि भाषा बोलने एवं प्रयोग करने वालों की संख्या पर निर्भर करता है। हम सभी संस्कृतज्ञों एवं प्रतियोगिता में भाग लेने वाले प्रतिभागियों से पहले प्रयास करना चाहिये कि दैनिक जीवन में हम अधिक से अधिक प्रयोग संस्कृत भाषा का करें। संस्कृत भाषा का प्रयोग करने से पारम्भिक स्तर पर परेशानियां तो आयेंगी परन्तु धीरे धीरे परस्थितियां सामान्य होने लगेंगी। संस्कृत भाषा हमारे संस्कारों के साथ साथ हमारे ज्ञान विज्ञान की भाषा है।

कार्यक्रम के बारे में बताते हुए मण्डल की संयोजका विद्यालय की उप प्रधानाचार्या श्रीमती पूनम आनन्द ने कहा कि 6 दिनों तक इस मण्डल का संस्कृत प्रतियोगितायें आयोजित की गई थी जिसमें इस मण्डल के सभी विद्यालयों को इन प्रतियोगिताओं में भाग लेने के लिये आमन्त्रित किया गया था। आज इन प्रतियोगिताओं मं भाग लेने वाले 500 से अधिक प्रतिभागियों को नकद राशि एवं प्रमाण पत्र से सम्मानित किया गया। इस अवसर पर दक्षिण मण्डल के अनेक प्रधानाचार्य, शिक्षक तथा क्षेत्रीय लोग भी उपस्थित थे।

दिनांक 10.12.2019

संस्कृत भाषा से श्रेष्ठ संस्कृति एवं समाज का निर्माण होता है –प्रमिला टोकस
संस्कृत भाषा के विकास एवं प्रचार प्रसार के लिये इन प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गय– डॉ. जीतराम भट्ट
संस्कृत भाषा के विकास के लिये हर स्तर पर प्रयास करने की जरूरत है – अर्जुन सिंह

दिल्ली संस्कृत अकादमी, दिल्ली सरकार द्वारा राजकीय सह शिक्षा विद्यालय आर. के पुरम सेक्टर –6 नई दिल्ली में दिल्ली शिक्षा निदेशालय के दक्षिण पश्चिम "ए" मण्डल की छः दिवसीय संस्कृत प्रतियोगिताओं के पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन किया गया। पुरस्कार वितरण के अवसर पर प्रतिभागियों को सम्बोधित करते हुये दिल्ली विधान सभा सदस्य श्रीमती प्रमिला टोकस ने कहा कि व्यक्ति के नैतिक एवं सामाजिक विकास के लिये शिक्षा का महत्वपूर्ण योगदान है। संस्कृत भाषा में निहित ज्ञान विज्ञान व्यक्ति के व्यक्तित्व को आगे ले जाने का काम करती है। संस्कृत शिक्षा से श्रेष्ठ संस्कृति एवं समाज का निर्माण होता है। हमारे देश की साक्षरता निरन्तर बढती जा रही है। शिक्षा के लिये घर का वातावरण सबसे अधिक सहायक होता है। इस वातावरण को बनाने में माता पिता एवं शिक्षकों की भूमिका निशन्देह अग्रणीय होती है। संस्कृत हमारे संस्कार के साथ साथ ज्ञान विज्ञान भी हैं। संस्कृति एवं संस्कारों को बचाये रखने के लिये हमें सबसे पहले संस्कृत के पठन–पाठन पर ध्यान देते हुये इसे समाज में हर व्यक्ति तक पहुँचाना होगा। संस्कारित शिक्षा तभी मिलेगी जब संस्कृत का विकास होगा।

इस अवसर पर अकादमी के सचिव डॉ. जीतराम भट्ट ने कहा कि अकादमी द्वारा संस्कृत भाषा के विकास एवं प्रचार प्रसार के लिये दिल्ली में अनेक स्थानों पर विभिन्न प्रकार के संस्कृत विषयक कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता रहता है। जिससे सम्पूर्ण दिल्ली के संस्कृतमय बनाने का प्रयास किया जाता है। अकादमी ने दिल्ली के शिक्षा निदेशालय के सभी 13 मण्डलों में संस्कृत की छः प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जिस में हजारों की संख्या में बच्चों ने भाग लेकर अपनी प्रतिभा दिखाई उन्हीं प्रतिभावान प्रतिभागियों को आज पुरस्कृत किया जा रहा है। जो पुरस्कृत हुए उनको भी और जिन्होने भाग लिया उनको भी अकादमी की ओर से शुभकामनाऐं। प्रतिभागी छात्र/छात्रायें एवं शिक्षक जिन्होंने बडे ही मनोयोग से प्रतिभागियों को तैयार कराया वे संस्कृत अकादमी की ओर से बधाई के पात्र हैं। शिक्षा के लिये शिक्षकों एवं छात्रों का महत्त्वपूर्ण योगदान होता है। युवा वर्ग का जिस प्रकार से संस्कृत के प्रति उत्साह है इस उत्साह में दिल्ली संस्कृत अकादमी का सबसे बड़ा योगदान है।" आज इस मण्डल के 300 से अधिक प्रतिभागियों को नगद राशि एवं प्रमाण पत्र से पुरस्कृत किया गया।

इस अवसर पर दक्षिण पश्चिम ए मण्डल के ओ एस डी श्री अर्जुन सिंह ने कहा कि "प्रतियोगिताएँ किसी व्यक्ति के मानसिक विकास के लिये निरन्तर होनी आवश्यक है। युवा वर्ग को संस्कृत प्रतियोगिताओं की ओर जितनी कम उम्र से भाग लेने के लिये प्रेरित किया जाय उतना ही वे आगे सफल होंगे। अकादमी द्वारा इस प्रकार का प्रयास संस्कृत के विकास के लिये प्रेरणादायक है। आज संस्कृत की विभिन्न प्रतियोगिताओं में भाग लेने वाले 300 से अधिक प्रतिभागियों को नकद पुरस्कार से सम्मानित किया जा रहा है।

कार्यक्रम के बारे में बताते हुए मण्डल की संयोजक विद्यालय के उप–प्रधानाचार्या श्री नरेन्द्र कुमार ने कहा कि 6 दिनों तक इस मण्डल में प्रतियोगितायें हुई थी उन प्रतिभागियों को आज सम्मानित किया जा रहा है। संस्कृत भाषा के विकास के लिये हर स्तर पर प्रयास करने की जरूरत है। जब दिल्ली सरकार ने संस्कृत भाषा के विकास के लिये जो जिम्मेदारी मुझे दी उसे मैंने अच्छे तरह से निभाने की पूरी कोशिश की। इस अवसर पर अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

दिनांक 11.12.2019

संस्कृत केवल स्वविकसित भाषा नहीं बल्कि संस्कारित भाषा है –डॉ. कान्ता भाटिया
संस्कृत भाषा से श्रेष्ठ संस्कृति एवं समाज का निर्माण होता है
– डॉ. जीतराम भट्ट

'संस्कृत केवल स्वविकसित भाषा नहीं बल्कि संस्कारित भाषा है इसीलिए इसका नाम संस्कृत है। संस्कृत को संस्कारित करने वाले भी कोई साधारण भाषाविद् नहीं बल्कि महर्षि पाणिनि, महर्षि कात्यायन और योग शास्त्र के प्रणेता महर्षि पतंजलि हैं। इन तीनों महर्षियों ने बड़ी ही कुशलता से योग की क्रियाओं

भाषा में समाविष्ट किया है।' यही इस भाषा का रहस्य है। इस भाषा को सभी महत्वपूर्ण क्रियायों से युक्त बनाया गया है।

ये विचार दिल्ली संस्कृत अकादमी, दिल्ली सरकार द्वारा राजकीय प्रतिभा विकास विद्यालय सेक्टर–10, द्वारका नई दिल्ली में दिल्ली शिक्षा निदेशालय के दक्षिण पश्चिम "बी" मण्डल की छः दिवसीय संस्कृत प्रतियोगिताओं के पुरस्कार वितरण समारोह के अवसर पर अकादमी की उपाध्यक्षा डॉ. कान्ता भाटिया ने व्यक्त किये। डॉ. भाटिया ने आगे कहा कि सरकार का अर्थ ही सबके लिये होता है। दिल्ली सरकार जो भी कार्य करती है वह सबके लिये होता है। वर्तमान दिल्ली सरकार ने शिक्षा को सबसे अधिक महत्त्व दिया है। दिल्ली में शिक्षा के स्तर को बेहतर बनाने के लिये सरकार ने सभी प्रयास किये और आगे भी जारी रखेगी।

इस अवसर पर अकादमी के सचिव डॉ. जीतराम भट्ट ने कहा "प्रतियोगिताएँ किसी व्यक्ति के जीवन के लिये उसके मानसिक विकास को आगे ले जाने के लिय निरन्तर होनी आवश्यक है। संस्कृत भाषा में वर्णित संगीत शास्त्र के वारे में छात्रों को जानकारी देते हुऐ डॉ. भट्ट ने कहा कि 'भारतीय शास्त्रीय संगीत के सातों स्वर हमारे शरीर के सातों उर्जा चक्रों से जुड़े हुए हैं। प्रत्येक का उच्चारण सम्बंधित उर्जा चक्र को क्रियाशील करता है। शास्त्रीय राग इस प्रकार से विकसित किये गए हैं जिससे उनका उच्चारण/गायन विशिष्ट उर्जा चक्रों को सक्रिय करके चेतना के स्तर को उर्ध्वीकृत करे। प्रत्येक राग मनुष्य की चेतना को विशिष्ट प्रकार से उर्ध्वीकृत करने का सूत्र है। इनका सही अभ्यास व्यक्ति को असीमित ऊर्जावान बना देता है। अकादमी द्वारा आज इस मण्डल के 500 से अधिक छात्र–छात्राओं को नकद राशि एवं प्रमाण पत्र से सम्मानित किया गया। इस प्रतियोगिताओं में जो पुरस्कृत हुए उनको भी और जिन्होंने भाग लिया उनको भी अकादमी की ओर से शुभकामनाएं। प्रतिभागी छात्र/छात्रायें एव शिक्षक जिन्होंने बडे ही मनोयोग से प्रतिभागियों को तैयार कराया वे संस्कृत अकादमी की ओर से बधाई के पात्र हैं। शिक्षा के लिये शिक्षकों एवं छात्रों का महत्त्वपूर्ण योगदान होता है। युवा वर्ग का जिस प्रकार से संस्कृत के प्रति उत्साह है इस उत्साह में दिल्ली संस्कृत अकादमी का सबसे बडा योगदान है।

कार्यक्रम के बारे में बताते हुए मण्डल के संयोजक विद्यालय के प्रधानाचार्या डॉ. राजपाल सिंह ने कहा कि नवम्बर में 6 दिनों तक इस मण्डल प्रतियोगितायें हुई मण्डल के सभी विद्यालयों को इन प्रतियोगिताओं में भाग लेने के लिये आमंत्रित किया गया था। इन प्रतियोगिताओं में इस वर्ष इस मण्डल के 55 विद्यालयों के 500 से अधिक छात्र–छात्राओं ने भाग लिया जिन्हे आज सम्मानित किया जा रहा है। आज इन प्रतियोगिताओं में विजेता एवं भाग लेने वाले सभी प्रतिभागियों को सम्मानित किया गया। इस अवसर पर अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

दिनांक 13.12.2019

नासा की वेबसाईट पर जाकर संस्कृत के महत्व को जरूर पढ़ें –डॉ. जीतराम भट्ट

छः दिवसीय संस्कृत प्रतियोगिताओं के 500 से अधिक प्रतिभागियों को पुरस्कृत किया गया–डॉ. सरिता बत्रा

संस्कृत की सर्वोत्तम शब्द–विन्यास युक्ति के, गणित के, कम्प्यूटर आदि के स्तर पर नासा व अन्य वैज्ञानिक व भाषाविद संस्थाओं ने भी इस भाषा को एकमात्र वैज्ञानिक भाषा मानते हुये इसका अध्ययन आरंभ किया है' और भविष्य में भाषा–क्रांति के माध्यम से आने वाला समय संस्कृत का बताया है। अतः जो लोग संस्कृत में दोष गिनाते हैं उन्हें अपनी इस सोच से बाहर निकलकर संस्कृत की वैज्ञानिकता का एवं संस्कृत के विषय में विश्व के सभी विद्वानों का मत जानना चाहिए। आप लोग भी 'नासा की वेबसाईट पर जाकर संस्कृत का महत्व पढ़ें।' वैज्ञानिकों ने संस्कृत भाषा को कम्प्यूटर की सबसे बेहतर भाषा माना है। अन्य भाषाओं के मुकाबले संस्कृत भाषा बोलने में कम शब्दों का प्रयोग होता है। सारी दुनिया संस्कृत की महिमा समझ कर संस्कृत सीखना चाह रही है और अपने देश के विद्यालयों के पाठ्यक्रम में संस्कृत को जोड़ रही है।

ये विचार दिल्ली संस्कृत अकादमी दिल्ली सरकार द्वारा राजकीय प्रतिभा विकास विद्यालय, शालीमार बाग, दिल्ली में दिल्ली शिक्षा निदेशालय के उत्तर पश्चिम मण्डल ए की छः दिवसीय संस्कृत प्रतियोगिताओं के पुरस्कार वितरण समारोह के अवसर पर अकादमी के सचिव डॉ. जीतराम भट्ट ने व्यक्त किये। डॉ. भट्ट ने आगे कहा कि दिल्ली संस्कृत अकादमी द्वारा इन प्रतियोगिताओं को मण्डल स्तर पर आयोजित करने का मुख्य कारण है कि संस्कृत प्रतियोगिताओं में अधिक से अधिक विद्यालय अपने अपने छात्रों को इन प्रतियोगिताओं में भाग लेने के लिये प्रेरित कर उनकी प्रतिभा को विकसित करने का प्रयास करें। प्रतियोगिताओं में श्लोक संगीत, श्लोक उच्चारण, संस्कृत काव्वालि, वाद विवाद, भाषण एवं एकल श्लोक संगीत थी। आज इस मण्डल 500 से अधिक प्रतिभागियों को संस्कृत की प्रतियोगिताओं में भाग लेने के लिये नकद राशि एवं प्रमाण पत्र से सम्मानित किया गया।

इस अवसर पर विद्यालय की प्रधानाचार्या एवं मण्डल की संयोजिका श्रीमती सरिता बत्रा ने कहा कि विश्व के समग्र विकास एवं नया चिन्तन ही भारतीय संस्कृति का आधार है। संस्कृत में अनेक प्रकार के विषयों का समावेश है। युवा छात्र–छात्राओं को संस्कृत से जोड़ने के लिये इस प्रकार के कार्यक्रमों का आयोजन कर संस्कृत अकादमी पूरे वर्ष युवा छात्रों को संस्कृत से जोडने का कार्य करती है। हमारी संस्कृति, ज्ञान विज्ञान एवं धरोहर संस्कृत भाषा है। इस प्रकार की प्रतियोगिताओं के माध्यम से युवा वर्ग को संस्कृत से जुड़ने का अवसर मिला। युवा वर्ग में संस्कृत भाषा के प्रति उत्साह बढ़ाने के लिये निरन्तर इस प्रकार की प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाता रहा है। हमने इस मण्डल के सरकारी, प्राईवेट आदि सभी विद्यालयों को ईमेल एवं डाक द्वारा प्रतियोगिताओं के आयोजन की सूचना भेजी थी जिससे इन प्रतियोगिताओं में कई विद्यालयों के

छात्र–छात्राओं ने विभिन्न संस्कृत विषयक प्रतियोगिताओं में भाग लिया। जो प्रतिभावान छात्र पुरस्कृत हो रहे हैं वे भारत के गौरव को आगे भी इसी प्रकार से बढ़ाते रहेंगे। इस अवसर पर अनेक संस्कृत प्रेमी महानुभाव भी उपस्थित थे।

दिनांक 14.12.2019

आदि काल से ही संस्कृत ने भारत को एक सूत्र में रखा है –डॉ. जीतराम भट्ट

संस्कृत हमें राष्ट्रीय एकता का भाव सिखाती है –श्री उपेन्द्र दुबे

जब किसी समाज में सारे व्यक्ति किसी निर्दिष्ट भौगोलिक सीमा के अन्दर अपने पारस्परिक भेद–भावों को भुलाकर सामूहीकरण की भावना से प्रेरित होते हुए एकता के सूत्र बन्ध जाते हैं तो उसे राष्ट्र के नाम से पुकारा जाता है। राष्ट्रवादीयों का मत है " व्यक्ति राष्ट्र के लिए है राष्ट्र व्यक्ति के लिए नहीं " इस दृष्टि से प्रत्येक व्यक्ति अपने राष्ट्र का अभिन्न अंग होता है। राष्ट्र से अलग होकर उसका कोई अस्तित्व नहीं होता है। अतः प्रत्येक व्यक्ति का कर्तव्य है कि वह राष्ट्र की दृढ़ता तथा अखंडता को बनाये रखने में पूर्ण सहयोग प्रदान करे एवं राष्ट्र को शक्तिशाली बनाने के लिए राष्ट्रीय एकता की भावना परम आवश्यक है।

ये विचार दिल्ली संस्कृत अकादमी दिल्ली सरकार द्वारा झण्डेवालान करोल बाग में आयोजित "राष्ट्रीय एकता मं संस्कृत भाषा का योगदान" विषय पर आयोजित संगोष्ठी का शुभारम्भ करते हुये अकादमी के सचिव डॉ. जीतराम भट्ट ने व्यक्त किये। डॉ. भट्ट ने आगे कहा कि भारत की राष्ट्रीय एकता के मूल आधारों मे संस्कृत भाषा निसंदेह सर्व प्रथम है। संस्कृत भारत में उत्तर से लेकर दक्षिण एवं पूर्व से लेकर पश्चिम तक हर प्रान्त हर स्थान पर सम्मानित भाषा है। भारतीय संस्कृति जिसमें सभी रीति रिवाजों को संस्कृत के द्वारा ही आगे चलाये जाते हैं। इस कारण इस भाषा से किसी का भी किसी प्रकार का कोई विरोध नहीं है। आदि काल से ही संस्कृत ने भारत को एक सूत्र में रखा है। आज भी राष्ट्र को एक सूत्र में बनाये रखने में संस्कृत सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण है। देश के विकाश में भी सरंकृत का योगदान सबसे अधिक है।

इस अवसर पर श्री उपेन्द्र दुबे ने कहा कि संस्कृत हमें यह सिखाती है कि राष्ट्रीयता एक ऐसा भाव अथवा शक्ति है जो व्यक्तियों को अपने व्यक्तिगत हितों को त्याग कर राष्ट्र कल्याण के लिए प्रेरित करती है। देश प्रेम की भावना तो प्राचीन काल से ही चली आ रही है परन्तु आधुनिक समाज में राष्टप्रेम की भावना का जन्म केवल 18 वीं शताब्दी में फ्रांस की महान क्रांति के पश्चात् ही हुआ है। राष्ट्रीयता का अर्थ केवल राज्य के प्रति अपार भक्ति ही नहीं अपितु इसका अभिप्राय राज्य तथा उसके धर्म, भाषा, इतिहास तथा संस्कृति में भी पूर्ण श्रद्धा रखना है। संक्षेप में राष्ट्रीया एकता राष्ट्र के प्रति आपार भक्ति, आज्ञा पालान तथा कर्तव्यपरायणता एवं सेवा है।

इस अवसर पर अनेक गणमान्य व्यक्तियों ने अपने विचार रखे और राष्ट्र की एकता में संस्कृत के भूमिका पर विस्तार से चर्चा की ।

दिनांक 16.12.2019

संस्कृत ज्ञान के साथ संस्कारों की भाषा है। – गीता रावत

संस्कृत के साथ कम्प्यूटर की शिक्षा हो तो नासा में आपका इन्तजार है – रजनी रावल

नई दिल्ली मण्डल की छः दिवसीय संस्कृत प्रतियोगिताओं के पुरस्कार दिये गये –डॉ. जीतराम भट्ट

विश्व को आध्यात्म एवं वैज्ञानिक चिन्तन संस्कृत साहित्य में वर्णित ज्ञान विज्ञान से ही मिलता है। वैदिक मंत्रों में विज्ञान के सूत्र निहित हैं। आज कई ऐसे भी लोग हैं जिन्हें अमृतमयी वाणी संस्कृत में दोष और विदेशी भाषाओं में गुण ही गुण नजर आते हैं वो भी तब जब विदेशी भाषा वाले संस्कृत को सर्वश्रेष्ठ मान रहे हैं। संस्कृत भाषा में रोजगार के सबसे अधिक संभावनएँ हैं। संस्कृत भाषा की महत्ता को इसी बात से लगाया जा सकता है कि आधुनिक भाषाओं में सबसे समृद्ध एवं वैज्ञानिक भाषा है। संस्कृत रोजगार एवं ज्ञान विज्ञान की भी भाषा है। भारतीय संस्कृति का आधार ही संस्कृत भाषा है।

ये विचार दिल्ली संस्कृत अकादमी दिल्ली सरकार द्वारा विद्याभवन महाविद्यालय लोधी स्टेट नई दिल्ली में दिल्ली शिक्षा निदेशालय के नई दिल्ली मण्डल में आयोजित छः दिवसीय संस्कृत प्रतियोगिताओं के प्रतियोगिता पुरस्कार वितरण समारोह में प्रतिभागियों को सम्बोधित करते हुए दिल्ली नगर निगम की सदस्या श्रीमती गीता रावत ने व्यक्त किये।

इस अवसर पर दिल्ली संस्कृत अकादमी सचिव डॉ. जीतराम भट्ट ने कहा कि जब हम अपने बच्चों को कई विषय पढ़ा सकते हैं तो संस्कृत पढ़ाने में संकोच नहीं करना चाहिए। देश विदेश में हुये कई शोधों के अनुसार संस्कृत मस्तिष्क को काफी तीव्र करती है जिससे अन्य भाषाओं व विषयों को समझने में काफी सरलता होती है , साथ ही यह सत्वगुण में वृद्धि करते हुये नैतिक बल व चरित्र को भी सात्विक बनाती है। अतः सभी को यथायोग्य संस्कृत का अध्ययन करना चाहिए। आज दुनिया भर में लगभग 6900 भाषाओं का प्रयोग किया जाता है। लेकिन क्या आपने कभी सोचा है कि इन भाषाओं की जननी कौन है? यह भाषा संस्कृत है। इस अवसर पर डॉ. भट्ट ने आगे कहा कि अक्षर कभी नष्ट नहीं होता है अतः हमें हर शब्द बहुत सोच समझ कर बोलना चाहिये। प्रतियोगिताओं में सभी को सफलता नहीं मिलती पर प्रतिभागियों को आत्म विकास के लिये एक मंच मिलता है। संस्कृत भाषा में गुरू के महत्त्व को सबसे अधिक माना गया है। किसी भी भाषा के शब्द का मूल अर्थ जानने के लिये हमें संस्कृत भाषा का सहारा लेना ही पड़ेगा। अकादमी द्वारा आयोजित इन प्रतियोगिताओं में संस्कृत के अध्यापकों के सहयोग से ही छात्र भाग लेते हैं। अकादमी द्वारा आयोजित इस प्रकार की प्रतियोगिताओं के माध्यम से प्रतिभागियों को अपनी प्रतिभा दिखाने का अवसर मिलता है। नई दिल्ली मण्डल में आयोजित इन प्रतियोगिताओं में श्लोक संगीत, संस्कृत काव्यालि, श्लोकोच्चारण, संस्कृत वाद विवाद, संस्कृत भाषण एवं एकल श्लोक संगीत प्रतियोगितायें थी। आज इस मण्डल के 180 से धिक प्रतिभागियों को नकद राशि एवं प्रमाण पत्र से सम्मानित किया गया है।

इस अवसर पर नई दिल्ली मण्डल की उपशिक्षा निदेशिका श्रीमती रजनी रावल ने कहा कि संस्कृत संस्कारों से जुडी भाषा है। संस्कृत के पठन पाठन में सभी का सहयोग होना चाहिये। संस्कृत एवं कम्प्यूटर का पररस्पर सहयोग आप लोगों को उन्नत जीवन दे देगा। नासा में संस्कृत एवं जानने वाले तथा कम्प्यूटर जानने वालों की बहुत जरूरत है। आप लोग इस मांग को पूरा कर सकते हैं। मेरा विचार है कि दिल्ली संस्कृत अकादमी के साथ मिल कर सेण्टर दिल्ली एवं नई दिल्ली मण्डल के शिक्षकों की संस्कृत भाषा में शब्दों की उत्पति विषय पर एक कार्यशाला का आयोजन किया जाय जा आगे रूपरेखा बना कर किया जायेगा।

इस अवसर पर प्रतियोगिताओं के संयोजक एवं विद्यालय के प्रधानाचार्य डॉ. अशोक कुमार ने कहा कि दिल्ली संस्कृत अकादमी दिल्ली में संस्कृत भाषा को लोक प्रिय बनाने के लिये अपने स्तर पर अनेक कार्यक्रमों का आयोजन करती है आप लोग अधिक से अधिक संख्या में अकादमी के कार्यक्रमों में सहभागिता की। आप लोगों के सहयोग से ही अकादमी संस्कृत को जन जन तक पहुचाने का कार्य करती है।

इस अवसर पर अनेक संस्कृत प्रेमी महानुभाव भी उपस्थित थे।

दिनांक 18.12.2019

संस्कृत भाषा हमारे जीवन में आवश्यक है –गीता रावत
संस्कृत भाषा भारतीय संस्कृति का मूल आधार है। –डॉ. जीतराम भट्ट
पूर्व मण्डल की छः दिवसीय संस्कृत प्रतियोगिताओं का शुभारम्भ आज से –मंजू शर्मा

संस्कृत भाषा हमारे जीवन में आवश्यक है। यह भाषा संस्कारों के साथ ज्ञान एवं विज्ञान दोनों को संचारित करती है। संस्कृत में जितना ज्ञान है वह किसी भाषा में नही है। समय के अनुरूप कार्य करने से ही कार्य की उपयोगिता होती है। यदि समय से हमने संस्कृत भाषा का ज्ञान अर्जित कर दिया तो संस्कृत हमेशा जीवन में साथ देती रहेगी। जीवन का हर क्षण मूल्यवान होता है। जो समय का सदुपयोग करना जानता है वह सफलताओं का द्वार प्राप्त करता है। भारत यदि विश्व में आज जाना जाता है तो वह भारतीय संस्कृति, संस्कार एवं संस्कृत भाषा के कारण जाना जाता है। विश्व में आज भी भारतीय संस्कृति, संस्कार एवं संस्कृत भाषा का महत्व सबसे अधिक है। हमारी संस्कृति विश्व को अनेक ज्ञान विज्ञान एवं शिक्षायें देती आ रही है। भारत के इतिहास में सबसे पहले संस्कृत भाषा का उल्लेख मिलता है। संस्कृत भाषा में अनेक प्रकार की संस्कृत विधाओं से युक्त साहित्यों से समृद्ध है। भारतीय संस्कृति अनन्त काल से चली आ रही है यह विश्व की सबसे प्राचीन संस्कृति एवं सभ्यता है। संस्कृत भाषा सभी भाषाओं की जननी है।

ये विचार दिल्ली संस्कृत अकादमी, दिल्ली सरकार द्वारा शिक्षा निदेशालय के पूर्व मण्डल की छः दिवसीय संस्कृत प्रतियोगिताओं का पुरस्कार वितरण करते हुये मुख्य अतिथि दिल्ली नगर निगम की सदस्या श्रीमती गीता रावत ने व्यक्त किये।

इस अवसर पर दिल्ली संस्कृत अकादमी के सचिव डॉ. जीतराम भट्ट ने कहा कि कहा कि दिल्ली संस्कृत अकादमी दिल्ली में संस्कृत भाषा को लोकप्रिय बनाने के लिये शिक्षा निदेशालय के सभी 13 मण्डलों में अगस्त महीने से क्रमशः संस्कृत की छः प्रतियोगितायें आयोजित की गई थी। आज पूर्व मण्डल की प्रतियोगिताओं के पुरस्कार दिये जा रहे हैं। इन प्रतियोगिताओं में श्लोक संगीत, संस्कृत काव्यालि, श्लोकोच्चारण, संस्कृत वाद विवाद, संस्कृत भाषण एवं एकल श्लोक संगीत प्रतियोगितायें थी।

इस अवसर पर विद्यालय की उप प्रधानाचार्या एवं प्रतियोगिताओं की संयोजिका श्रीमती मंजू शर्मा ने कहा कि युवा वर्ग में संस्कृत भाषा के प्रति उत्साह बढ़ाने के लिये निरन्तर इस प्रकार की प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाना चाहिये। इस मण्डल के सभी विद्यालयों को सूचना भेजी गई है। आज श्लोक संगीत प्रतियोगिता से प्रतियोगिताएँ प्रारम्भ हुई। आज की प्रतियोगिता में मण्डल के 30 विद्यालयों के 240 से अधिक प्रतिभागियों ने भाग लिया। जिसमें सभी प्रतिभागियों ने पुरस्कार प्राप्त किये।

इस अवसर पर अनेक संस्कृत प्रेमी महानुभाव भी उपस्थित थे।

दिनांक 28.12.2019

आधुनिक भारत में सामाजिक चेतना के योगदान की प्रतिमूर्ति थे महात्मा गांधी – डॉ0 जीतराम भट्ट

दिल्ली संस्कृत आकदमी दिल्ली सरकार एवं प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान दिल्ली सरकार के संयुक्त तत्वावधान में करोलबाग नई दिल्ली में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की सामाजिक चेतना पर योगदान विषय पर संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस अवसर पर संस्कृत अकादमी एवं प्रतिष्ठान के अधिकारियो एवं कर्मचारियों ने परिचर्चा के पश्चात कार्यालय परिसर एवं आस पास के लोगों को स्वच्छता एवं गांधी जी की सामाजिक चेतना के प्रति लोगों को जागरूक करने का अभियान चलाया।

इस अवसर पर अकादमी के सचिव डॉ. जीतराम भट्ट ने कहा कि आधुनिक भारत में सामाजिक चेतना पर जितना योगदान महात्मा गांधी का रहा उतना किसी और का नहीं रहा। गांधी जी ने जीवन के विभिन्न आयामों–सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक, शिक्षा इत्यादि में कोई अलगाव नहीं देखा। व्यक्ति और समाज की संपन्नता एवं सर्वांगीण विकास हेतु मनुष्य की मूलभूत आवश्यकताओं का निर्धारण कर उसकी पूर्ति हेतु उत्पादक श्रम की अनिवार्यता का विश्लेषण किया। सभी के लिए बुनियादी जरूरतों की पूर्ति की संकल्पना, शरीर–श्रम, श्रम की पवित्रता, स्वावलंबन एवं परस्पर सहयोग, कृषि एवं कृषि आधारित उद्योगों, हस्तशिल्प एवं कला आधारित अर्थव्यवस्था तथा इन पर आधारित शिक्षा आदि को आधार बनाकर ऐसी समाज व्यवस्था और सामूहिक जीवन पद्धति को प्रस्तुत किया जिसमें व्यक्ति एवं समाज का कल्याण एवं सर्वांगीण विकास हो सके। डॉ. भट्ट ने आगे कहा कि गांधी के सामाजिक दर्शन का आधार यह विचार है कि स्वराज के रूप में सकारात्मक स्वतंत्रता का अर्थ है व्यक्ति की विशिष्टता को स्वीकार किया जाना। सभी व्यक्ति अलग अलग हैं परंतु जन्मना समान है। गांधीजी ने अपने तात्कालिक समाज में तीन महत्त्वपूर्ण

भेदों जाति व्यवस्था, मानसिक व शारीरिक श्रम का भेद, ग्रामीण–शहरी का भेद को देखा जिसका उन्होंने आजीवन विरोध किया।

इस अवसर पर रामप्रपन्नाचार्या वेद वेदांग संस्कृत महाविद्यालय के प्राचार्य श्री मधुर कवि ने कहा कि गांधीजी का उद्देश्य एक अहिंसक समाज का विकास था। अतएव उन्होंने हर उस प्रथा का, विशेषाधिकार, एकाधिकार का विरोध किया जो किसी भी शोषण, दमन, हिंसा, उत्पीड़न पर आधारित हो। वह जाति प्रथा के विरोधी थे। गांधी जी छुआछूत हिंदू समाज में आ घुसे ऊँच–नीच के भेद को समाप्त करने के लिये प्रतिबद्ध थे।

इस अवसर पर अकादमी के उपाध्यक्ष श्री भारत भूषण ने कहा कि गांधी जी को उनके तप एवं तपस्या के कारण ही महात्मा की उपाधि दी गई। महात्मा गांधी ने अपने जीवन के अनुभवों में देश की प्रगति के लिये अनेक विषयों पर कार्य किया इसमें स्वच्छता भी सर्वोपरि रही। महात्मा गांधी का विश्वास था कि स्वच्छता आन्तरिक एवं बाहरी दोनों होती है। दोनों को स्वच्छ रखना जरूरी है। यदि कोई व्यक्ति स्वच्छ नहीं है तो स्वस्थ नहीं रह सकता है।

इस अवसर पर अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे सभी ने महात्मा गांधी को उनकी राष्ट्र सेवा के लिये याद कर उन्हें श्रद्धांजलि दी ।

दिनांक 04.01.2020

गुरुनानक देव जी की 550 वीं जयन्ती वर्ष के उपलक्ष्य में संगोष्ठी –डॉ0 जीतराम भट्ट

गुरुनानक देव जी की 550 वीं जयन्ती वर्ष के उपलक्ष्य में दिल्ली संस्कृत अकादमी दिल्ली सरकार द्वारा झण्डेवालान करोल बाग में आयोजित "भारतीय संस्कृति की रक्षा में गुरु नानक देव जी के योगदान" विषय पर संगोष्ठी आयोजित की गई। संगोष्ठी का शुभारम्भ करते हुये दिल्ली संस्कृत अकादमी के सचिव डॉ. जीतराम भट्ट ने कहा कि प्राचीन काल से चली आ रही भारतीय संस्कृति को बचाने के लिये समय समय पर अनेक महापुरूषों ने जन्म लेकर अपना अपना योगदान दिया। गुरुनानक देव जी की 550वें वर्ष पर पूरे साल देश में अनेक कार्यक्रमों के माध्यम से उन्हें याद किया जा रहा है। गुरुनानक देव जी मूल रूप में एक संत थे उन्होंने समाज में जागृति लाने के लिये अनेक प्रयास किये। इसी क्रम मे गुरुनानक देव जी भी भारतीय संस्कृति की रक्षा में अपना योगदान देने के लिये हमेशा याद किये जाते रहेंगे। वह बचपन से ही गंभीर प्रवृत्ति के थे। बाल्यकाल में जब उनके अन्य साथी खेल कूद में व्यस्त होते थे तो वह अपने नेत्र बंद कर चिंतन मनन में खो जाते थे। उनके पिता ने पंडित हरदयाल के पास उन्हें शिक्षा ग्रहण करने के लिए भेजा लेकिन पंडितजी बालक नानक के प्रश्नों पर निरुत्तर हो जाते थे और उनके ज्ञान को देखकर समझ गए कि नानक को स्वयं ईश्वर ने पढ़ाकर संसार में भेजा है। नानक को मौलवी कुतुबुद्दीन के पास पढ़ने के लिए भेजा गया लेकिन वह भी नानक के प्रश्नों से निरुत्तर हो गए। नानक जी ने घर बार छोड़ दिया और

दूर दूर के देशों में भ्रमण किया जिससे उपासना का सामान्य स्वरूप स्थिर करने में उन्हें बड़ी सहायता मिली। अंत में कबीरदास की निर्गुण उपासना का प्रचार उन्होंने पंजाब में आरंभ किया और वे सिख संप्रदाय के आदिगुरु हुए। डॉ. भट्ट ने आगे कहा कि भारत की राष्ट्रीय एकता के मूल आधारों में संस्कृत भाषा निशंदेह सर्व प्रथम है। गुरू नानक देव जी एक अद्भुत एवं विलक्षण बालक थे। भगवान ने उन्हें एक गहन सोच वाले मस्तिष्क एवं तार्किक सोच से नवाजा था। ७ वर्ष की आयु में उन्होंने हिन्दी एवं संस्कृत भाषा सीखी। उन्होंने दैवीय चीजों के प्रति अपनी अलौकिक एवं अद्भुत ज्ञान से अपने शिक्षक को आश्चर्यचकित कर दिया था। १३ वर्ष की आयु में वे फारसी एवं संस्कृत भाषा के ज्ञाता हो गए थे। १६ वर्ष की आयु में वह पूरे क्षेत्र में तेजस्वी विद्वान के रूप में समाज के सामने आए। उनका विवाह माता सुलखणी जी से हुआ, जिनके दो पुत्र-- श्रीचन्द एवं लखमी चन्द थे। गुरु नानक जी ने अपने अनुयायियों को दस उपदेश दिए जो कि सदैव प्रासंगिक बने रहेंगे। गुरु नानक जी की शिक्षा का मूल निचोड़ यही है कि परमात्मा एक, अनन्त, सर्वशक्तिमान और सत्य है। वह सर्वत्र व्याप्त है। नाम-स्मरण सर्वोपरि तत्त्व है और नाम गुरु के द्वारा ही प्राप्त होता है। गुरु नानक की वाणी भक्ति, ज्ञान और वैराग्य से ओत-प्रोत है। उन्होंने अपने अनुयायियों को जीवन की दस शिक्षाएं दीं जो इस प्रकार हैं- 1. ईश्वर एक है। 2. सदैव एक ही ईश्वर की उपासना करो। 3. ईश्वर सब जगह और प्राणी मात्र में मौजूद है। 4. ईश्वर की भक्ति करने वालों को किसी का भय नहीं रहता। 5. ईमानदारी से और मेहनत कर के उदरपूर्ति करनी चाहिए। 6. बुरा कार्य करने के बारे में न सोचें और न किसी को सताएं। 7. सदैव प्रसन्न रहना चाहिए। ईश्वर से सदा अपने लिए क्षमा मांगनी चाहिए। 8. मेहनत और ईमानदारी की कमाई में से जरूरतमंद को भी कुछ देना चाहिए। 9. सभी स्त्री और पुरुष बराबर हैं। 10. भोजन शरीर को जिन्दा रखने के लिए जरूरी है पर लोभ-लालच व संग्रहवृत्ति बुरी है। भारतीय संस्कृति की रक्षा के लिये उन्होंने मुगल शासकों का विद्रोह किया और भारतीय संसकृति की रक्षा की। नानकी देव जी की शिक्षाओं का संकलन उनके पुत्र ने किया जिसे सिख धर्म के गुरुओं ने समज में प्रचारित एवं प्रसारित किया।

इस अवसर पर अकादमी के सहायक सम्पादक श्री प्रद्युम्न चन्द ने कहा कि नानक देव जी हमें यह सिखाते हैं कि राष्ट्रीयता एक ऐसा भाव अथवा शक्ति है जो व्यक्तियों को अपने व्यक्तिगत हितो को त्याग कर राष्ट्र कल्याण के लिए प्रेरित करती है। देश प्रेम की भावना तो प्राचीन काल से ही चली आ रही है परन्तु आधुनिक समाज में राष्ट्रप्रेम की भावना का जन्म संस्कृति से ही आता है। संस्कृति का अर्थ केवल राज्य के प्रति अपार भक्ति ही नहीं अपितु इसका अभिप्राय राज्य तथा उसके धर्म, भाषा, इतिहास तथा संस्कृति में भी पूर्ण श्रद्धा रखना है। संक्षेप में संस्कृति हमें एकता राष्ट्र के प्रति आपार भक्ति, आज्ञा पालान तथा कर्तव्यपरायणता एवं सेवा है।

इस अवसर पर अनेक गणमान्य व्यक्तियों ने अपने विचार रखे और गुरुनानक देव जी को स्मरण कर उनके योगदान को याद किया ।

चलचित्र गीतों की संस्कृतानुवाद गायन प्रतियोगिता वर्ष 2019–20
(शास्त्री / आचार्य / स्नातक / स्नातकोत्तर स्तरीय)

क्र.सं.	महाविद्यालय का नाम	प्रतिभागी का नाम	प्राप्त स्थान	पुरस्कार राशि
1.	लेडी श्रीराम महिला महाविद्यालय, लाजपत नगर–4, नई दिल्ली–24	ज्योति	प्रथम	रू. 2000/–
2.	लेडी श्रीराम महिला महाविद्यालय, लाजपत नगर–4, नई दिल्ली–24	रजनी बालन	द्वितीय	रू. 1800/–
3.	रामजस महाविद्यालय, मौरिस नगर, दिल्ली विश्वविद्यालय परिसर, दिल्ली–07	नीतीश भारद्वाज	तृतीय	रू. 1500/–
4.	इन्द्रप्रस्थ महिला महाविद्यालय, 31, शामनाथ मार्ग, दिल्ली–54	ज्योति श्रीवास्तव	चतुर्थ	रू. 1200/–
5.	राजधानी महाविद्यालय, महात्मा गाँधी मार्ग, राजा गार्डन, नई दिल्ली–15	साकेत राज शुक्ल	पंचम	रू. 1000/–
6.	पी.जी.डी.ए.वी. महाविद्यालय, नेहरू नगर, नई दिल्ली–65	अर्चना	प्रोत्साहन–1	रू. 500/–
7.	हंसराज महाविद्यालय,महात्मा हंसराज मार्ग, मल्का गंज, दिल्ली–07	देवाशीष बर्मन	प्रोत्साहन–2	रू. 500/–

संस्कृत प्रश्नमंच प्रतियोगिता वर्ष 2019–20
(शास्त्री / आचार्य / स्नातक / स्नातकोत्तर स्तरीय)

क्र.सं.	महाविद्यालय का नाम	प्रतिभागी का नाम	प्राप्त स्थान	पुरस्कार राशि
1.	रामजस महाविद्यालय, मौरिस नगर दिल्ली विश्वविद्यालय परिसर, दिल्ली–07	सूर्यप्रकाश नौटियाल	प्रथम	रू. 2000/–
2.	श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत विद्यापीठ, कटवारिया सराय, नई दिल्ली–16	आशु कुमार ठाकुर	द्वितीय	रू. 1800/–
3.	श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत विद्यापीठ, कटवारिया सराय, नई दिल्ली–16	संजय शर्मा	तृतीय	रू. 1500/–
4.	हंसराज महाविद्यालय, महात्मा हंसराज मार्ग, मल्का गंज, दिल्ली–07	राहुल कुमार	चतुर्थ	रू. 1200/–
5.	सेंट स्टीफन्स महाविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय परिसर, दिल्ली–07	विश्वम्भरा	पंचम	रू. 1000/–
6.	कालिन्दी महाविद्यालय, पूर्वी पटेल नगर, नई दिल्ली–08	श्री मिश्रा	प्रोत्साहन–1	रू. 500/–
7.	मिराण्डा हाउस महाविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय परिसर, दिल्ली–07	अपराजिता अंशु	प्रोत्साहन–2	रू. 500/–
8.	पी.जी.डी.ए.वी. महाविद्यालय, (प्रातःकालीन) नेहरू नगर, नई दिल्ली–65	विकास मिश्रा	प्रोत्साहन–3	रू. 500/–
9.	हंसराज महाविद्यालय, महात्मा हंसराज मार्ग, मल्का गंज, दिल्ली–07	मधुमाला	प्रोत्साहन–4	रू. 500/–

10.	मैत्रेयी महाविद्यालय, बापू धाम कॉम्पलेक्स, चाणक्यपुरी, नई दिल्ली–21	प्रीति पाण्डेय	प्रोत्साहन–5	रू. 500/–

दिनांक 18.01.2020

राष्ट्रीय एकता का प्रतीक है गणतंत्र दिवस कवि सम्मेलन
–प्रो. रमेश कुमार पाण्डेय

राष्ट्रीय चेतना का संचार करता है गणतंत्र दिवस कवि सम्मेलन
–डॉ. कान्ता भाटिया

गणतंत्र दिवस कवि सम्मेलन से राष्ट्र के प्रति नई चेतना जगृत होती है
–डॉ. जीतराम भट्ट

"संस्कृत भाषा भारत की धरोहर है इस भाषा को आम लोगों तक इसके सही स्वरूप को ले जाने के लिये संस्कृत के अनेक विद्वान प्रयासरत है। दिल्ली संस्कृत अकादमी के माध्यम से मैं भी अनेक संस्कृत विषयक कार्यक्रमों एवं गतिविधियों में निरन्तर भाग लेता रहता हूँ जिससे मैं संस्कृत के विकास एवं प्रचार प्रसार के लिये निरन्तर कार्य करने के लिये तैयार हूँ। इस प्रकार के कार्यक्रमों के माध्यम से संस्कृत भाषा एवं साहित्य के विकास एवं प्रचार–प्रसार के साथ लोकप्रिय होते हैं। संस्कृत कवियों के माध्यम से भारत को एक सूत्र में बांधने का प्रयास किया जा रहा है। आज के इस कवि सम्मेलन में देश, हर प्रदेश का प्रतिनिधि भाग ले रहा है।

ये विचार दिल्ली संस्कृत अकादमी दिल्ली सरकार द्वारा गणतंत्र दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित अखिल भारतीय संस्कृत कवि सम्मेलन के मुख्य अतिथि श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ के कुलपति प्रो. रमेश कुमार पाण्डेय ने व्यक्त किये। प्रो. पाण्डेय ने आगे कहा कि 26 जनवरी 1950 को हमारे देश में हमारा संविधान लागू हुआ। इसी दिन को गणतंत्र दिवस के रूप में मनाया जाता है। यह दिन राष्ट्रीय पर्व के रूप में देश भर में मनाया जाता है। इस दिन को राष्ट के प्रति हर व्यक्ति का क्या दायित्व है राष्ट्र निर्माण मं किसकी क्या आवश्यकता है इसका अवलोकन करने का अवसर है।

कार्यक्रम की प्रस्तावना में अकादमी के सचिव डॉ0 जीतराम भट्ट ने कहा कि जैसा कि सभी जानते ही हैं कि अकादमी प्रतिवर्ष गणतंत्र दिवस के अवसर पर अखिल भारतीय संस्कृत कवि सम्मेलन के माध्यम से देश को राष्ट्रप्रेम का संदेश दिया जाता ह। हर समय पर संस्कृत को संस्कृत के विद्वानों के द्वारा पुर्नजीवित किया गया। संस्कृत आज भी अपने मूल स्वरूप में निरन्तर चली आ रही है। कविता की प्रथम भाषा संस्कृत है। दिल्ली संस्कृत अकादमी द्वारा आयोजित इस राष्ट्रीय संस्कृत कवि सम्मेलन में देश के विभिन्न प्रदेशों से आये संस्कृत कविगणों का दिल्ली सरकार की कला संस्कृति एवं भाषा विभाग की ओर से अभिनन्दन है। संस्कृत अकादमी द्वारा आयोजित इस राष्ट्रीय संस्कृत कवि सम्मेलन से संस्कृत कवियों को नई पहचान मिली है।

इस अवसर पर कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुये पद्मश्री डॉ. रमाकान्त शुक्ल ने कहा कि संस्कृत भाषा में स्थित ज्ञान विज्ञान की अनन्त धाराएँ प्राचीन काल से लेकर आज तक अबाध गति से विश्व में प्रवाहित होती रही है। विश्व की अनेक प्राचीन भाषाएँ, संस्कृतियां विलुप्त हो गई हैं, किन्तु भारतीय संस्कृति आज भी पूरे विश्व मे अपना गौरव और महत्व के साथ विद्यमान है। क्योंकि इस के मूल में संस्कृत भाषा है। संस्कृत मानव–सभ्यता के प्राचीनतम इतिहास से जुड़ी भाषा एवं संस्कृति है। विश्व में काव्य सर्वप्रथम इसी भाषा में हुआ है।

इस अवसर पर पंजाब से प्रो. जगदीश प्रसाद सेमवाल, अहमदाबाद से श्री हर्षदेव माधव एवं डॉ. अमृता भोग्याता, दिल्ली से डॉ. रमाकान्त शुक्ल, डॉ. आशुतोष दयाल माथुर, डॉ. बलराम शुक्ल डॉ. जीतराम भट्ट, कर्नाटक से श्री शतावधानी आर. गणेश, डॉ. बी.एन. शशिकरण, श्री अर्जुन भारद्वाज, वीणा उदयन, केरल से डॉ. एच पूर्णिमा हरियाणा से प्रो. राजेश्वर मिश्र आदि कवियो ने अपना काव्य पाठ किया।

कवि सम्मेलन का संचालन दिल्ली विश्वविद्यालय के सहायक आचार्य डॉ. बलराम शुक्ल ने किया ओर कहा कि इस कार्यक्रम के माध्यम से दिल्ली वासियों को राष्ट्र के प्रति अपने दायित्वों को निभाने की प्रेरणा मिलेगी तथा दिल्ली के युवाओं को देश के प्रतिष्ठित संस्कृत कवियों को सुनने व उनके काव्यों जानने का अवसर मिला। इस अवसर पर अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

दिनांक 13.02.2020

संस्कृत का भविष्य युवा पीढी पर निर्भर है –डॉ. जीतराम भट्ट
संस्कृत भाषा भारतीय संस्कृति की आधार है – डॉ. कान्ता भाटिया

विश्व मे आज भारत को ज्ञान एवं संस्कृति के उन्नत स्वरूप को प्रदान करने के रूप में देखा जाता है। संस्कृत के महत्त्व को विश्व जानता था लेकिन अब मानने भी लगा है। इस कारण सभी देश अपनी प्राईमरी स्कूल के स्तर से ही संस्कृत को पढ़ाने का प्रयास कर रहे हैं। दिल्ली संस्कृत अकादमी संस्कृत को युवा वर्ग से जोडन के लिय निरन्तर प्रयास कर रही है। संस्कृत का भविष्य युवा वर्ग से ही है। युवा वर्ग जितना संस्कृत से जुडेगा संस्कृत का उतना ही विकास होगा। जहाँ तक रोजगार का प्रश्न है संस्कृत विषय अन्य विषयों की अपेक्षा अधिक रोजगार के अवसर प्रदान करती है। भारत का भविष्य बच्चे ही हैं जिनको आगे देश एवं संस्कृत की सेवा करनी है ।

ये विचार दिल्ली संस्कृत अकादमी दिल्ली सरकार द्वारा झण्डेवालान करोलबाग नई दिल्ली में तीन दिवसीय संस्कृत युवा महोत्सव के अवसर पर केन्द्रीय संस्कृत प्रतियोगिता समारोह का शुभारम्भ करते हुये संस्कृत अकादमी की उपाध्यक्षा डॉ. कान्ता भाटिया ने व्यक्त किये। डॉ. भाटिया ने आगे कहा कि अकादमी द्वारा दिल्ली राज्य स्तर पर आयोजित इस प्रतियोगिता में दिल्ली के सभी शिक्षा मण्डलों की सर्वश्रेष्ठ प्रतिभागी भाग ले रहे हैं। शिक्षा का महत्व लक्ष्य से होता है सभी प्रतिभागियों को अपना लक्ष्य अवश्य

निर्धारित करना चाहिये। जीवन में शिक्षा ही ऐसी सामग्री है जिसे कोई चोर नहीं सकता है। इस लिये शिक्षा के महत्व को समझते हुये इस को जीवन के साथ जोडने का प्रयास करना चाहिये।

इस अवसर पर कार्यक्रम की भूमिका प्रस्तुत करते हुए अकादमी के सचिव डॉ. जीतराम भट्ट ने कहा कि संस्कृत भाषा में रोजगार की असीम सम्भावनायें हैं परन्तु इन क्षेत्रों के बारे म छात्रों को अवगत कराया जाना आवश्यक है। देश में संस्कृत की अनेक संस्थाये चल रही हैं। सभी संस्कृत के विकास एवं प्रचार प्रसार के लिये अपने अपने स्तर पर कार्य कर रही हैं। सभी को आपस में परस्पर मिल कर काम करने की जरूरत है। संस्कृत भविष्य देश की युवा पीढी से जुडा है। युवा वर्ग को संस्कृत से जोडने के लिये इस भाषा में नवीनता लाना व रोजगार से जोडना आवश्यक है। डॉ. भट्ट ने कहा कि अकादमी द्वारा आयोजित आज की प्रतियोगिताओं में श्लोक संगीत एवं संस्कृत भाषण प्रतियोगिता आयोजित की गई जिसमें दिल्ली शिक्षा निदेशालय के 13 मण्डलों के 50 से अधिक विद्यालयों के छात्र छात्राओं ने भाग लिया। श्लोक संगीत प्रतियोगिता में प्रथम स्थान राजकीय उच्चतर माध्यमिक कन्या विद्यालय नत्थुपुरा बुराडी दिल्ली को, द्वितीय स्थान राजाराम मोहन राय सर्वोदय कन्या विद्यालय, हौजरानी, नई दिल्ली को, तृतीय स्थान राजकीय सह शिक्षा सर्वोदय विद्यालय सेक्टर–21, रोहिणी दिल्ली को, चतुर्थ स्थान सेंट ग्रिगोरियस स्कूल प्लोट नं.–12, सेक्टर –11, द्वारका को दिल्ली एवं पंचम स्थान गार्गी सर्वोदय विद्यालय ग्रीन पार्क नई दिल्ला को प्राप्त हुआ। संस्कृत भाषण प्रतियोगिता में प्रथम स्थान सर्वोदय कन्या विद्यालय शक्ति नगर की तेजल ठाकरे को, द्वितीय स्थान दिल्ली कन्नड उच्चतर माध्यमिक विद्यालय लोधी रोड की छात्रा वंशिका सचदेवा को, तृतीय स्थान सलवान पब्लिक स्कूल ओल्ड राजेन्द्र नगर की छात्रा जिया अरोरा को, चतुर्थ स्थान राजकीय उच्चतर माध्यमिक कन्या विद्यालय नं–2, शक्ति नगर दिल्ला की सोलानी को एवं पंचम स्थान आर. पी. एफ पब्लिक स्कूल प्रशात विहार की रिद्धि शर्मा को प्राप्त हुआ विजेता प्रतिभागियों को नकद पुरस्कार एवं प्रमाण पत्र से सम्मानित किया गया।

इस अवसर पर अकादमी के वरिष्ठ सदस्य डॉ. बलदेवानन्द सागर ने कहा कि संस्कृत भाषा एंव साहित्य को केवल संस्कारों तक ही सीमित करके नहीं देखना चाहिये जहां संस्कृत भाषा भारतीय संस्कृति को परिस्कृत करती है वहीं उतनी ही अधिक मात्रा में ज्ञान विज्ञान का आधार स्तम्भ भी है। संस्कृत भाषा भारतीय संस्कृति के आधार हैं। संस्कृत में वर्णित ज्ञान विज्ञान से ही भारतीय संस्कृति, संस्कार एवं संस्कृत भाषा विश्व में सबसे प्राचीन एवं आज भी सबसे अहम हैं।

इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री लाल बहादुर शास्त्री संस्कृत विद्यापीठ के साहित्य विभाग के आचार्या श्री सुमन कुमार झा ने कहा कि दिल्ली संस्कृत अकादमी द्वारा युवा उत्सव के रूप में दिल्ली के छात्रों के लिये आयोजित राज्य स्तरीय प्रतियोगिता संस्कृत के विकास के लिये महत्त्वपूर्ण है। इस प्रकार के आयोजनों से संस्कृत के विकास को नई दिशा मिलेगी। यहा पर आये सभी छात्र–छात्राओं को मेरी शुभकामना है। इस अवसर पर अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे ।

केन्द्रीय संस्कृत प्रतियोगिता 2019–20

संस्कृत श्लोक संगीत प्रतियोगिता

क्र.सं.	मण्डल	विद्यालय का नाम एवं पता	प्रतिभागी का नाम	पुरस्कार राशि	प्राप्त स्थान
1.	उत्तर मण्डल	राजकीय उच्चतर माध्यमिक कन्या विद्यालय, नत्थुपुरा, दिल्ली-८४	प्रिति	900/–	प्रथम
			विभू	900/–	
			सन्ध्या	900/–	
			तन्नु	900/–	
			कशिश	900/–	
			खुशी	900/–	
2.	दक्षिण मण्डल	राजा राम मोहन राय सर्वोदय कन्या विद्यालय, हौजरानी, नई दिल्ली-१७	ज़रताज कैसर	800/–	द्वितीय
			सरिता	800/–	
			नेहा	800/–	
			असना	800/–	
			शाईना	800/–	
			अनु	800/–	
3.	उत्तर-पश्चिम-ब मण्डल	राजकीय सह-शिक्षा सर्वोदय विद्यालय, सैक्टर-२१, रोहिणी, दिल्ली-८६	फ्लोरा नागी	700/–	तृतीय
			गुंजन	700/–	
			कृतिका	700/–	
			राधा	700/–	
			सोनिया	700/–	
			प्रेरणा	700/–	
4.	दक्षिण-पश्चिम-बी मण्डल	सेंट ग्रेगोरियस स्कूल, सैक्टर-११, द्वारका, नई दिल्ली-७५	मिष्टी सक्सेना	600/–	चतुर्थ
			अलिसा मरियम बीनू	600/–	
			शेवा शाजी	600/–	
			काश्वी आहूजा	600/–	
			श्रेया सारा बोस	600/–	
			हतिका शीबू	600/–	
5.	दक्षिण मण्डल	गार्गी सर्वोदय कन्या विद्यालय, ग्रीन पार्क विस्तार, नई दिल्ली-१६	रोशनी ठाकुर	500/–	पंचम
			दिशु पंवार	500/–	
			रचना कुमारी	500/–	
			अंजली मौर्या	500/–	
			अंजली पाठक	500/–	
			स्वीटी कुमारी	500/–	

संस्कृत भाषण प्रतियोगिता

क्र.सं.	मण्डल	विद्यालय का नाम एवं पता	प्रतिभागी का नाम	पुरस्कार राशि	प्राप्त स्थान
1.	उत्तर मण्डल	सर्वोदय कन्या विद्यालय नं.-१, शक्ति नगर, दिल्ली-०७	तेजल ठाकरे	2000/–	प्रथम
2.	नई दिल्ली मण्डल	दिल्ली कन्नड़ उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, लोधी एस्टेट, नई दिल्ली-०३	वंशिका सचदेवा	1800/–	द्वितीय
3.	मध्य मण्डल	सलवान पब्लिक स्कूल, ओल्ड राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली-६०	जिया अरोड़ा	1600/–	तृतीय
4.	उत्तर मण्डल	राजकीय उच्चतर माध्यमिक कन्या विद्यालय नं.-२, शक्ति नगर, दिल्ली-०७	सलोनी	1400/–	चतुर्थ
5.	उत्तर-पश्चिम-ब मण्डल	सी.आर.पी.एफ. पब्लिक स्कूल, प्रशान्त विहार, सैक्टर-१४, रोहिणी, दिल्ली-८५	रिद्धि शर्मा	1200/–	पंचम

दिनांक 14.02.2020

संस्कृत साहित्य विश्व को नई दिशा दे रही है –डॉ. रंजन कुमार त्रिपाठी
युवा पीढी का आकर्षण देखने से संस्कृत का भविष्य उज्ज्वल लग रहा है
– डॉ.जीतराम भट्ट

दिल्ली संस्कृत अकादमी दिल्ली सरकार द्वारा करोलबाग झण्डेवालान में दिल्ली राज्य स्तरीय तीन दिवसीय संस्कृत युवा उत्सव के अवसर पर राज्य स्तरीय केन्द्रीय संस्कृत प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जा रहा है। आज इन प्रतियोगिताओं का दूसरा दिन था। संस्कृत प्रतियोगिताओं का शुभारम्भ करते हुए दिल्ली विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग के आचार्य डॉ. रंजन कुमार त्रिपाठी ने कहा कि विश्व को ज्ञान विज्ञान, संस्कृति, न्याय व्यवस्था, चिन्तन, दर्शन आदि भारत ने दिया है। प्राचीन भारतीय वाङ्मय में प्राचीन काल से ही उत्कृष्ट विषयों का समावेश रहा है। प्राचीन भारतीय वैज्ञानिक के स्वरूप की तुलना आज के वैज्ञानिक नहीं कर सकते हैं। विभिन्न देशों के बुद्धिजीवी संस्कृत के महत्व को पहचानते हुये अपने देश में प्राथमिक स्तर से ही बच्चों को संस्कृत भाषा को पढा रहे हैं। युवा वर्ग जितना संस्कृत से जुडेगा संस्कृत का उतना ही विकास होगा। जहाँ तक रोजगार का प्रश्न है संस्कृत विषय अन्य विषयों की अपेक्षा अधिक रोजगार के अवसर प्रदान करती है।

इस अवसर पर अकादमी के सचिव डॉ. जीतराम भट्ट ने कहा कि अकादमी द्वारा आज श्लोकोच्चारण प्रतियोगिता एवं संस्कृत एकल श्लोक संगीत प्रतियोगिता आयोजित की गई। आज की

प्रतियोगिताओं में दिल्ली के विभिन्न विद्यालयों के 300 से अधिक प्रतिभागियों ने भाग लिया। दिल्ली संस्कृत अकादमी संस्कृत को युवा वर्ग से जोड़न के लिय निरन्तर प्रयास कर रही है। संस्कृत का भविष्य युवा वर्ग से ही। इन प्रतियोगिताओं में युवा पीढी का आकर्षण देखने से संस्कृत भविष्य उज्ज्वल लग रहा है। संस्कृत भाषा एंव साहित्य को केवल संस्कारों तक ही सीमित करके नहीं देखना चाहिये जहां संस्कृत भाषा भारतीय संस्कृति को परिस्कृत करती है वहीं उतनी ही अधिक मात्रा में ज्ञान विज्ञान का आधार स्तम्भ है। संस्कृत भाषा भारतीय संस्कृति के आधार हैं। संस्कृत में वर्णित ज्ञान विज्ञान से ही भारतीय संस्कृति, संस्कार एवं संस्कृत भाषा विश्व में सबसे प्राचीन एवं आज भी सबसे अहम है। इस बात को देखते हुए युवा वर्ग को संस्कृत से जोडने के लिये अकादमी तीन दिवसीय दिल्ली राज्य स्तरीय संस्कृत युवा उत्सव मना रही है। जिसमें दिल्ली के सभी मण्डलों में आयोजित संस्कृत प्रतियोगिताओं के प्रथम एवं द्वितीय स्थान पर आने वाले प्रतिभागियों के बीच प्रतियोगिता आयोजित की जा रही है।

इस अवसर पर दिल्ली शिक्षा निदेशालय के पूर्व प्रधानाचार्य डॉ. गुलाब सिंह ने कहा कि संस्कृत भाषा एवं साहित्य देश में ही नहीं विदेशों में भी एक आशा का केन्द्र बना हुआ है। जब आधुनिक समाज अपने भविष्य की ओर देखता है तो तब विश्व के सभी समाज शास्त्री अपने बच्चों का भविष्य सुरक्षित करने के लिये संस्कृत में निहित ज्ञान विज्ञान को अपना रहे हैं। यह सही है कि भारतीय चिन्तन में हमेशा विश्व कल्याण की भावना देखी गई है। हर विषय के समान ही इस विषय में रोजगार के अनेक क्षेत्र हैं। बहुत से युवा संस्कृत विषय पढ़ने के लिये तत्पर हैं। हमें उनका मार्ग दर्शन करना चाहिये।

इस अवसर पर हिन्दू महाविद्यालय के संस्कृत विभाग के आचार्य डॉ. राजेन्द्र कुमार ने कहा कि युवा वर्ग को संस्कृत से जोडने के लिये इस भाषा में नवीनता लाना व रोजगार से जोड़ना आवश्यक है। वैसे संस्कृत भाषा मे रोजगार की असीम सम्भावनायें हैं परन्तु इन क्षेत्रों के बारे मं छात्रों को अवगत कराया जाना आवश्यक है। देश में संस्कृत की अनेक संस्थाये चल रही है। सभी संस्कृत के विकास एवं प्रचार प्रसार के लिये अपने अपने स्तर पर कार्य कर रही है। सभी को आपस में परस्पर मिल कर काम करने की जरूरत है।

अकादमी द्वारा आयोजित आज की प्रतियोगिता में विजेता प्रतिभागियों के परिणामों की घोषणा अकादमी के सचिव डॉ. जीतराम भट्ट ने की जिसमें श्लोक उच्चारण प्रतियोगिता में रू. 5400– का प्रथम पुरस्कार भारतीय विद्या भवन विद्यालय को, रू. 4800/– का द्वितीय पुरस्कार डी.ए.वी स्कूल शालीमार बाग को,रू. 4200– का तृतीय पुरस्कार डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल द्वारका को, रू. 3600/– का चतुर्थ पुरस्कार ग्रीन फील्ड पब्लिक स्कूल दिलशाद गार्डन को तथा रू. 3000/– का पंचम पुरस्कार डी.ए.वी सेन्टरी स्कूल पश्चिम एन्कलेब को प्राप्त हुआ । एकल श्लोक संगीत प्रतियोगिता में रू.2000/–का प्रथम पुरस्कार डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल द्वारका की इशिता को, रू. 1800/– का द्वितीय पुरस्कार सी.आर.पी.एफ पब्लिक स्कूल प्रशान्त विहार के श्री अक्षरा एन नाम्बियार को, रू.1600/– का तृतीय पुरस्कार राजकीय उच्चतर माध्यमिक कन्या विद्यालय नथूपुरा की तन्नू को, रू.1400/– का चतुर्थ पुरस्कार राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक कन्या विद्यालय, गोयल खुर्द की अंशु कुमारी को एवं रू.1200/ का पंचम पुरस्कार राजकीय सर्वोदय कन्या

विद्यालय पश्चिमी विनोद नगर की अनुश्री को प्राप्त हुआ। विजेता प्रतिभागियों को नकद पुरस्कार एवं प्रमाण पत्र दिये गये अन्य प्रतिभागियों को प्रतिभागिता राशि से पुरस्कृत किया गया। इस अवसर पर अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

संस्कृत श्लोकोच्चारण संगीत प्रतियोगिता

क्र.सं.	मण्डल	विद्यालय का नाम एवं पता	प्रतिभागी का नाम	पुरस्कार राशि	प्राप्त स्थान
1.	नई दिल्ली मण्डल	भारतीय विद्या भवन मेहता विद्यालय, के.जी. मार्ग, नई दिल्ली-०१	आर्य राघव	900/–	प्रथम
			आदित्य कोली	900/–	
			तनिष्क निमबेकर	900/–	
			अद्वित वीर आदित्य	900/–	
			मयंक पांडे	900/–	
			अधीष गोयल	900/–	
2.	उत्तर-पश्चिम-ए मण्डल	दरबारी लाल डी.ए.वी. मॉडल स्कूल, शालीमार बाग, दिल्ली-८८	लक्ष्य ठाकुर	800/–	द्वितीय
			कार्तिकेय गोयल	800/–	
			वेणुधर श्रीवास्तव	800/–	
			हार्दिक खन्ना	800/–	
			कार्तिक शर्मा	800/–	
			हिमांशु मिश्रा	800/–	
3.	दक्षिण-पश्चिम-बी मण्डल	एम.एल. खन्ना डी.ए.वी. पब्लिक विद्यालय, सैक्टर-६, द्वारका, नई दिल्ली-७५	कुशाग्र ओझा	700/–	तृतीय
			चेतन कुमार गिरि	700/–	
			साहिल सिंह रावत	700/–	
			शुभम राव	700/–	
			रयान भान	700/–	
			नीरज खट्टर	700/–	
4.	उत्तर-पूर्व मण्डल	ग्रीन फील्ड्स पब्लिक स्कूल, दिलशाद गार्डन, दिल्ली-९३	अर्चित कृष्णा भारद्वाज	600/–	चतुर्थ
			नैतिक शर्मा	600/–	
			प्रणव खुराना	600/–	
			अभिषेक तिवारी	600/–	
			नैतिक साह	600/–	
			आर्यन ठाकुर	600/–	
5.	पश्चिम ब मण्डल	डी.ए.वी. सैन्टेनरी पब्लिक स्कूल, पश्चिम एन्कलेव, मियाँवली नगर, दिल्ली-८७	आदित्य रुहिल	500/–	पंचम
			उत्कर्ष	500/–	
			शुभम	500/–	
			लव्या यादव	500/–	
			आर्यन राठौर	500/–	
			अनमोल गर्ग	500/–	

संस्कृत एकल श्लोक संगीत प्रतियोगिता

क्र.सं.	मण्डल	विद्यालय का नाम एवं पता	प्रतिभागी का नाम	पुरस्कार राशि	प्राप्त स्थान
1.	दक्षिण-पश्चिम-बी मण्डल	एम.एल. खन्ना डी.ए.वी. पब्लिक विद्यालय, सैक्टर-६, द्वारका, नई दिल्ली-७५	इशिता	2000/—	प्रथम
2.	उत्तर-पश्चिम-ब मण्डल	सी.आर.पी.एफ. पब्लिक स्कूल, प्रशान्त विहार, सैक्टर-१४, रोहिणी, दिल्ली-८५	अक्षरा.एन. नम्बियार	1800/—	द्वितीय
3.	उत्तर मण्डल	राजकीय उच्चतर माध्यमिक कन्या विद्यालय, नत्थुपुरा, दिल्ली-८४	तन्नु	1600/—	तृतीय
4.	दक्षिण-पश्चिम-बी मण्डल	राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक कन्या विद्यालय, गोयला खुर्द, नई दिल्ली-७१	अंश कुमारी	1400/—	चतुर्थ
5.	पूर्व मण्डल	राजकीय सर्वोदय कन्या विद्यालय, पश्चिमी विनोद नगर, दिल्ली-९२	अनुश्री	1200/—	पंचम

दिनांक 15.02.2020

संस्कृत भाषा पूरे ब्रह्माण्ड की भाषा है इसका न आदि है और न ही अन्त
–डॉ. नोदनाथ मिश्र

संस्कृत भाषा में निहित है सम्पूर्ण ज्ञान विज्ञान –डॉ. जीतराम भट्ट

दिल्ली को संस्कृत नगर घोषित किया जाना चाहिये –डॉ. पंकज मिश्र

संस्कृत भाषा का न तो आदि है और न ही अन्त है यह भाषा शास्वत है। प्राचीन काल से ही भारत का इतिहास लम्बा एवं अनेक प्रतिभाओं से भरा हुआ है। भारतीय संस्कृति, संस्कार एवं संस्कृत भाषा विश्व में सबसे प्राचीन एवं आज भी सबसे अहम हैं। भारतीय संस्कृति, संस्कार एवं संस्कृत भाषा का महत्व हमें विदेशों में दिखाई देता है। विश्व में भारतीय संस्कृति सबसे श्रेष्ठ संस्कृति मानी जाती है। संस्कृत भाषा सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड की भाषा है। हमारी संस्कृति विश्व को अनेक शिक्षायें देती आ रही है।

ये विचार दिल्ली संस्कृत अकादमी दिल्ली सरकार द्वारा झण्डेवालान करोलबाग नई दिल्ली में आयोजित "दिल्ली राज्य स्तरीय केन्द्रीय संस्कृत प्रतियोगिता समारोह" के मुख्य अतिथि भारत सरकार के पूर्व संस्कृत सलाहकार डॉ. नोदनाथ मिश्र ने व्यक्त किये। डॉ. मिश्र ने आगे कहा कि विश्व में हमारी पहचान भारत ही है और भारतीय ही रहेगी। संस्कृत एवं हिन्दी का हमें निरन्तर बोलने एवं लिखने का प्रयास करना चाहिये। मैने अनेक वर्षों तक संस्कृत के विभिन्न विभागों में कार्य किया वहाँ यही पाया कि भारतीय संस्कृति ही सर्वोपरि है।

इस अवसर पर अकादमी के सचिव डॉ. जीतराम भट्ट ने कहा कि दिल्ली संस्कृत अकादमी द्वारा दिल्ली के युवाओं के लिये विगत तीन दिनों से दिल्ली में युवा उत्सव के रूप में ये केन्द्रीय प्रतियोगितायें आयोजित की गई। अकादमी का कार्यालय दिल्ली में संस्कृत का बड़ा स्थल है। यदि संस्कृत की शिक्षा को नियमित रूप से अध्ययन अध्यापन में लाया जाय तो समाज में किसी भी प्रकार का दुख नहीं रहेगा। इस युवा उत्सव में दिल्ली संस्कृत अकादमी द्वारा दिल्ली शिक्षा निदेशालय के 13 मण्डलों में आयोजित संस्कृत की छः प्रतियोगिताओं में मण्डल स्तर पर हर प्रतियोगिता के प्रथम एवं द्वितीय स्थान प्राप्त करने वाले प्रतिभागियों के बीच आयोजित की जाती है। आज की प्रतियोगिता संस्कृत श्लोक संगीत एवं संस्कृत भाषण प्रतियागिता थी। संस्कृत काव्यालि प्रतियोगिता में 17 विद्यालयों ने एवं संस्कृत वाद विवाद प्रतियोगिता में 19 विद्यालयों के छात्र/छात्राओं ने अपनी प्रतिभा प्रस्तुत की। डॉ. भट्ट ने आगे कहा कि भारत यदि विश्व में आज जाना जाता है तो वह भारतीय संस्कृति, संस्कार एवं संस्कृत भाषा के कारण जाना जाता है। हमें युवा पीढ़ी एवं आने वाली पीढ़ी के माध्यम से संस्कृत, संस्कृति एवं संस्कार से जोडने के लिये निरन्तर प्रयास करते रहेंगे।

इस अवसर पर सेण्ट स्टीफन्स महाविद्यालय के संस्कृत विभाग के आचार्य डॉ. पंकज कुमार मिश्र ने कहा कि संस्कृत भाषा के कारण ही भारत में बोली जाने वाली विभिन्न भाषाओं में भारतीय संस्कृति एवं परम्पाओं का समावेश हुआ। दिल्ली संस्कृत अकादमी निरन्तर संस्कृत भाषा के प्रचार प्रसार के लिये कार्य कर रही है अकादमी द्वारा किये जाने वाले कार्यों से मैं अकादमी की स्थापना से ही प्रत्यक्ष या अप्रत्य रूप से जुड़ा हुआ रहा हूँ। दिल्ली में संस्कृत अकादमी गतिविधियों से दिल्ली का नाम संस्कृत नगर किया जाना चाहिये। संस्कृत विश्व कल्याण की समग्र भाषा है। प्राचीन काल से ही संस्कृत साहित्य विश्व को संस्कृति एवं ज्ञान विज्ञान की नई दिशा दे रहे हैं।

इस प्रतियोगिता में काव्यालि प्रतियोगिता में आये सभी प्रतिभागियों को पुरस्कार राशियाँ प्रदान की गई। इस प्रतियोगिता में लगभग 300 प्रतिभागियों ने भाग लिया। तीन दिनों तक चले इस युवा उत्सव 150 विद्यालयों के 600 से अधिक प्रतिभागी छात्र–छात्राओं ने भाग लिया। जिसमें से 30 विद्यालयों के 110 छात्र–छात्राओं ने पुरस्कार प्राप्त किये। अन्य छात्र–छात्राओं को प्रतिभागिता राशि से सम्मानित किया गया।

इस अवसर पर अनेक संस्कृत प्रेमी महानुभाव भी उपस्थित थे।

संस्कृत कव्वाली प्रतियोगिता

क्र.सं.	मण्डल	विद्यालय का नाम एवं पता	प्रतिभागी का नाम	पुरस्कार राशि	प्राप्त स्थान
1.	उत्तर मण्डल	राजकीय उच्चतर माध्यमिक बाल विद्यालय, नत्थुपुरा, दिल्ली-८४	निवेश पन्त	900/–	प्रथम
			विवेक सागर	900/–	
			अभिनव मिश्रा	900/–	
			पंकज रंगा	900/–	
			प्रशान्त उप्रेती	900/–	
			आकाश शर्मा	900/–	
2.	उत्तर-पूर्व मण्डल	लिटिल फ्लावर्स पब्लिक सीनियर सैकेण्डरी विद्यालय, शिवाजी पार्क, शाहदरा, दिल्ली-३२	नंदिनी भनोट	800/–	द्वितीय
			खुशबू सौनक	800/–	
			कोमिल अग्रवाल	800/–	
			रिफत परवेज	800/–	
			प्रिशा शर्मा	800/–	
			गौतमी ठाकुर	800/–	
3.	दक्षिण-पूर्व मण्डल	शहीद हेमू कलाणी राजकीय सर्वोदय बाल विद्यालय, रिंग रोड, लाजपत नगर, नई दिल्ली-२४	सुभाष झा	700/–	तृतीय
			रंजीत मिश्रा	700/–	
			मंजीत	700/–	
			सत्यम चौबे	700/–	
			चन्द्र प्रकाश	700/–	
			गौरव कुमार	700/–	
4.	पूर्व मण्डल	एस.एल.एस. डी.ए.वी. पब्लिक विद्यालय, मौसम विहार, दिल्ली-९२	रोहित दत्ता	600/–	चतुर्थ
			मोहम्मद अयान	600/–	
			आर्ची कपूर	600/–	
			सान्या शर्मा	600/–	
			अयान वारिस	600/–	
			यश जैन	600/–	
5.	दक्षिण-पश्चिम-बी मण्डल	एम.एल. खन्ना डी.ए.वी. पब्लिक विद्यालय, सैक्टर-६, द्वारका, नई दिल्ली-७५	स्नेहा सिंह	500/–	पंचम
			इशिता	500/–	
			खुशी	500/–	
			तनिष्ठा कटारिया	500/–	
			सौम्या झा	500/–	
			प्राची चौधरी	500/–	

संस्कृत वाद-विवाद प्रतियोगिता

क्र.सं.	मण्डल	विद्यालय का नाम एवं पता	प्रतिभागी का नाम	पुरस्कार राशि	प्राप्त स्थान
1.	उत्तर-पश्चिम-ए मण्डल	राजकीय सर्वोदय कन्या विद्यालय नं.-२, नरेला, दिल्ली-४०	साक्षी	2000/-	प्रथम
			उर्वशी	2000/-	
2.	उत्तर-पश्चिम-ब मण्डल	राजकीय प्रतिभा विकास विद्यालय, सैक्टर-११, रोहिणी, दिल्ली-८५	अमीषा	1800/-	द्वितीय
			मुस्कान गोयल	1800/-	
3.	उत्तर मण्डल	राजकीय प्रतिभा विकास विद्यालय, सिविल लाइन्स, दिल्ली-५४	किसलय	1600/-	तृतीय
			विनीत सिंह बिष्ट	1600/-	
4.	दक्षिण मण्डल	गार्गी सर्वोदय कन्या विद्यालय, ग्रीन पार्क विस्तार, नई दिल्ली-१६	चेतना गुप्ता	1400/-	चतुर्थ
			रुपाली ठाकुर	1400/-	
5.	दक्षिण-पश्चिम-बी मण्डल	शान्ति ज्ञान निकेतन सीनियर सैकेण्डरी स्कूल, गोयला गांव, नजफगढ, नई दिल्ली-७१	वंशिका सिंह	1200/-	पंचम
			मुस्कान जिन्दल		

दिनांक 19.02.2020

संस्कृत भाषा एवं साहित्य युवा वर्ग को विचारों एवं चिन्तन की नई दिशा देती है
–डॉ. कान्ता भाटिया

संस्कृत भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया –डॉ. जीतराम भट्ट

संस्कृत सभी भाषाओं की जननी है और भारतीय संस्कृति का आधार है
–डॉ. हरित्मा चोपड़ा

संस्कृत को विश्व स्तर पर ज्ञान विज्ञान की भाषा बनाने के लिये हमें और अधिक प्रयास करने की जरूरत है। आज के आधुनिक युग में शिक्षा के क्षेत्र में अनेक विद्यालय, महाविद्यालय संस्कृत पढ़ने के लिये बच्चों को प्रोत्साहित कर रहे हैं। विश्व में अनेक विश्वविद्यालयों में संस्कृत को पढ़ाया जा रहा है।

किसी भी देश को सशक्त बनाने में उस देश की युवा पीढ़ी का सबसे अधिक योगदान होता है। जिस देश में युवा वर्ग सबसे अधिक सशक्त एवं विचारशील हो वह राष्ट्र विकास की नई ऊँचाईयों को पाता है।

ये विचार दिल्ली संस्कृत अकादमी दिल्ली सरकार द्वारा मैत्रेयी महाविद्यालय नई दिल्ली में आयोजित महाविद्यालयीय संस्कृत भाषण प्रतियोगिता का शुभारम्भ करते हुये दिल्ली संस्कृत अकादमी की उपाध्यक्षा डॉ. कान्ता भाटिया ने व्यक्त किये डॉ. भाटिया ने आगे कहा कि संस्कृत भाषा के विभिन्न आयामों में

संस्कृत भाषण का अपना अलग महत्त्व है। भाषण के माध्यम से प्रतिभागी अपने विचारों को रखने की कला सीखता है जो आगे चलकर भविष्य में व्यक्ति के कौशल को निर्मित करने में सहायक होती है। देश के विकास में संस्कृत छात्रों, विद्वानों एवं संस्कृत साहित्य का हर समय योगदान रहा है और आगे भी रहेगा। संस्कृत सभी भाषाओं की जननी है और भारतीय संस्कृति का आधार है।

इस अवसर पर अकादमी के सचिव डॉ. जीतराम भट्ट ने कहा कि दिल्ली संस्कृत अकादमी द्वारा दिल्ली के महाविद्यालयों एवं संस्कृत विद्यालयों के प्रतिभागियों की प्रतिभा विकसित करने के उद्देश्य से यह संस्कृत भाषण प्रतियोगिता आयोजित की गई। इस प्रतियोगिता में दिल्ली के लगभग सभी महाविद्यालयों एवं संस्कृत विद्यालयों के छात्र/छात्राओं ने भाग लिया। इसके लिये सभी प्रतिभागियों का स्वागत है। इस प्रकार के कार्यक्रमों के माध्यम से संस्कृत भाषा को मजबूती मिलती है।

इस अवसर पर कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए मैत्रेयी महाविद्यालय की प्राचार्या डॉ. हरित्मा चोपड़ा ने कहा कि संस्कृत भाषा मानव सभ्यता के प्राचीनतम इतिहास से जुड़ी भाषा है। विज्ञान के सबसे समीप भाषा होने का गौरव भी संस्कृत भाषा को ही है। दिल्ली में अनेक संस्थायें निस्वार्थ भाव से संस्कृत के विकास एवं ज्ञान विज्ञान का कार्य कर रही है। हमारा महाविद्यालय भी संस्कृत की शिक्षा में अनेक वर्षों से अपना योगदान देता आ रहा है। अब तो इस महाविद्यालय में संस्कृत विभाग छात्राओं के प्रवेश के अनुसार महाविद्यालय का सबसे बड़ा विभाग है।

इस अवसर पर दिल्ली शिक्षा निदेशालय के पूर्व प्राचार्य डॉ. भास्करानन्द पाण्डेय ने कहा कि भाषण में प्रतिभागी की वास्तविक विवेक का पता चलता है। इस में संस्कृत के बारे में किसी भी विषय पर प्रतिभागियों की क्या सोच होती है। यह भाषण के माध्यम से अनुभव किया जा सकता है।

कार्यक्रम माता मैत्रेयी महाविद्यालय के सान्निध्य में हुआ। जिसमें महाविद्यालय के विभागाध्यक्ष ने सभी आये अतिथियों एवं प्रतिभागियों का अभिन्दन करते हुय संस्कृत के बारे में विस्तार से बताया। इस अवसर पर अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

संस्कृत भाषण प्रतियोगिता वर्ष 2019–20
(शास्त्री/आचार्य/स्नातक/स्नातकोत्तर स्तरीय)

क्र.सं.	महाविद्यालय का नाम	प्रतिभागी का नाम	प्राप्त स्थान	पुरस्कार राशि
1.	जाकिर हुसैन महाविद्यालय, (प्रातःकालीन) जवाहर लाल नेहरू मार्ग, नई दिल्ली–01	अनिल चन्दन के.	प्रथम	रू. 2000/–
2.	श्री वेंकटेश्वर महाविद्यालय, बेनितो जुआरेज मार्ग, धौला कुआँ, नई दिल्ली–21	आयुष	द्वितीय	रू. 1800/–
3.	लक्ष्मीबाई महाविद्यालय, अशोक विहार फेज–3, दिल्ली–52	ऋचा	तृतीय	रू. 1500/–

4.	मैत्रेयी महाविद्यालय, बापू धाम कॉम्पलेक्स, चाणक्यपुरी, नई दिल्ली–21	निहारिका खुराना	प्रोत्साहन–1	रू. 500/–

दिनांक 20.02.2020

संस्कृत भाषा में स्थित ज्ञान विज्ञान विश्व में प्रवाहित हो रही हैं।
–डॉ. रवीन्द्र कुमार गुप्ता।
संस्कृत सस्कारों की भाषा है शिक्षको संस्कारों जोडना आवश्यक है।
– डॉ. जीतराम भट्ट
संस्कृत भाषा के मैखिक याद करने की परम्परा को संरक्षित करने की जरूरत है।–डॉ. कान्ता भाटिया

संस्कृत भाषा को केवल साहित्य तक ही सीमित नहीं किया जा सकता यह भाषा अपने आप में पूर्ण रूप से एक वैज्ञानिक भाषा है। विश्व में संस्कृत भाषा का महत्व बढता जा रहा है। संस्कृत कई देशों में पढाई जा रही है। संस्कृत श्लोक अन्त्याक्षरी के माध्यम से संस्कृत में लिखे गये श्लोको को याद करने की परम्परा को विकसित करना है। इस भाषा में सभी विषयों का ज्ञान निहित है पाश्चात्य देशों के विद्वानों को इस भाषा का ज्ञान न होने के कारण वे इस भाषा में निहित ज्ञान विज्ञान को समझने में असमर्थ हैं। जिस कारण भारतीय संस्कृति आज भी पूरे विश्व में अपने गौरव और महत्त्व के साथ विराजमान है, क्योंकि इसके मूल में संस्कृत भाषा का मौखिक रूप में पीढ़ी दर पीढ़ी चलती जाना है। यह सर्व विदित है कि संस्कृत विश्व की अत्यन्त प्राचीन भाषा है।

ये विचार दिल्ली संस्कृत अकादमी दिल्ली सरकार द्वारा पी.जी.डी.ए.वी. महाविद्यालय नेहरू नगर नई दिल्ली में आयोजित महाविद्यालय स्तरीय श्लोक अन्त्याक्षरी प्रतियोगिता समारोह का शुभारम्भ करते हुये पी. जी.डी.ए.वी. महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. रवीन्द्र कुमार गुप्ता ने व्यक्त किये।

इस अवसर पर अकादमी के सचिव डॉ. जीतराम भट्ट ने कहा कि अकादमी का प्रयास है कि भारतीय संस्कृति में कई वर्षो तक संस्कृत के ज्ञान विज्ञान को मौखिक याद करके ही कई पीढियों तक चलता रहा। इसी कारण संस्कृत भाषा आज भी अपने मूल स्वरूप में विद्यमान है। दिल्ली में प्रत्येक नागरिक को संस्कृत से जोड़ा जाय इसके लिये अकादमी संस्कृत व्यावहारिक केन्द्रों को दिल्ली के विभिन्न स्थानों पर स्थापित कर लोगों को संस्कृत सिखाने के लिये प्रयत्नशील है। इस प्रकार की प्रतियोगिताओं के माध्यम से प्रतिभागियों में संस्कृत के श्लोकों को याद करने की प्रवृति आयेगी। डॉ. भट्ट ने प्रतियोगिता के बारे में आगे बताया कि आज की प्रतियोगिता में दिल्ली विश्वविद्यालय एवं दिल्ली के विभिन्न महाविद्यालयों के 30 प्रतिभागियों ने भाग लिया। प्रतियोगिता में संस्कृत श्लोकों की प्रस्तुति की जानी थी। प्रतियोगिता 4 घण्टे तक चलती रही। प्रतिभागियों संस्कृत श्लोंको की प्रस्तुतियां की।

इस अवसर पर कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुँ दिल्ली संस्कृत अकादमी की उपाध्यक्षा डॉ. कान्ता भाटिया ने कहा कि संस्कृत सस्कारों की भाषा के साथ दर्शन एवं चिन्तन की भाषा है। संस्कृत की परम्परा को जीवित रखने के लिये हमें संस्कृत के मौखिक स्वरूप को प्रिजर्व करना आवश्यक है। संस्कृत शिक्षा मानव के संस्कारों से जुडी हुई है। आज से मैने भी यह संकल्प किया है कि मैं भी संस्कृत का अध्ययन करूँगी। संस्कृत के श्लोकों को सुनने से एक अलौकिक ज्ञान का संचार स्मृति पटल पर होता है परमावश्यक है। डॉ. कान्ता भाटिया ने आगे कहा कि संस्कृत को युवा वर्ग से जोडने के लिये अकादमी हर स्तर की अलग अलग विषयों पर प्रतियोगिताओं का आयोजन कर रही है। इन प्रतियोगिताओं के माध्यम से युवा वर्ग को मंच प्रदान कर उनकी प्रतिभा को विकसित करना है।

कार्यक्रम मिराण्डा हाउस महाविद्यालय के संस्कृत विभाग के सौजन्य से हुआ। संस्कृत विभाग की विभागाध्यक्ष डॉ. रेखा अरोड़ा ने प्रतियोगिता में आये सभी प्रतिभागियों एवं अतिथियों का अभिननदन किया और प्रतियोगिता की सफलता के लिये सभी के प्रयासों की सहारना की। महाविद्यालय के सभी संस्कृत विभाग के आचार्यों का इस कार्यक्रम के संयोजन में पूर्ण योगदान दिया।

इस अवसर पर डॉ. भागीरथी नन्द, डॉ. नोदनाथ मिश्र , डॉ. गुलाब सिंह सहित गणमान्य व्यक्ति एवं क्षेत्र के अनेक गणमान्य व्यक्ति भी उपस्थित थे ।

संस्कृत श्लोकान्त्याक्षरी प्रतियोगिता वर्ष 2019–20
(शास्त्री / आचार्य / स्नातक / स्नातकोत्तर स्तरीय)

क्र.सं.	महाविद्यालय का नाम	प्रतिभागी का नाम	प्राप्त स्थान	पुरस्कार राशि
1.	किरोड़ीमल महाविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय परिसर, दिल्ली–07	चन्द्रशेखर मठपाल	प्रथम	रू. 2000 / –
2.	श्री वैंकटेश्वर महाविद्यालय, बेनितो जुआरेज मार्ग, धौला कुआँ, नई दिल्ली–21	दयाराम गौतम	द्वितीय	रू. 1800 / –
3.	श्री वैंकटेश्वर महाविद्यालय, बेनितो जुआरेज मार्ग, धौला कुआँ, नई दिल्ली–21	हलधर भारद्वाज	तृतीय	रू. 1500 / –
4.	रामजस महाविद्यालय, मौरिस नगर दिल्ली विश्वविद्यालय परिसर, दिल्ली–07	सूर्यप्रकाश नौटियाल	चतुर्थ	रू. 1200 / –
5.	किरोड़ीमल महाविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय परिसर, दिल्ली–07	जयराज पाण्डेय	प्रोत्साहन–1	रू. 500 / –

दिनांक 27.02.2020

संविधान भारत की आत्मा –डॉ0 जीतराम भट्ट

भारतीय संविधान की विशालता हर व्यक्ति को सुगम जीवन का आधार देती है –डॉ0 जीतराम भट्ट

भारतीय संविधान में निहित कर्तव्यों से सभी को पचित होना आवश्यक है। –राकेश सिन्हा

भारतीय संविधान भारत की आत्मा है। भारतीय संविधान विश्व का सबसे बढा लिखित संविधान है। जिसमें लोकतंत्र पद्धति पर चलने के लिये जिस भी प्रकार की जरूरत होती है वे सभी बिन्दु भारतीय सविधान में लिखे गये हैं। सविधान निर्माण के बाद जब भी देश के लिये कोई भी संविधानिक दायित्वों की जरूरत पडी उसे संविधान संशोधन के बाद संविधान में सामिल किया गया। इसी प्रकार से जब देश के निर्माताओं को यह महसूस हुआ कि देश के नागरिको के लिये देश के प्रति सम्मान बनाये रखने के लिये मौलिक अधिकारों के साथ मौलिक कर्तव्यों की भी जरूरत है। इसी को ध्यान में रखते हुये संविधान के 42 वें संशोधन के द्वारा संविधान में मौलिक कर्तव्यों को जोड़ा गया।

ये विचार दिल्ली संस्कृत अकादमी एवं डॉ. गो.गि.ला. शास्त्री प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान के संयुक्त तत्वावधान में अकादमी के सभागर में आयोजित " भारतीय संविधान में मौलिक कर्तव्यों पर आधारित संगोष्ठी का शुभारम्भ करते हुये अकादमी के सचिव डॉ. जीतराम भट्ट ने व्यक्त किये। डॉ. भट्ट ने आगे कहा कि दिल्ली संस्कृत अकादमी भारतीय संविधान में निहित मौलिक कर्तव्यों के बारे में आम लोगों को जागरूक करने के लिये इस वर्ष अपने स्तर पर अनेक प्रयास करेगी। डॉ. भट्ट ने भारतीय संविधान में वर्णित मौलिक कर्तव्यों से संगोष्ठी में आये लोगों को अवगत कराया जो इस प्रकार से हैं :–

सरदार स्वर्ण सिंह समिति की अनुशंसा पर संविधान के 42वें संशोधन (1976 ई)० के द्वारा मौलिक कर्तव्य को संविधान में जोड़ा गया। इसे रूस के संविधान से लिया गया है। मौलिक कर्तव्य की संख्या पहले 10 थी पुनः 86वें संशोधन से एक और जोड़ा गया, जो इस प्रकार है–

1.प्रत्येक नागरिक का यह कर्तव्य होगा कि वह संविधान का पालन करे और उसके आदर्शों, संस्थाओं, राष्ट्र ध्वज और राष्ट्र गान का आदर करें।

2. स्वतंत्रता के लिए हमारे राष्ट्रीय आंदोलन को प्रेरित करने वाले उच्च आदर्शों को ह्रदय में संजोए रखे और उनका पालन करे।

3. भारत की प्रभुता, एकता और अखंडता की रक्षा करे और उसे अक्षुण्ण रखे।

4. देश की रक्षा करे।

5. भारत के सभी लोगों में समरसता और समान भ्रातृत्व की भावना का निर्माण करे।

6. हमारी सामाजिक संस्कृति की गौरवशाली परंपरा का महत्त्व समझे और उसका निर्माण करे।

7. प्राकृतिक पर्यावरण की रक्षा और उसका संवर्धन करें।

8. वैज्ञानिक दृष्टिकोण और ज्ञानार्जन की भावना का विकास करें।

9. सार्वजनिक संपत्ति को सुरक्षित रखें।

10. व्यक्तिगत एवं सामूहिक गतिविधियों के सभी क्षेत्रों में उत्कर्ष की ओर बढ़ने का सतत प्रयास करें।

11. माता–पिता या संरक्षक द्वार 6 से 14 वर्ष के बच्चों हेतु प्राथमिक शिक्षा प्रदान करना (86वां संशोधन).

इस अवसर पर श्री राकेश सिन्हा ने कहा कि गणतंत्र में संविधान ही महत्वपूर्ण होता है। संविधान हमें अनेक प्रकार के अधिकर देता है। भारतीय संविधान निर्माण में बहुत लोगों का योगदान रहा है। जिसमें डॉ. बाबा साहब अम्बेडकर ,डॉ. राजेन्द्र प्रसाद एवं कई गणमान्य व्यक्ति इसके सदस्य थे। आज भारत विश्व में सबसे बड़ा लोकतांत्रिक देश है। भारत विविधता में एकता लिये अपने धर्मनिरपेक्ष स्वरूप को बनाये हुये विकास की ओर बढ़ रहा है।

इस अवसर पर मुख्य वक्ता के रूप में अधिवक्ता श्री प्रदीप भसीन ने कहा कि संविधान ने जो भी हमें चाहे अधिकार दिये हैं या मैलिक कर्तव्य उनका हम को पालन करना चाहिये। इसमें चाहे संविधान का पालन करना हो या भारत की प्रभुता, एकता और अखंडता की रक्षा करना हो या देश की रक्षा करना, सभी 11 मौलिक कर्तव्यों को सम्मिलित कर राष्ट्र के प्रति आम लोगों को प्रेरणा जागृत करना है।

इस अवसर पर अकादमी के सहायक लेखा अधिकारी श्री भारत भूषण ने कहा कि 26 नवम्बर 1949 को संविधान सभा ने भारतीय संविधान को पूर्ण कर दिया था। इस लिये 26 नवम्बर को संविधान दिवस के रूप में मनाया जाता है। सरकार द्वारा किये जा रहे इस प्रकार के प्रयासों से सभी को संविधान के बारे में जागरूकता मिलेगी। इस अवसर पर अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

दिनांक 29.02.2020

संस्कृत से ही संस्कृति एवं संस्कारो की रक्षा होती है –राजेश गुप्ता
संस्कृत के प्राचीन कवियों ने समाज में जीवन मूल्यों को विस्तार देने का कार्य किया है – डॉ. जीतराम भट्ट
संस्कृत साहित्य में निहित ज्ञान मानव जीवन को प्रेरणा देता आ रहा है – डॉ. कान्ता भाटिया

"संस्कृत भाषा एवं साहित्य में अनेक विषयों का समावेश है। संस्कृति से ही संस्कार एवं संस्कृति की रक्षा होती है। प्राचीन संस्कृत कवियों के काव्यों पर आधारित इस कार्यक्रम से हम अपने प्राचीन मनीसियों को याद कर उनके द्वारा लिखित ज्ञान विज्ञान को लोगों तक पहुँचाने का सार्थक प्रयास है। कहने में आसान है कालिदास वाल्मीकि, भाषा परन्तु उनके जैसा बनना कोई साधारण कार्य नहीं है।

संस्कृत साहित्य में संस्कृत कवियों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। संस्कृत भाषा विश्व की प्रथम भाषा है जिसमें सभी विषयों का समावेश है। संस्कृत भाषा की विशेषता रही है कि इस भाषा ने आदि काल से ही समयानुकूल अपने आप को संजोया है। आज के वैज्ञानिक युग में भी यह भाषा कम्प्यूटर के लिये सबसे उपयुक्त भाषा है । किसी भाषा के विकास में उस भाषा के कवियों का महत्त्वपूर्ण योगदान होता है।

ये विचार दिल्ली संस्कृत अकादमी दिल्ली सरकार द्वारा सत्यवती महाविद्यालय, अशोक विहार, नई दिल्ली में दिल्ली के महाविद्यालयों एवं संस्कृत विद्यालयों के लिये आयोजित "प्राचीन संस्कृत काव्य आधारित काव्यपाठ प्रतियोगिता समारोह के मुख्य अतिथि दिल्ली विधान सभा सदस्य श्री राजेश गुप्ता ने व्यक्त किये। श्री गुप्ता ने आगे कहा कि संस्कृत साहित्य को संस्कृत कवियों ने उसे लयबद्ध रूप से प्रस्तुत कर लोकप्रिय बनाया है। जिस कारण संस्कृत साहित्य के सभी प्राचीन ग्रन्थ आज भी विश्व साहित्य पटल पर सबसे अधिक सहज लगते है। छात्रों में इस प्रकार से साहित्य के प्रति उत्साह पैदा करने के लिये दिल्ली संस्कृत अकादमी को मेरी शुभकामनाएँ निरन्तर हैं।

इस अवसर पर अकादमी के सचिव डॉ. जीतराम भट्ट ने कहा कि अकादमी द्वारा युवा वर्ग को आगे लाने के लिये इस प्रकार का प्लेटफार्म दिया जाता है जो प्रतिभागी इसका लाभ उठा सकते हैं वे अकादमी के हर मंच पर आमंत्रित हैं। अकादमी द्वारा वर्तमान समय में संस्कृत साहित्य के प्राचीन काव्यधारा को जन सामान्य तक पहुँचाने में अकादमी द्वारा प्राचीनकाव्य पर आधारित काव्यपाठ प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसमें प्रतिभागी ने भर्तृहरि, भवभूति, भारवी, भास, श्रीहर्ष, वाल्मीकि, महाकवि कालीदास, पण्डितराज जगन्नाथ, और जयदेव के काव्यों को प्रस्तुत किया। इन काव्यों के माध्यम से जन सामान्य को इन कवियों की स्मृति दिलाना था। संस्कृत साहित्य का काव्यपक्ष बहुत सबल है। इस के छन्दों में रचनायें आम लोगों को अपनी ओर तुरन्त आकर्षित कर लेती हैं। संस्कृत के कारण ही आज हमारा देश विश्व में अपनी पहचान रखता है।

इस अवसर पर दिल्ली संस्कृत अकादमी की उपाध्यक्षा डॉ. कान्ता भाटिया ने कहा कि बाल्मीकि, श्रीहर्ष, भवभूति, कालिदास आदि सभी विद्वानों के काव्यों की वास्तव में आज जो प्रस्तुतियां हुयी ये अपने आप में उल्लेखनीय है। जिस राष्ट्र की संस्कृति मजबूत होती है उस देश में समृद्धि होती है। आप देश के भावी रक्षक हो आप लोगों का दायित्व और अधिक हो जाता है। संस्कृत साहित्य में निहित ज्ञान मानव जीवन को प्रेरणा देता आ रहा है। संस्कृत साहित्य में हर प्रकार के काव्यों की रचना हुई है इस पर निरन्तर कार्य भी हो रहा है। संस्कृत साहित्य में अनेक प्राचीन कवियों ने अविस्मरणीय काव्यों की रचनायें की हैं। इस विषय पर अकादमी द्वारा किया गया यह कार्यक्रम संस्कृत को नई दिशा देगा।

इस अवसर पर पूर्व प्राचार्य डॉ. बलदेवानन्द सागर ने कहा संस्कृत साहित्य के अनेक प्राचीन संस्कृत कवियों ने अपनी प्रतिभा के आधार पर इस को विश्व प्रसिद्ध बनाया है।

प्रतियोगिता में दिल्ली विश्वविद्यालय के कई प्रतिभागियों ने भाग लिया। कार्यक्रम सत्यवती

महाविद्यालय के संस्कृत विभाग के सान्निध्य में हुआ। जिसमें संस्कृत विभाग की अध्यक्षा डॉ. सरोज गुप्ता ने कार्यक्रम का संचालन किया। कार्यक्रम के अन्त में सभी का धन्यवाद डॉ. अजय झा ने किया। इस अवसर पर अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

प्राचीन काव्यों पर आधारित प्रतियोगिता वर्ष 2019–20
(शास्त्री / आचार्य / स्नातक / स्नातकोत्तर स्तरीय)

क्र.सं.	महाविद्यालय का नाम	प्रतिभागी का नाम	प्राप्त स्थान	पुरस्कार राशि
1.	श्री वेंकटेश्वर महाविद्यालय, बेनितो जुआरेज मार्ग, धौला कुआँ, नई दिल्ली–21	पुष्पराज द्विवेदी	प्रथम	रू. 2000/–
2.	कालिन्दी महाविद्यालय, पूर्वी पटेल नगर, नई दिल्ली–08	निकिता	द्वितीय	रू. 1800/–
3.	सत्यवती महाविद्यालय, अशोक विहार फेस–3, दिल्ली–52	अक्षित भट्ट	तृतीय	रू. 1500/–
4.	लेडी श्रीराम महिला महाविद्यालय, लाजपत नगर–4, नई दिल्ली–24	रजनी	चतुर्थ	रू. 1200/–
5.	लक्ष्मीबाई महाविद्यालय, अशोक विहार फेज–3, दिल्ली–52	ऋचा	प्रोत्साहन–1	रू. 500/–